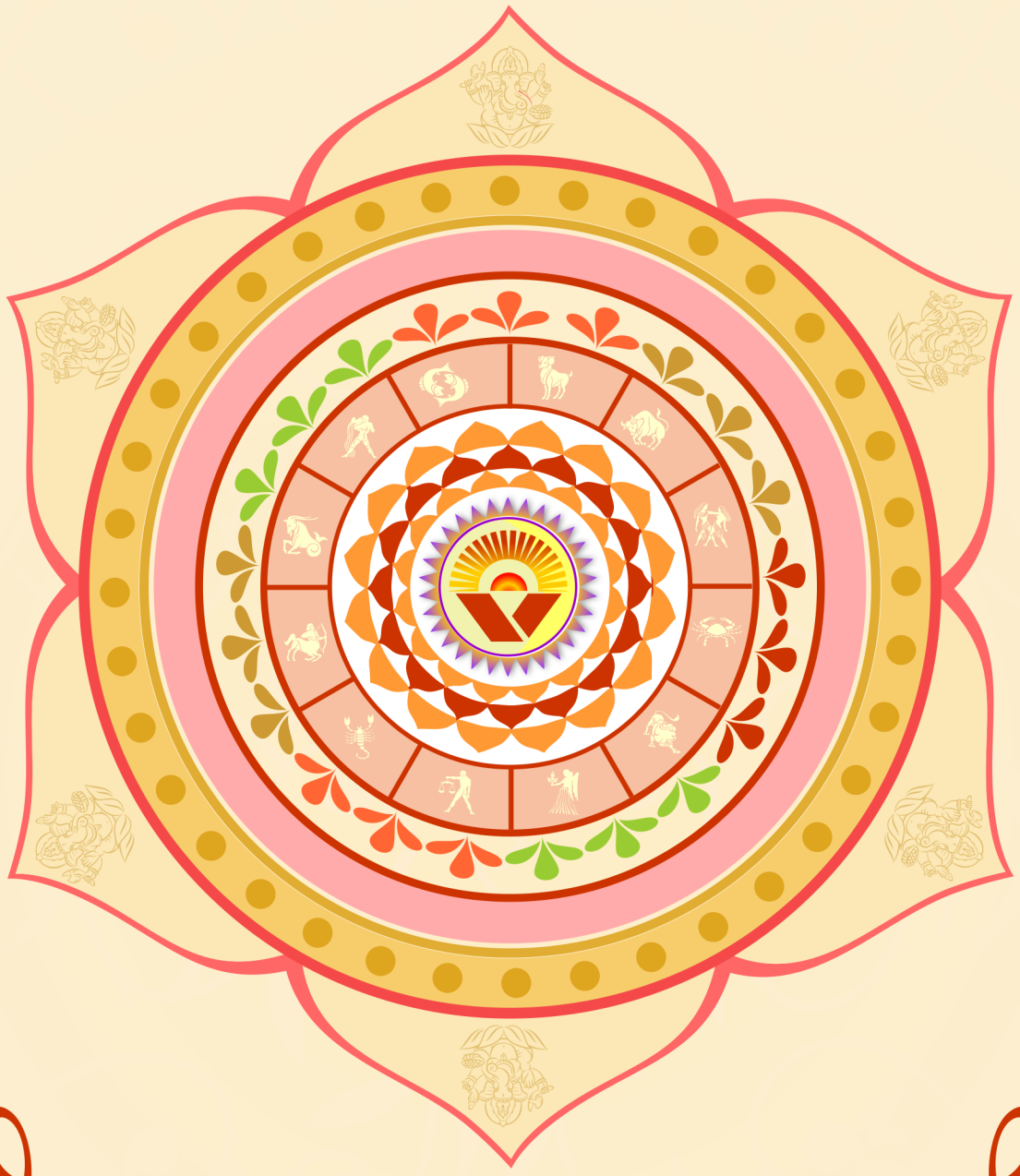

Name: SAMPLE, DOB: 02:04:1981

TOB: 11:45:00, PLACE: new delhi (India)

श्रीगणेशाय नमः

गणानां त्वां गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपमश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ।।

नवग्रहस्तोत्र

जपाकुसुमसंकाशं काश्पेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम्।।
दधिशंखतुषाराभं क्षीरोदार्णवसम्भवम्। नमामि शशिनं सोमं शम्भोर्मुकुटभूषणम्।।
धरणीगर्भसम्भूतं विद्युत्कान्तिसमप्रभम्। कुमारं शक्तिहस्तं तं मंगलं प्रणमाम्यहम्।।
प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।
देवानां च ऋषिणां च गुरुं कांचनसंनिभम्। बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पतिम्।।
हिमकुन्दमृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्। सर्वशास्त्रप्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यहम्।।
नीलांजनसमाभासं रविपुत्रं यमाग्रजम्। छायामार्तण्डसम्भूतं तं नमामि शनैश्चरम्।।
अर्धकायं महावीर्यं चन्द्रादित्यविमर्दनम्। सिंहिकागर्भसम्भूतं तं राहुं प्रणमाम्यहम्।।
पलाशपुष्पसंकाशं तारकाग्रहमस्तकम्। रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम्।।

फलश्रुति

इति व्यासमुखोद्गीतं यः पठेत् सुसमाहितः।
दिवा वा यदि वा रात्रौ विघ्नशान्तिर्भविष्यति।
नरनारीनृपाणां च भवेद्दुःस्वप्ननाशम्।
ऐश्वर्यमतुलं तेषामारोग्यं पुष्टिवर्धनम्।।
ग्रहनक्षत्रजाः पीडस्तस्कराग्निसमुद्रवाः ।
ताः सर्वाः प्रशमं यान्ति व्यासो ब्रूते न संशयः ।।

इति श्री व्यासविरचितं आदित्यादिनवग्रहस्तोत्रं संपूर्णम् ।।

जो जपापुष्प के समान अरुणिम आभावाले, महान तेज से संपन्न, अंधकार के विनाशक, सभी पापों को दूर करने वाले तथा महर्षि कश्यप के पुत्र हैं, उन सूर्य को मैं प्रणाम करता हूं। जो दधि, शंख तथा हिम के समान आभा वाले, क्षीर समुद्र से प्रादुर्भूत, भगवान शंकर के शिरोभूषण तथा अमृतस्वरुप हैं, उन चंद्रमा को मैं नमस्कार करता हूं। जो पृथ्वी देवी से उद्भूत, विद्युत् की कान्ति के समान प्रभावाले, कुमारावस्था वाले तथा हाथ में शक्ति लिए हुए हैं, उन मंगल को मैं प्रणाम करता हूं। जो प्रियंगु लता की कली के समान गहरे हरित वर्ण वाले, अतुलनीय सौन्दर्य वाले तथा सौम्य गुण से संपन्न हैं, उन चंद्रमा के पुत्र बुध को मैं प्रणाम करता हूं। जो देवताओं और ऋषियों के गुरु हैं, स्वर्णिम आभा वाले हैं, ज्ञान से संपन्न हैं तथा लोकों के स्वामी हैं, उन बृहस्पति जी को मैं नमस्कार करता हूं। जो हिम, कुन्दपुष्प तथा कमलनाल के तन्तु के समान श्वेत आभा वाले, दैत्यों के परम गुरु, सभी शास्त्रों के उपदेष्टा तथा महर्षि भृगु के पुत्र हैं, उन शुक्र को मैं प्रणाम करता हूं। जो नीले कज्जल के समान आभा वाले, सूर्य के पुत्र, यमराज के ज्येष्ठ भ्राता तथा सूर्य पत्नी छाया तथा मार्तण्ड से उत्पन्न हैं, उन शनैश्चर को मैं नमस्कार करता हूं। जो आधे शरीर वाले हैं, महान पराक्रम से संपन्न हैं, सूर्य तथा चंद्र को ग्रसने वाले हैं तथा सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हैं, उन राहु को मैं प्रणाम करता हूं। पलाश पुष्प के समान जिनकी आभा है, जो रुद्र स्वभाव वाले और रुद्र के पुत्र हैं, भयंकर हैं, तारकादि ग्रहों में प्रधान हैं, उन केतु को मैं प्रणाम करता हूं। भगवान वेदव्यास जी के मुख से प्रकट इस स्तुति का जो दिन में अथवा रात में एकाग्रचित्त होकर पाठ करता है, उसके समस्त विघ्न शान्त हो जाते हैं, स्त्री–पुरुष और राजाओं के दुःस्वप्नों का नाश हो जाता है। पाठ करने वालों को अतुलनीय ऐश्वर्य और आरोग्य प्राप्त होता है तथा उनके पुष्टि की वृद्धि होती है।

ज्योतिष सारिणी

मुख्य विवरण

जन्म दिनाकं	02:04:1981(वृहस्पतिवार)
जन्म समय	11:45:00
जन्म स्थान	new delhi
अक्षांश	028:36:00N
रेखांश	077:12:00E
यु./ग्रीष्म समय संस्कार	-00:00
जी. एम. टी. समय	006:15:00
स्थानीय समय	011:23:48 hrs
सांपातिक काल	024:05:49 hrs
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:12
अयनांश	N.C.Lahiri(023:35:42)
सूर्योदय	06:12:02AM
सूर्यास्त	06:36:57PM
विक्रम संवत	2037
शक संवत	1902
संवत्सर	रौद्र
संवत्सर अधिपति	अश्वनि

घात चक्र

राशि (सूर्य)	कुम्भ
मास	फाल्गुन
तिथि	5,10,15
वार	शुक्रवार
नक्षत्र	अश्लेषा
प्रहर	4
लग्न	सिहं
सूर्य सिद्धान्त योग	वज्र
करण	चतुश्पद

अवकहड़ा चक्र

लग्न	मिथुन
लग्नाधिपति	बुध
राशि (चन्द्रमा)	कुम्भ
राशिपति	शनि
नक्षत्र	शतभिषा
नक्षत्रपति	राहु
नक्षत्र चरण	2
ऋतु	बसन्त
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	त्रयोदशी
तिथि श्रेणी	जया
तिथि पति	बृहस्पति
करण	गरिज
करण श्रेणी	चर
करणपति	वासुदेव
गण	राक्षस
योनि	हस्त (स्त्री)
वर्ण	शुद्र
सूर्य सिद्धान्त योग	शुभ
रज्जु	कंठ
वश्य	जलचर
तत्व	आकाश
विहग	मयूर
तत्वाधिपति	बृहस्पति
नाड़ी	आदि
नाड़ी पद	अन्त
वेध	हस्ता
आद्याक्षर	Saa
पाया	रजत

ग्रह स्थिती

लग्न कुण्डली

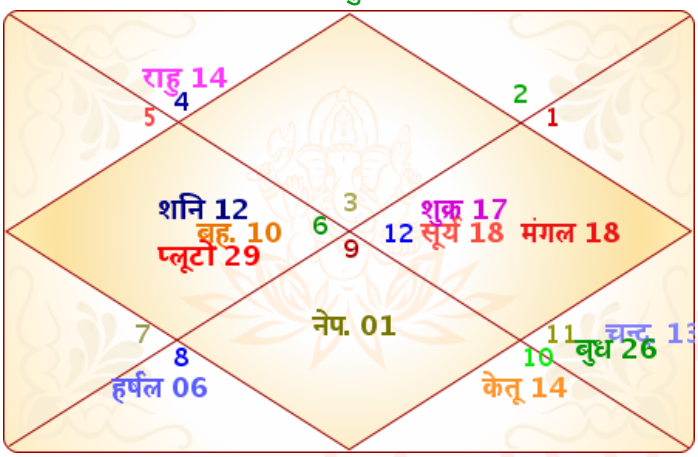

नवांमश कुण्डली

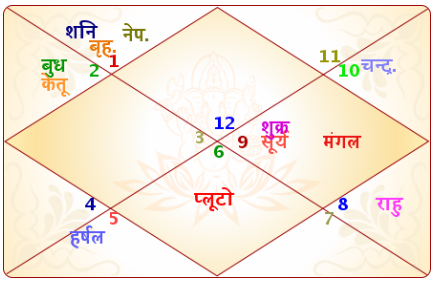

चन्द्र कुण्डली

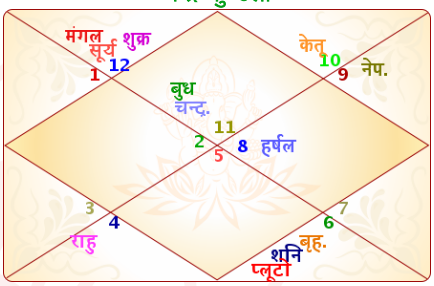

ग्रह स्थिती

ग्रह	राशि	अंश	गति	रा. पति	नक्षत्र	च.	न	न. पति	नवांश	नव. पति	विशेष
लग्न	मिथुन	19:55:00	...	बुध	अरिद्रा	4	6	राहु	मीन	बृहस्पति	
सूर्य	मीन	18:49:41	00:59:11	बृहस्पति	रेवती	1	27	बुध	धनु	बृहस्पति	शत्रु राशि
चन्द्रमा	कुम्भ	13:12:59	14:14:18	शनि	शतभिषा	2	24	राहु	मकर	शनि	सम राशि
मंगल (ग्र.)	मीन	18:54:01	00:46:06	बृहस्पति	रेवती	1	27	बुध	धनु	बृहस्पति	मित्र राशि
बुध	कुम्भ	26:30:26	01:32:29	शनि	पूर्वाभाद	2	25	बृहस्पति	वृष	शुक्र	सम राशि
बृहस्पति (व.)	कन्या	10:59:39	00:07:37	बुध	हस्ता	1	13	चन्द्रमा	मेष	मंगल	शत्रु राशि
शुक्र (ग्र.)	मीन	17:30:56	01:14:29	बृहस्पति	रेवती	1	27	बुध	धनु	बृहस्पति	उच्च राशि
शनि (व.)	कन्या	12:22:18	00:04:38	बुध	हस्ता	1	13	चन्द्रमा	मेष	मंगल	मित्र राशि
राहु (व.)	कक्र	14:05:22	00:03:10	चन्द्रमा	पुष्य	4	8	शनि	वृश्चिक	मंगल	शत्रु राशि
केतु (व.)	मकर	14:05:22	00:03:10	शनि	श्रवण	2	22	चन्द्रमा	वृष	शुक्र	शत्रु राशि
हर्षल (व.)	वृश्चिक	06:10:41	00:01:24	मंगल	अनुराधा	1	17	शनि	सिहं	सूर्य	...
नेपच्यून (व.)	धनु	01:15:24	00:00:11	बृहस्पति	मूला	1	19	केतु	मेष	मंगल	...
प्लूटो (व.)	कन्या	29:40:28	00:01:39	बुध	चित्रा	2	14	मंगल	कन्या	बुध	...

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
लग्न	..	269	233	269	247	81	268	82	24	204	136	161	100
सूर्य	91	..	324	0	338	172	359	174	115	295	227	252	191
चन्द्रमा	127	36	..	36	13	208	34	209	151	331	263	288	226
मंगल	91	360	324	..	338	172	359	173	115	295	227	252	191
बुध	113	22	347	22	..	194	21	196	138	318	250	275	213
बृहस्पति	279	188	152	188	166	..	187	1	303	123	55	80	19
शुक्र	92	1	326	1	339	173	..	175	117	297	229	254	192
शनि	278	186	151	187	164	359	185	..	302	122	54	79	17
राहु	336	245	209	245	222	57	243	58	..	180	112	137	76
केतु	156	65	29	65	42	237	63	238	180	..	292	317	256
हर्षल	224	133	97	133	110	305	131	306	248	68	..	25	323
नेपच्यून	199	108	72	108	85	280	106	281	223	43	335	..	298
प्लूटो	260	169	134	169	147	341	168	343	284	104	37	62	..

भाव स्फूट और कुण्डली

लग्न कुण्डली

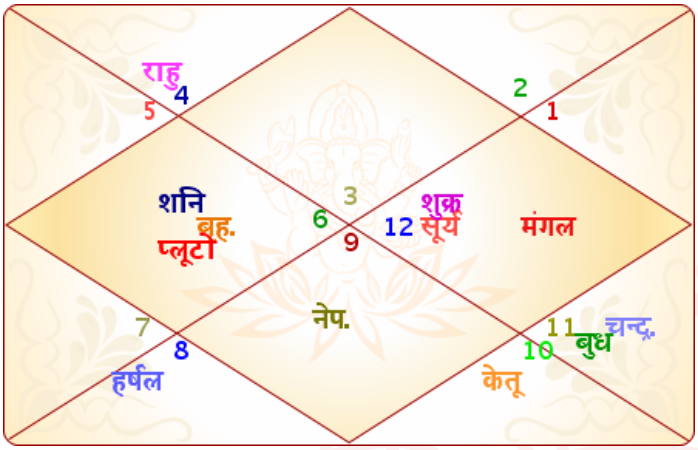

भाव कुण्डली

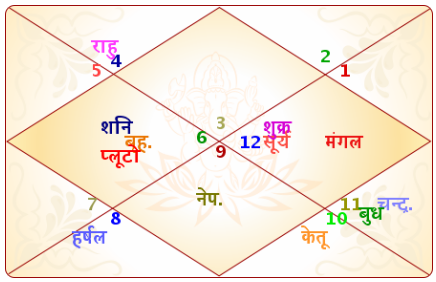

भाव चलित कुण्डली

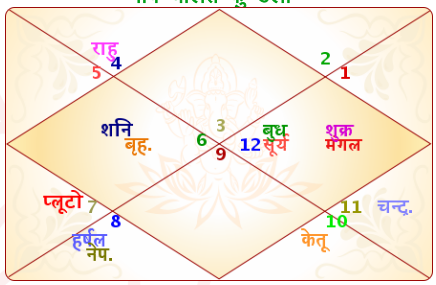

भाव सख्या	भाव मध्य		भाव विस्तार (आरम्भ——अन्त)			
1	मिथुन	19:55:00	मिथुन	02:55:46	कर्क	02:55:46
2	कर्क	15:56:32	कर्क	02:55:46	कर्क	28:57:18
3	सिहं	11:58:05	कर्क	28:57:18	सिहं	24:58:51
4	कन्या	07:59:37	सिहं	24:58:51	कन्या	24:58:51
5	तुला	11:58:05	कन्या	24:58:51	तुला	28:57:18
6	वृश्चिक	15:56:32	तुला	28:57:18	धनु	02:55:46
7	धनु	19:55:00	धनु	02:55:46	मकर	02:55:46
8	मकर	15:56:32	मकर	02:55:46	मकर	28:57:18
9	कुम्भ	11:58:05	मकर	28:57:18	कुम्भ	24:58:51
10	मीन	07:59:37	कुम्भ	24:58:51	मीन	24:58:51
11	मेष	11:58:05	मीन	24:58:51	मेष	28:57:18
12	वृष	15:56:32	मेष	28:57:18	मिथुन	02:55:46

ग्रह से भाव (भाव मध्य) के बीच की दूरी

भाव	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्षल	नेपच्यून	प्लूटो
I	269	233	269	247	81	268	82	24	204	136	161	100
II	243	207	243	221	55	242	56	358	178	110	135	74
III	217	181	217	195	29	216	30	332	152	84	109	48
IV	191	155	191	169	3	190	4	306	126	58	83	22
V	157	121	157	135	329	156	330	272	92	24	49	348
VI	123	87	123	101	295	122	296	238	58	350	15	314
VII	89	53	89	67	261	88	262	204	24	316	341	280
VIII	63	27	63	41	235	62	236	178	358	290	315	254
IX	37	1	37	15	209	36	210	152	332	264	289	228
X	11	335	11	349	183	10	184	126	306	238	263	202
XI	337	301	337	315	149	336	150	92	272	204	229	168
XII	303	267	303	281	115	302	116	58	238	170	195	134

षोडश वर्ग कुण्डली

होरा कुण्डली

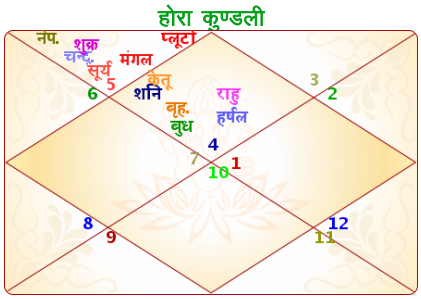

धन दौलत के लिए

द्रेष्काण कुण्डली

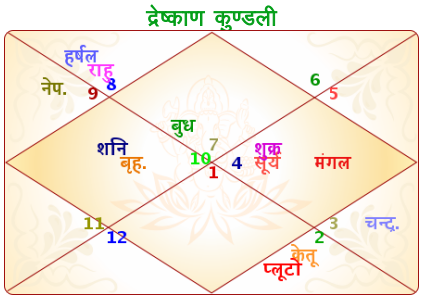

सहोदरों का जीवन और स्वास्थ्य

चतुर्थांश कुण्डली

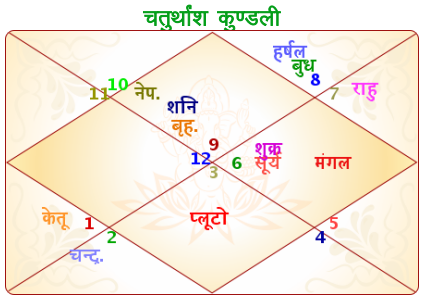

भाग्य और रिहायशी मकान

सप्तमांश कुण्डली

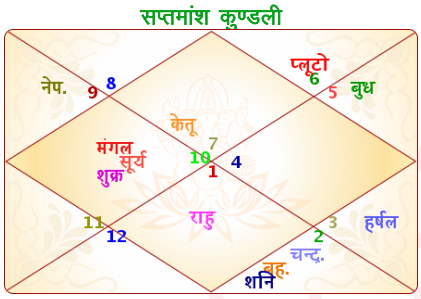

संतान और उनकी संतान

नवांश कुण्डली

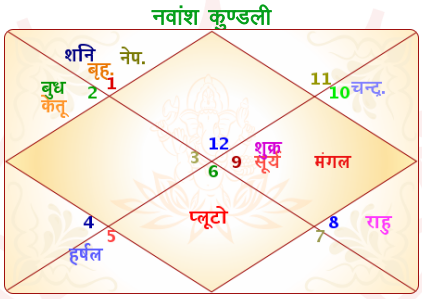

जीवनसाथी और उनका स्वास्थ्य

दसमांश कुण्डली

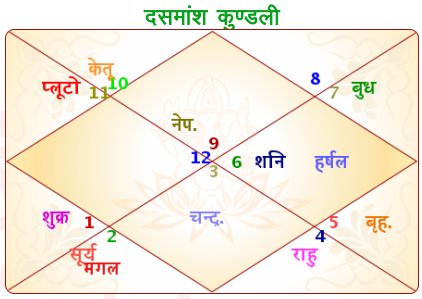

कारोबार और किसी भी कार्य में सफलता

द्वादशांश कुण्डली

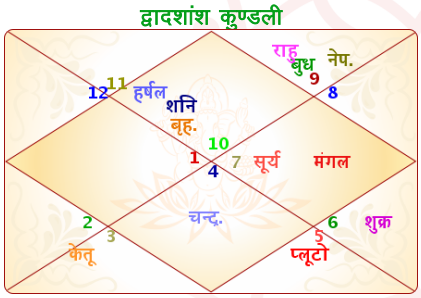

माता पिता का जीवन और उनका स्वास्थ्य

षोडशांश कुण्डली

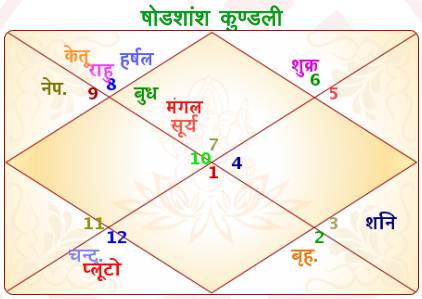

वाहन से संबंधित बातें

विशांश कुण्डली

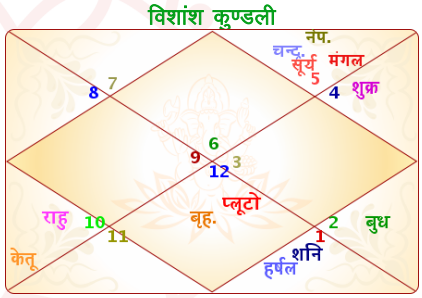

आध्यात्मिक रूझान

चतुर्विशांश कुण्डली

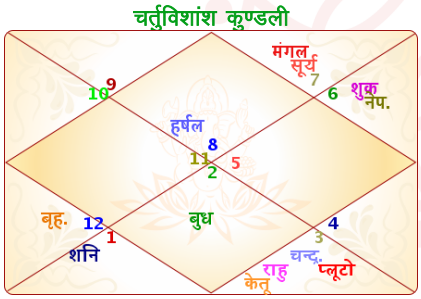

शिक्षा, ज्ञान और समझ

सप्तविशांश कुण्डली

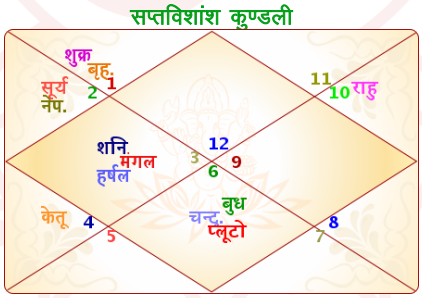

ताकत और दुर्बलता

त्रिशांश कुण्डली

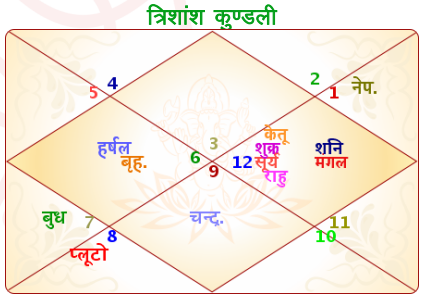

दरिद्रता, कठिनाईयाँ और दुर्गति

खवेदांश कुण्डली

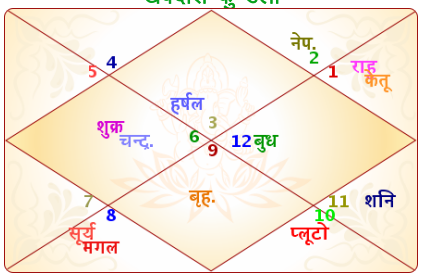

शुभ अशुभ घटनाँए

अक्षवेदांश कुण्डली

सभी मुद्दों के लिए

षष्टांश कुण्डली

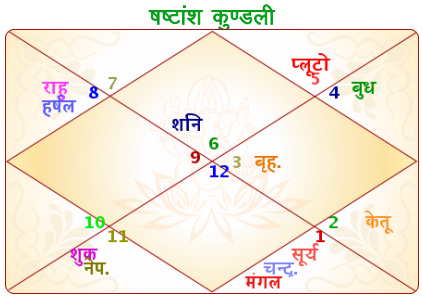

सभी मुद्दों के लिए

मैत्री चक्र

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	-----	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चन्द्रमा	मित्र	-----	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	-----	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	-----	सम	मित्र	सम	सम	सम
बृहस्पति	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	-----	शत्रु	सम	मित्र	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	-----	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	-----	मित्र	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	मित्र	मित्र	-----	सम
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	मित्र	सम	-----

तत्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	-----	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
चन्द्रमा	मित्र	-----	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
मंगल	शत्रु	मित्र	-----	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	मित्र	-----	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बृहस्पति	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	-----	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	-----	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	-----	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	-----	शत्रु
केतु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	-----

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	-----	अधिमित्र	सम	मित्र	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम
चन्द्रमा	अधिमित्र	-----	मित्र	सम	शत्रु	मित्र	शत्रु	अधिशत्रु	सम
मंगल	सम	अधिमित्र	-----	सम	सम	शत्रु	शत्रु	अधिशत्रु	अधिमित्र
बुध	अधिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	-----	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र
बृहस्पति	सम	सम	सम	अधिशत्रु	-----	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु
शुक्र	अधिशत्रु	सम	शत्रु	अधिमित्र	शत्रु	-----	सम	सम	अधिमित्र
शनि	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	सम	-----	अधिमित्र	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	अधिमित्र	सम	अधिमित्र	-----	शत्रु
केतु	सम	सम	अधिमित्र	मित्र	शत्रु	अधिमित्र	सम	शत्रु	-----

षड्बल और भाव बल

षड्बल

बल	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
उच्च बल	52.94	33.41	43.03	6.16	38	56.84	47.46
सप्त वर्ग बल	78.75	86.25	60	99.38	28.12	50.62	82.5
युग्म अयुग्म बल	15	15	15	15	15	15	15
केन्द्रादी बल	60	15	60	15	60	60	60
द्रेक्कन बल	0	0	0	0	0	0	15
स्थान बल	206.69	149.66	178.03	135.54	141.13	182.46	219.96
वांछित स्थान बल	165	133	96	165	165	133	96
वांछित अंश	125.27	112.52	185.45	82.14	85.53	137.19	229.12
दिग बल	56.39	8.26	56.36	22.2	32.97	3.17	27.48
वांछित दिग बल	35	50	30	35	35	50	30
वांछित अंश	161.11	16.52	187.88	63.42	94.21	6.35	91.62
नतोन्नत बल	3.33	56.58	56.58	3.33	60	3.33	56.58
पक्ष बल	48.13	11.87	48.13	48.13	11.87	11.87	48.13
त्रिभाग बल	0	0	0	0	60	0	60
वर्ष बल	0	0	15	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
दिन बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	60	0	0	0	0	0
अयन बल	35.67	40.76	35.7	34.42	27.25	35.02	32.47
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
काल बल	87.13	169.21	155.42	85.88	234.12	50.22	197.19
वांछित काल बल	112	100	67	112	112	100	67
वांछित अंश	77.79	169.21	231.96	76.68	209.04	50.22	294.31
चेष्टा बल	35.67	11.87	0	30	60	0	60
वांछित चेष्टा बल	50	30	40	50	50	30	40
वांछित अंश	71.33	39.57	0	60	120	0	150
नैसर्गिक बल	60	51.43	17.14	25.71	34.29	42.86	8.57
द्रिक बल	-0.87	0.69	-0.88	0.69	-8.73	-0.71	-9.42
कुल षड्बल	445	391.11	406.07	300.02	493.78	278.01	503.78
षड्बल (रूप में)	7.42	6.52	6.77	5	8.23	4.63	8.4
न्यूनतम वांछनिय	390	360	300	420	390	330	300
वांछित अंश	114.1	108.64	135.36	71.43	126.61	84.24	167.93
तुलनात्मक स्थिति	3	5	4	6	2	7	1
इष्ट फल	42.51	19.91	0	13.6	47.75	0	53.36
कष्ट फल	17.49	40.09	60	46.4	12.25	60	6.64
दिप्ति बल	100	11.87	0.02	47.83	57.39	1.68	57.85

भावबल

भाव सँख्या	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भाव राशि	मिथुन	कर्क	सिहं	कन्या	तुला	वृश्चिक	धनु	मकर	कुम्भ	मीन	मेष	वृष
भावाधिपति बल	300.02	391.11	445	300.02	278.01	406.07	493.78	503.78	503.78	493.78	406.07	278.01
भाव दिग्बल	60	40	10	30	20	50	30	20	20	0	50	40
भाव दृिष्टिबल	-16.12	-18.01	-1.21	-10.55	-4.26	-23.28	2.79	-7.31	7.89	0.69	-1.49	2.16
भावबल योग	343.9	413.11	453.8	319.47	293.75	432.79	526.57	516.47	531.67	494.47	454.58	320.16
भावबल (रूप में)	5.73	6.89	7.56	5.32	4.9	7.21	8.78	8.61	8.86	8.24	7.58	5.34
तुलनात्मक स्थिति	9	8	6	11	12	7	2	3	1	4	5	10

सुदर्शन चक्र

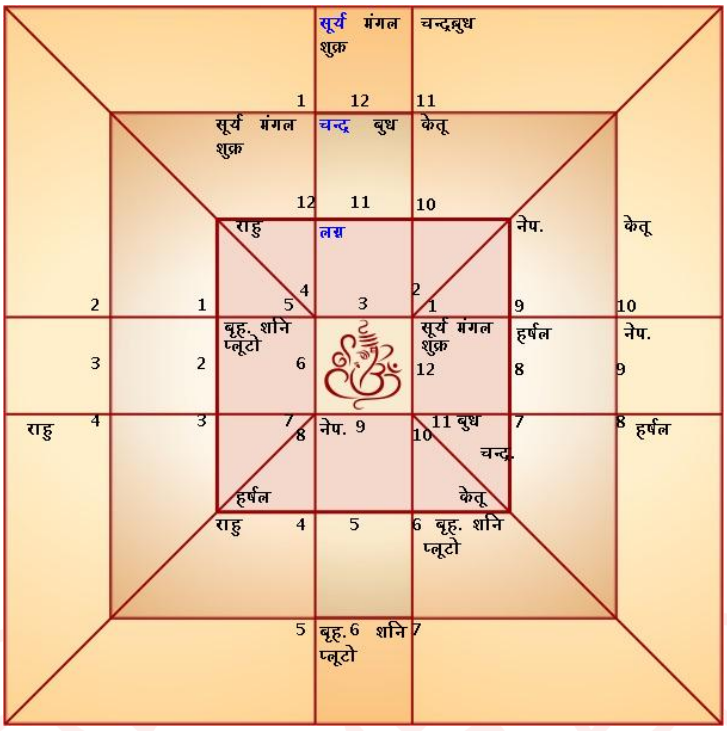

सुदर्शन चक्र शुभ और अशुभ ग्रहों के प्रभाव को दर्शाता है यह (i) लग्न (ii) चन्द्रमा और (iii)सूर्य की स्थिति से इन प्रभावों को देखता है। यह जातक की उम्र को भी दर्शाता है कि कब ये प्रभाव जातक पर पड़गें।

यदि केवल शुभ ग्रहों (वृहस्पति, शुक्र वुध, चन्द्रमा) का प्रभाव है तो पूरा साल खुशीयो से भरा होगा और मांगलिक कार्य होगें। यदि केवल अशुभ ग्रहों (मंगल, शनि, राहु, केतू, सुर्य) का प्रभाव है तो यह साल अमंगलकारी होगा।

ग्रह अवस्था और तारा चक्र

ग्रह

ग्रह	स्वप्नादि 3	बलादि 5	लज्जितादि 9	दिप्तादि 9	दिप्तादि 10
सूर्य	स्वप्न	कुमार	लज्जित	शान्त	शान्त
चन्द्रमा	सुप्त	युवा	क्षुदित	दुःखित	दीन
मंगल	स्वप्न	कुमार	मुदित	शान्त	शान्त
बुध	स्वप्न	मृत	क्षुदित	शान्त	शान्त
बृहस्पति	स्वप्न	वृद्ध	लज्जित	दीन	शान्त
शुक्र	सुप्त	युवा	लज्जित	दीप्त	दीप्त
शनि	स्वप्न	युवा	क्षुदित	दीन	वक्र
राहु	सुप्त	युवा	क्षुदित	दुःखित	वक्र
केतु	स्वप्न	युवा	मुदित	शान्त	शान्त

सन्नड़ि

जन्म	कर्म	संघातिक	समुदय	विनाश	मानस
शतभिशा	अरिद्रा	उत्तरफाल्गुनी	चित्रा	मूला	उत्तराशाढ

स्थुन

कंटक स्थुन	पुष्य
कुज स्थुन	पुष्य
रक्त स्थुन	पुनर्वसु

त्रि–नाड़ि

जाति	धनिष्ठा
देश	शतभिशा
प्रतिष्ठा	पूर्वाभाद्र

नव–तारा चक्र

जन्म	शतभिशा	अरिद्रा	स्वाति
सम्पत	पूर्वाभाद्र	पुनर्वसु	विशाखा
विपत	उत्तरभाद्र	पुष्य	अनुराधा
खेष्म	रेवति	अश्लेशा	ज्येष्ठा
प्रत्यरी	अश्विनी	मघा	मूला
साधक	भरणी	पुर्वफाल्गुनी	पूर्वाशाढ़
निधन	कृतिका	उत्तरफाल्गुनी	उत्तराशाढ
मित्र	रोहिणी	हस्ता	श्रवण
अति मित्र	मृगशिरा	चित्रा	धनिष्ठा

आक्रचतुष्टय

जन्मव	उत्तरभाद्र
कर्मव	पुनर्वसु
आधान	विशाखा
नैधव	पूर्वाशाढ़

नवशुभ अक्र

		दग्ध : रेवति	क्षय : रोहिणी
	शूल : पुनर्वसु	सन्निपात : हस्ता	ध्वज : अनुराधा
उल्का : पूर्वाशाढ़	भुकम्प : उत्तराशाढ	वज्रक : श्रवण	निर्घात : धनिष्ठा

गोचर शनि

द्वादशे जन्मगै राशौ द्वितीये च शनैश्चर। सर्धानि सप्त वर्षाणि तथा दुखैर्युतो भवेत।।

(गोचर में जब शनि ग्रह, जन्म चंद्र से बारहवें, पहले और दूसरे भाव में भ्रमण करता है, उस समय (लगभग साढ़े सात वर्ष तक) को शनि साढ़ेसाती के नाम से जाना जाता है।)

प्रथम चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	21/03/1990	20/06/1990	0.0 y.3.0 m.0 d.	रजत
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	15/12/1990	05/03/1993	2.0 y.2.0 m.19 d.	ताम्र
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	15/10/1993	10/11/1993	0.0 y.0.0 m.26 d.	रजत
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	05/03/1993	15/10/1993	0.0 y.7.0 m.11 d.	लौह
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	10/11/1993	02/06/1995	1.0 y.6.0 m.22 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	10/08/1995	16/02/1996	0.0 y.6.0 m.8 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	02/06/1995	10/08/1995	0.0 y.2.0 m.9 d.	ताम्र
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	16/02/1996	17/04/1998	2.0 y.1.0 m.30 d.	लौह
कंटक शनि	वृष	07/06/2000	23/07/2002	2.0 y.1.0 m.15 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	वृष	08/01/2003	07/04/2003	0.0 y.2.0 m.28 d.	लौह
अष्टम शनि	कन्या	10/09/2009	15/11/2011	2.0 y.2.0 m.6 d.	स्वर्ण
अष्टम शनि	कन्या	16/05/2012	04/08/2012	0.0 y.2.0 m.19 d.	ताम्र

द्वितिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	24/01/2020	29/04/2022	2.0 y.3.0 m.4 d.	स्वर्ण
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	12/07/2022	17/01/2023	0.0 y.6.0 m.7 d.	रजत
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	29/04/2022	12/07/2022	0.0 y.2.0 m.13 d.	लौह
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	17/01/2023	29/03/2025	2.0 y.2.0 m.11 d.	लौह
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	29/03/2025	03/06/2027	2.0 y.2.0 m.6 d.	स्वर्ण
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	20/10/2027	23/02/2028	0.0 y.4.0 m.5 d.	स्वर्ण
कंटक शनि	वृष	08/08/2029	05/10/2029	0.0 y.1.0 m.28 d.	लौह
कंटक शनि	वृष	17/04/2030	31/05/2032	2.0 y.1.0 m.14 d.	रजत
अष्टम शनि	कन्या	22/10/2038	05/04/2039	0.0 y.5.0 m.13 d.	ताम्र
अष्टम शनि	कन्या	13/07/2039	28/01/2041	1.0 y.6.0 m.17 d.	ताम्र
अष्टम शनि	कन्या	06/02/2041	26/09/2041	0.0 y.7.0 m.19 d.	स्वर्ण

तृतिय चक्र

साढ़ेसाती चक्र	गोचर राशि में	आरम्भ का समय	समाप्ति का समय	भ्रमण काल (व—म—दि)	शनि मूर्ति
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	06/03/2049	10/07/2049	0.0 y.4.0 m.5 d.	स्वर्ण
प्रथम ढ़ैय्या	मक.	04/12/2049	25/02/2052	2.0 y.2.0 m.22 d.	स्वर्ण
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	25/02/2052	14/05/2054	2.0 y.2.0 m.18 d.	ताम्र
द्वितिय ढ़ैय्या	कुम्भ	02/09/2054	05/02/2055	0.0 y.5.0 m.4 d.	ताम्र
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	14/05/2054	02/09/2054	0.0 y.3.0 m.20 d.	रजत
तृतिय ढ़ैय्या	मीन	05/02/2055	07/04/2057	2.0 y.2.0 m.1 d.	लौह
कंटक शनि	वृष	27/05/2059	11/07/2061	2.0 y.1.0 m.15 d.	ताम्र
कंटक शनि	वृष	13/02/2062	07/03/2062	0.0 y.0.0 m.22 d.	ताम्र
अष्टम शनि	कन्या	30/08/2068	04/11/2070	2.0 y.2.0 m.5 d.	स्वर्ण

अष्टकवर्ग सिद्धान्त — भिन्नाष्टक वर्ग

सूर्य भिन्नाष्टक वर्ग													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
शनि	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
बृहस्पति	0	1	0	1	0	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूय	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	7
चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	0	4
लग्न	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
योग	6	3	4	4	2	5	4	5	5	4	2	4	48

सूर्य

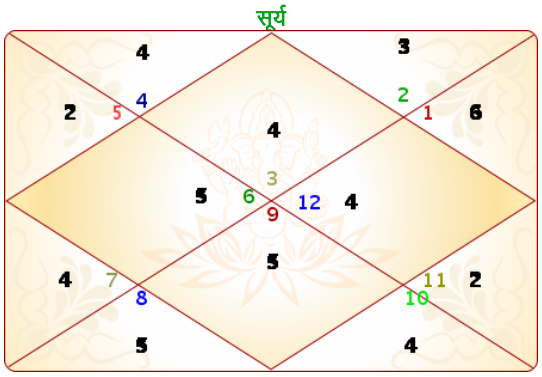

चन्द्रमा भिन्नाष्टक वर्ग													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
शनि	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	4
बृहस्पति	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	0	1	7
मंगल	1	1	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	7
सूय	0	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	6
शुक्र	0	1	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चन्द्रमा	1	0	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	6
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
योग	5	4	3	5	6	4	1	6	6	4	3	2	49

चन्द्रमा

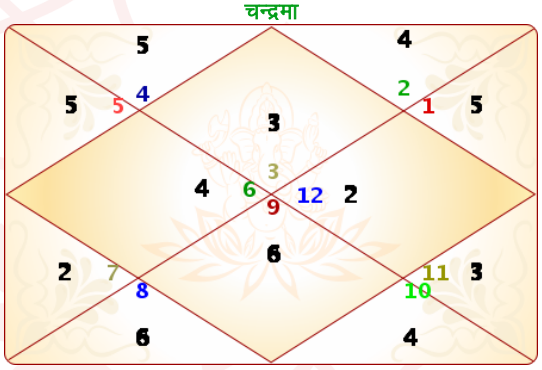

मंगल भिन्नाष्टक वर्ग													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
शनि	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	0	1	7
बृहस्पति	0	0	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूय	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	5
शुक्र	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	5
योग	5	2	5	5	4	2	2	1	5	3	2	3	39

मंगल

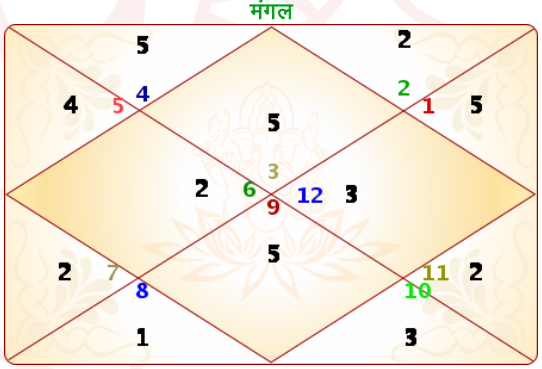

बुध भिन्नाष्टक वर्ग													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
शनि	1	1	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	8
बृहस्पति	1	0	0	1	1	0	0	0	0	0	1	0	4
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	8
सूय	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8

बुध

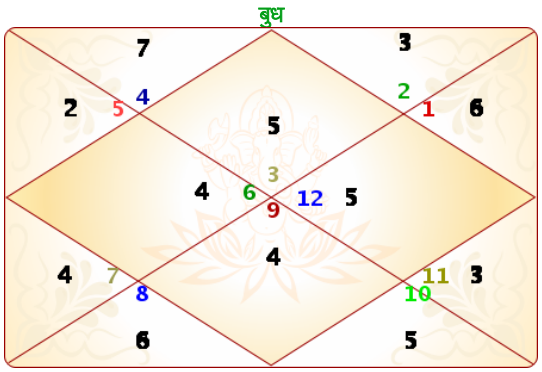

चन्द्रमा	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	0	1	6
लग्न	1	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	7
योग	6	3	5	7	2	4	4	6	4	5	3	5	54

अष्टकवर्ग सिद्धान्त — भिन्नाष्टक वर्ग

बृहस्पति भिन्नाष्टक वर्ग													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
शनि	0	0	0	0	1	0	0	1	0	1	1	0	4
बृहस्पति	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	0	1	8
मंगल	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
सूय	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
शुक्र	1	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	6
बुध	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	1	8
चन्द्रमा	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	0	1	5
लग्न	1	0	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	9
योग	5	2	6	4	3	4	6	6	7	4	3	6	56

बृहस्पति

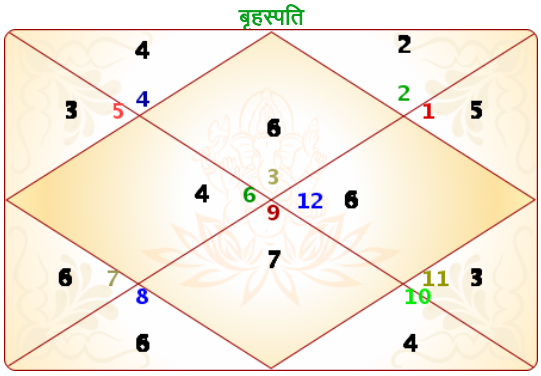

शुक्र भिन्नाष्टक वर्ग													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
शनि	1	1	1	1	0	0	0	1	1	1	0	0	7
बृहस्पति	1	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	5
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूय	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	0	3
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	1	9
बुध	1	0	1	1	0	0	1	0	1	0	0	0	5
चन्द्रमा	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	1	1	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
योग	6	5	6	6	2	2	5	3	4	7	4	2	52

शुक्र

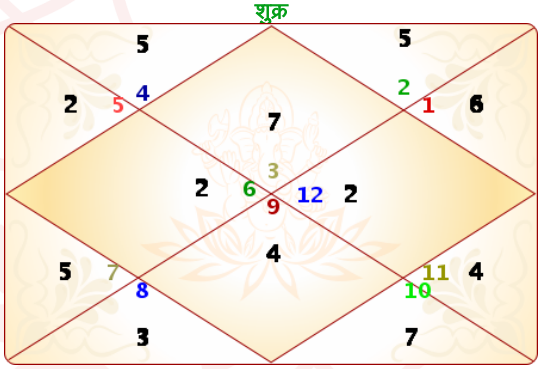

शनि भिन्नाष्टक वर्ग													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
शनि	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	1	0	4
बृहस्पति	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	4
मंगल	0	1	0	1	1	0	0	0	1	1	1	0	6
सूय	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
शुक्र	0	0	0	0	1	0	0	0	0	1	1	0	3
बुध	0	0	0	1	0	1	1	1	1	1	0	0	6
चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	0	0	3
लग्न	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	0	1	6
योग	3	1	2	5	4	3	2	3	4	6	4	2	39

शनि

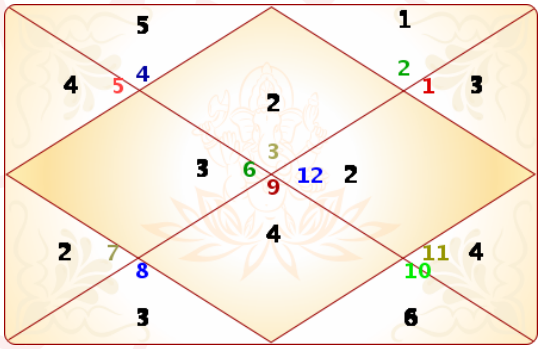

लग्न भिन्नाष्टक वग													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
शनि	0	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	6
बृहस्पति	0	1	1	1	0	1	1	0	1	1	1	1	9
मंगल	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
सूय	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	7
बुध	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	1	7

लग्न

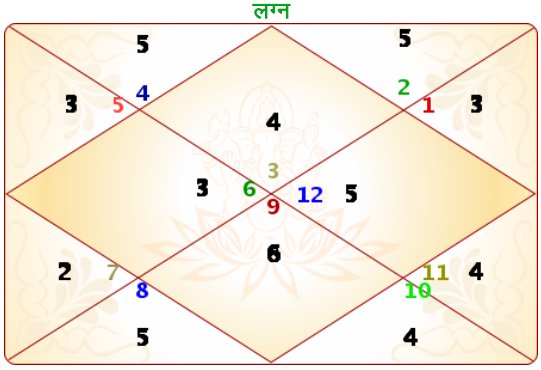

चन्द्रमा	1	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	0	5
लग्न	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
योग	3	5	4	5	3	3	2	5	6	4	4	5	49

अष्टकवर्ग सिद्धान्त — भिन्नाष्टक वर्ग

राहु भिन्नाष्टक वर्ग													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
शनि	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	0	1	6
बृहस्पति	1	0	0	0	0	1	0	1	1	0	1	0	5
मंगल	1	1	0	1	0	0	0	0	0	0	1	0	4
सूय	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	1	7
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	1	1	0	4
बुध	0	1	0	0	1	1	0	0	0	1	0	1	5
चन्द्रमा	1	0	1	0	1	1	1	1	0	0	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	1	1	1	0	0	0	1	0	5
योग	4	4	2	3	5	6	3	3	2	3	5	3	43

कक्ष बल													
राशि	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	
भाव	XI	XII	I	II	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	
शनि	4	4	5	7	1	4	2	5	5	4	4	3	48
बृहस्पति	4	3	5	8	4	3	2	1	3	4	5	3	45
मंगल	5	4	4	3	4	4	4	4	7	8	2	5	54
सूय	3	4	4	2	4	4	5	3	6	8	3	3	49
शुक्र	4	4	4	5	4	2	4	5	3	6	3	3	47
बुध	5	3	6	7	1	3	5	6	8	3	4	2	53
चन्द्रमा	6	2	2	6	2	2	2	4	8	2	2	3	41
लग्न	8	1	5	3	6	5	2	7	1	2	2	7	49
योग	39	25	35	41	26	27	26	35	41	37	25	29	386

बृहस्पति

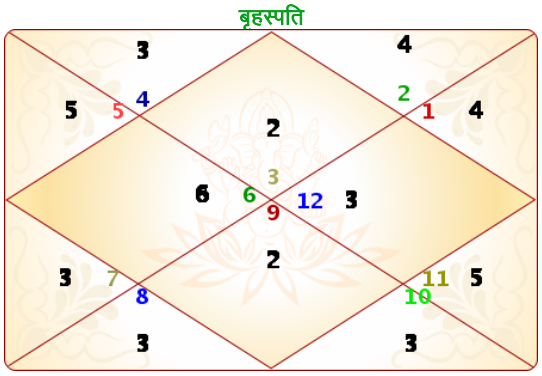

शुक्र

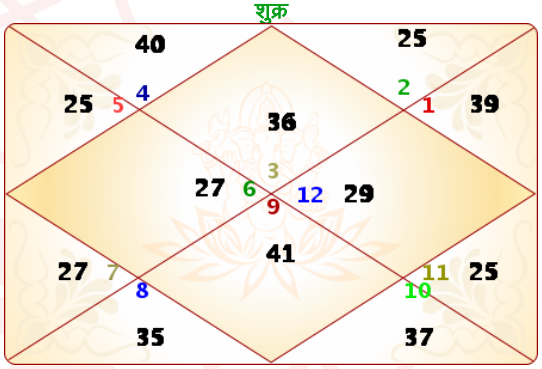

अष्टकवर्ग सिद्धान्त — त्रिकोन और एकाधिपत्य शोधन

आधार लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त — (परासर)

सूर्य

शोधन से पूर्व

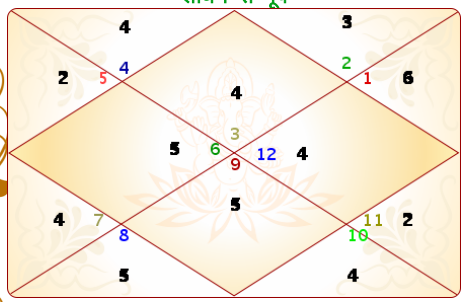

राशि पिण्ड 85

त्रिकोन शोधन

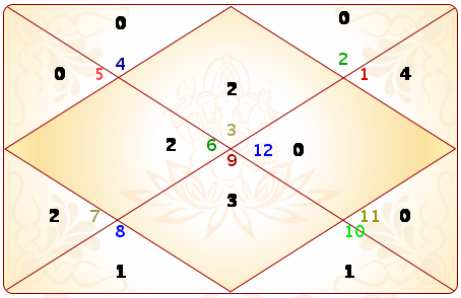

ग्रह पिण्ड 30

एकाधिपत्य शोधन

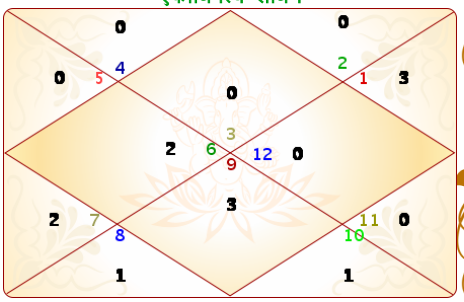

शुद्ध पिण्ड 115

चन्द्रमा

शोधन से पूर्व

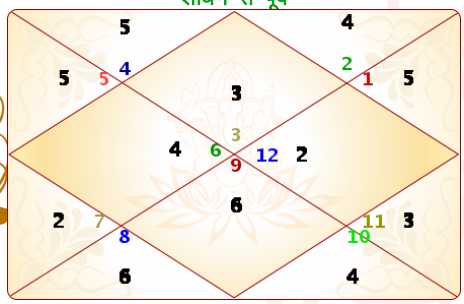

राशि पिण्ड 72

त्रिकोन शोधन

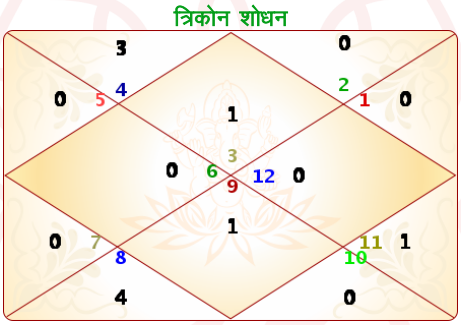

ग्रह पिण्ड 10

एकाधिपत्य शोधन

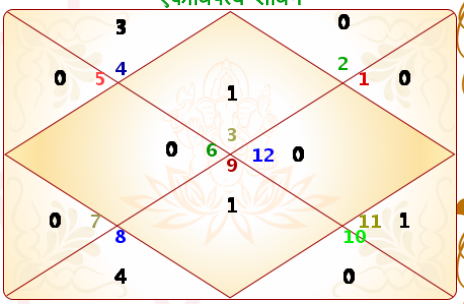

शुद्ध पिण्ड 82

मंगल

शोधन से पूर्व

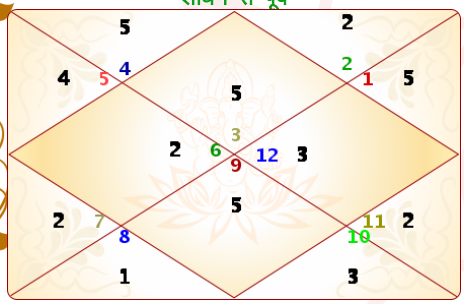

राशि पिण्ड 76

त्रिकोन शोधन

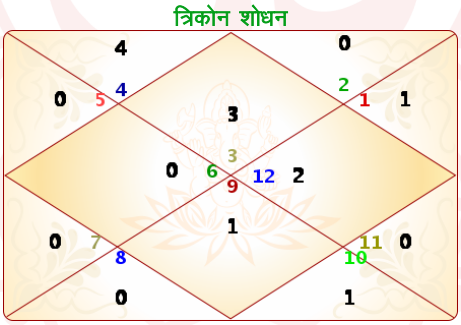

ग्रह पिण्ड 40

एकाधिपत्य शोधन

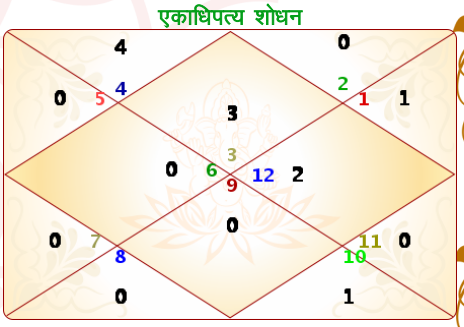

शुद्ध पिण्ड 116

बुध

शोधन से पूर्व

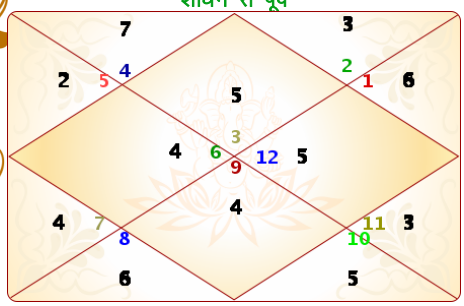

राशि पिण्ड 85

त्रिकोन शोधन

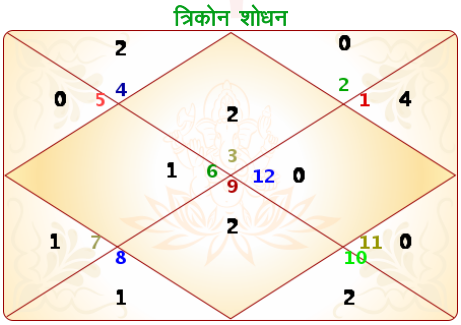

ग्रह पिण्ड 15

एकाधिपत्य शोधन

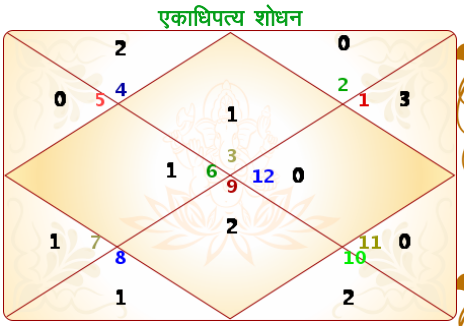

शुद्ध पिण्ड 100

अष्टकवर्ग सिद्धान्त — त्रिकोन और एकाधिपत्य शोधन

आधार लग्न (जन्म) कुण्डली (परासर) अष्टकवर्ग सिद्धान्त — (परासर)

बृहस्पति

शोधन से पूर्व

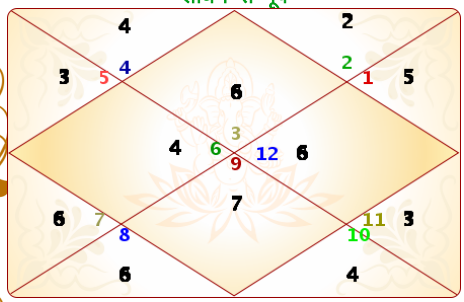

राशि पिण्ड 91

त्रिकोन शोधन

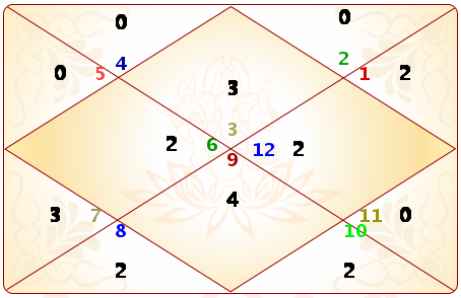

ग्रह पिण्ड 70

एकाधिपत्य शोधन

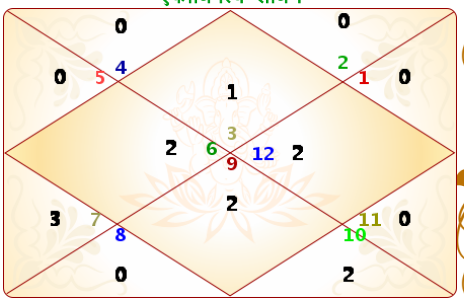

शुद्ध पिण्ड 161

शुक्र

शोधन से पूर्व

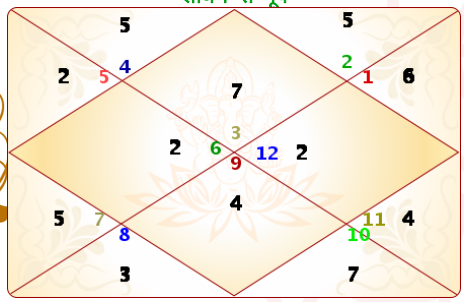

राशि पिण्ड 101

त्रिकोन शोधन

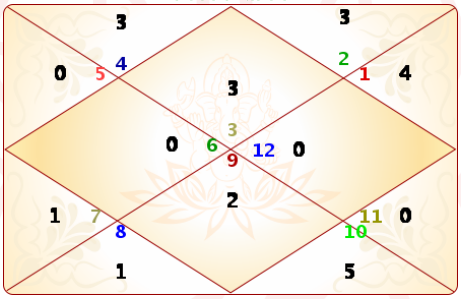

ग्रह पिण्ड 0

एकाधिपत्य शोधन

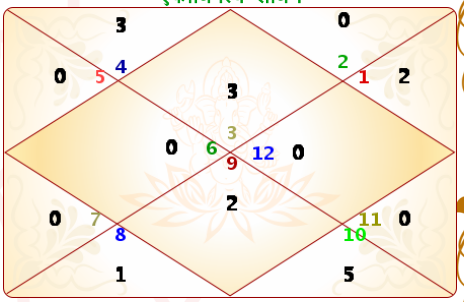

शुद्ध पिण्ड 101

शनि

शोधन से पूर्व

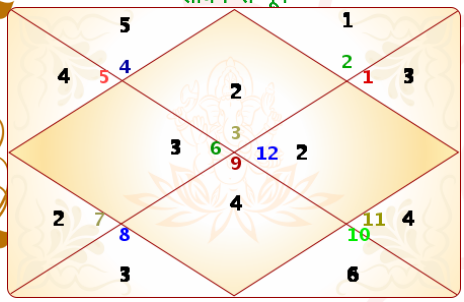

राशि पिण्ड 86

त्रिकोन शोधन

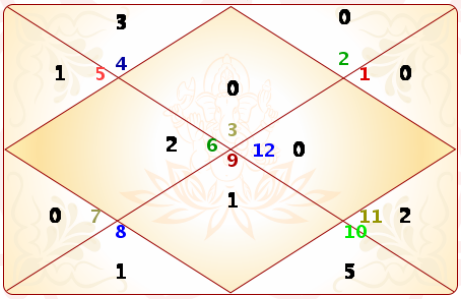

ग्रह पिण्ड 50

एकाधिपत्य शोधन

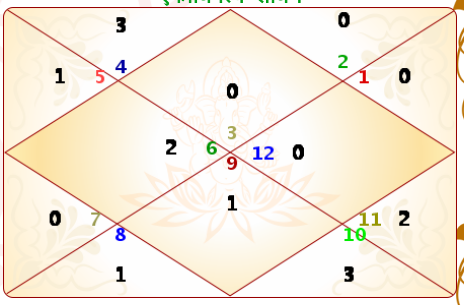

शुद्ध पिण्ड 136

लग्न

शोधन से पूर्व

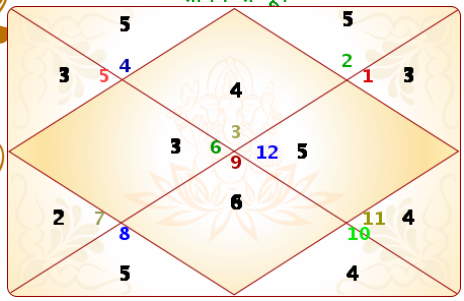

राशि पिण्ड 85

त्रिकोन शोधन

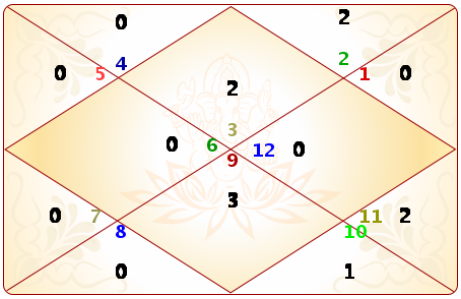

ग्रह पिण्ड 20

एकाधिपत्य शोधन

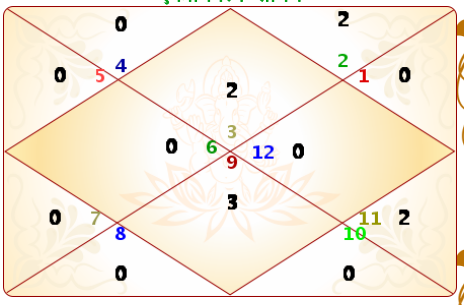

शुद्ध पिण्ड 105

त्रि–पाप चक्र

प्रथम चक्र उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितिय चक्र उम्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतिय चक्र उम्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतू पताकी	बुध	शनि	बृहस्पति	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	बृहस्पति
केतू कुण्डली	शनि	शनि	सूर्य	सूर्य	सूर्य	केतु	बुध	बुध	बुध	मंगल	मंगल	मंगल
गुरू कुण्डली	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य

प्रथम चक्र उम्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितिय चक्र उम्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतिय चक्र उम्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतू पताकी	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	बृहस्पति	राहु	केतु	शुक्र
केतू कुण्डली	केतु	बृहस्पति	बृहस्पति	बृहस्पति	चन्द्रमा	चन्द्रमा	चन्द्रमा	केतु	शुक्र	शुक्र	शुक्र	राहु
गुरू कुण्डली	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा

प्रथम चक्र उम्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितिय चक्र उम्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतिय चक्र उम्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतू पताकी	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	शनि	बृहस्पति	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल
केतू कुण्डली	राहु	केतु	शनि	शनि	शनि	सूर्य	सूर्य	सूर्य	केतु	बुध	बुध	बुध
गुरू कुण्डली	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चन्द्रमा	बुध	बृहस्पति	शुक्र

त्रि–आयुध चक्र से विश्लेषण

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर रथ चक्र के अनुसार यह पीछे वाले भाग में नीचे की ओर स्थित है। आपकी कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आप एक बहुत भाग्यशाली व्यक्ति रहेंगे। स्वंय पर आश्रित होने के बजाय दूसरो का अनुसरण करने की आपकी आदत हो सकती है। इस कारण आप नौकरी में ही बने रह सकते हैं।

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर घूर्ण चक्र के अनुसार यह आठवें भाग में स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आप खुद अपने भाग्य के निर्माता होंगे आपकी अनमोल विशेषताओ (लगन और मेहनत) को लोग आपकी किस्मत कहेंगे। आपका भाग्य हमेशा चमकता रहेगा।

आपकी जन्म कुण्डली में सूर्य के नक्षत्र से चन्द्रमा के नक्षत्र तक गिनने पर चाप चक्र के अनुसार यह के दॉयी ओर धनुष की डोरी के जोड़ पर स्थित है। आप की कुण्डली में यदि कोई संशोधित प्रभाव नहीं है तो, आप को कड़ी परिस्तिथियों का सामना करना पड़ सकता है। आपको कठोर संघर्ष करना पड़ सकता है। यदि आप हिम्मत और आत्मविश्वास से काम लेंगे तो आप निश्चित ही सफल रहेंगे।

ग्रह दृष्टि (पराशरी)

ग्रह	मुख्य दृष्टि	विशेष दृष्टि
सूर्य	बृहस्पति, शनि	.....
चन्द्रमा	.....	.....
मंगल	बृहस्पति, शनि	लग्न
बुध	.....	.....
बृहस्पति	सूर्य, मंगल, शुक्र	केतु
शुक्र	बृहस्पति, शनि	.....
शनि	सूर्य, मंगल, शुक्र	लग्न
राहु	केतु	.....
केतु	राहु	.....

ग्रह दृष्टि (जैमिनी)

राशि (ग्रह)	सम्मुख दृष्टि	पृष्ठ दृष्टि
मेष	वृश्चिक	सिहं, कुम्भ(चन्द्रमा, बुध)
वृष	तुला	कर्क(राहु), मकर(केतु)
मिथुन	कन्या(बृहस्पति, शनि)	धनु, मीन(सूर्य, मंगल, शुक्र)
कर्क(राहु)	कुम्भ(चन्द्रमा, बुध)	वृष, वृश्चिक
सिहं	मकर(केतु)	मेष, तुला
कन्या(बृहस्पति, शनि)	मिथुन	धनु, मीन(सूर्य, मंगल, शुक्र)
तुला	वृष	सिहं, कुम्भ(चन्द्रमा, बुध)
वृश्चिक	मेष	कर्क(राहु), मकर(केतु)
धनु	मीन(सूर्य, मंगल, शुक्र)	मिथुन, कन्या(बृहस्पति, शनि)
मकर(केतु)	सिहं	वृष, वृश्चिक
कुम्भ(चन्द्रमा, बुध)	कर्क(राहु)	मेष, तुला
मीन(सूर्य, मंगल, शुक्र)	धनु	मिथुन, कन्या(बृहस्पति, शनि)

नोट – सम्मुख दृष्टि का प्रभाव पृष्ठ दृष्टि से अधिक होता है।

ग्रह दृष्टि (ताजिक)

ग्रह	लग्न	सूर्य	चन्द्रमा	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि	राहु	केतु
लग्न	---									
सूर्य	4/10(+)	---								
चन्द्रमा	5/9(-)	2/12(+)	---							
मंगल	4/10(+)	1/1(+)	2/12(+)	---						
बुध	5/9(-)	2/12(+)	1/1(-)	2/12(-)	---					
बृहस्पति	4/10(-)	7/7(+)	6/8(+)	7/7(+)	6/8(-)	---				
शुक्र	4/10(+)	1/1(+)	2/12(+)	1/1(+)	2/12(-)	7/7(+)	---			
शनि	4/10(-)	7/7(+)	6/8(+)	7/7(+)	6/8(-)	1/1(+)	7/7(+)	---		
राहु	2/12(-)	5/9(+)	6/8(+)	5/9(+)	6/8(-)	3/11(+)	5/9(+)	3/11(+)	---	
केतु	6/8(-)	3/11(+)	2/12(+)	3/11(+)	2/12(-)	5/9(+)	3/11(+)	5/9(+)	7/7 (+)	---

लिजेण्ड –

लिजेण्ड – 1/1 युति, 2/12 अर्द्ध सेक्सटाइल, 3/11 सेक्सटाइल, 4/10 स्कवायर, 5/9 ट्राइन, 6/8 क्वीन्कशं, 7/7 से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश है। (+) से अभिप्राय यह है कि इसमें ग्रह दृष्टि की सीमा का समावेश नहीं है।

नोट – ग्रह दृष्टि के लिए ताजिक सिद्धान्त के अनुसार औसत ग्रह दृष्टि की सीमा का प्रयोग किया गया है। राहु और केतू के लिए ग्रह दृष्टि की सीमा 6 अंश है, परन्तु लग्न के लिए ग्रह दृष्टि की सीमा का प्रयोग नहीं किया गया है।

जैमिनी लग्न कुण्डली

नवांश कुण्डली

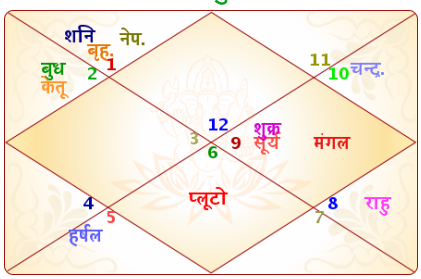

नवांश कुण्डली (कृष्ण मिश्र)

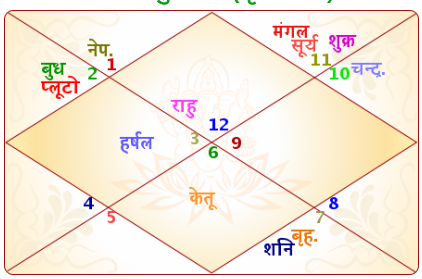

काराकांश कुण्डली (राशि)

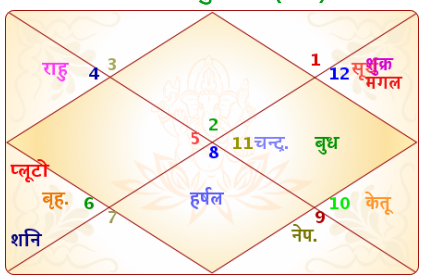

द्रेष्काण लग्न (प्र.त्रा.) कुण्डली

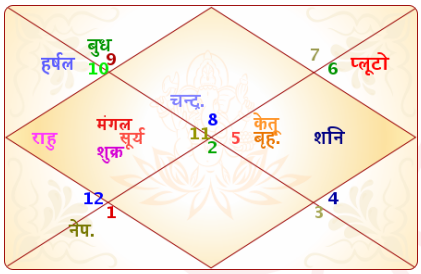

द्रेष्काण लग्न (सोमनाथ) कुण्डली

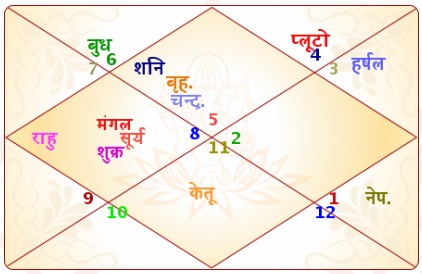

आरूढ़ लग्न कुण्डली

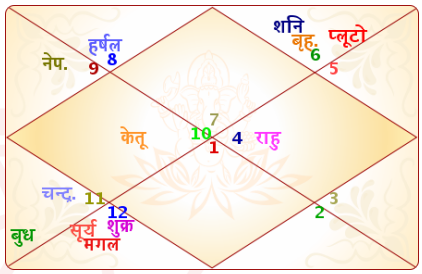

उपपद लग्न कुण्डली

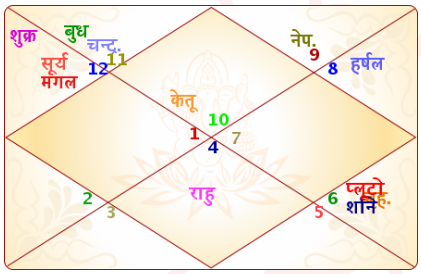

होरा लग्न (वृद्धि करिका) कुण्डली

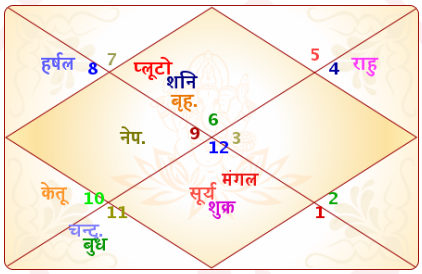

होरा लग्न (सवाया) कुण्डली

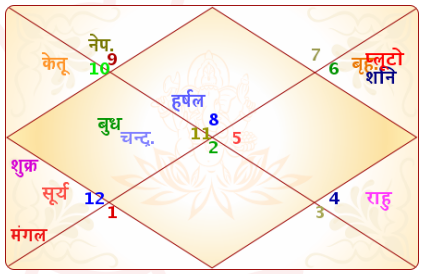

आयुर लग्न कुण्डली

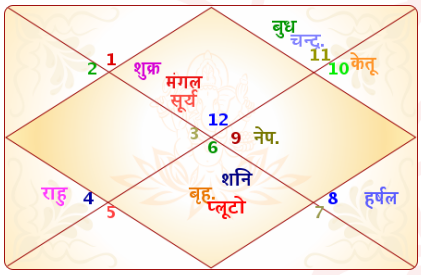

पका लग्न कुण्डली

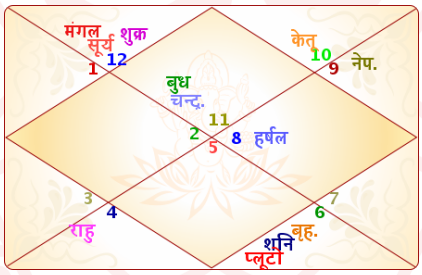

इन्दु लग्न कुण्डली

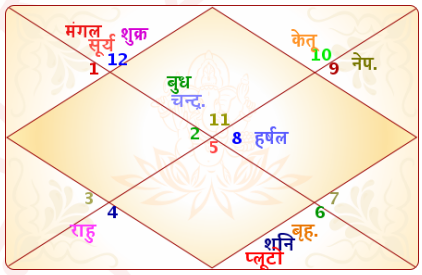

दिब्य लग्न कुण्डली

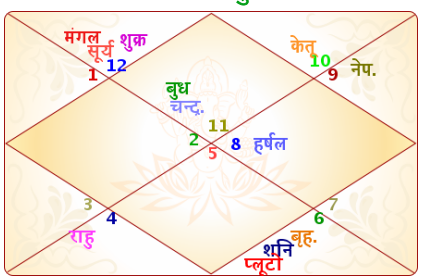

तारा लग्न कुण्डली

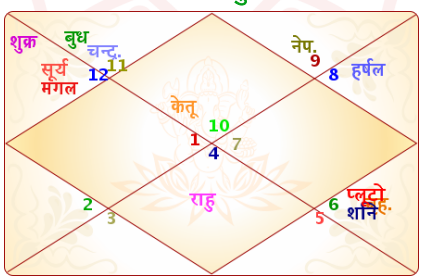

त्रिप्रवन लग्न कुण्डली

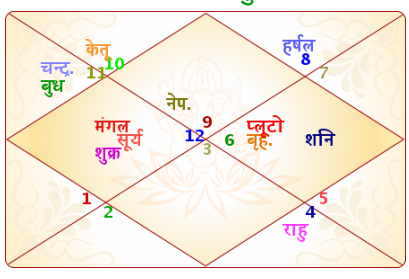

विंशोत्तरी दशा

जन्म के समय विंशोत्तरी भोग्य दशा (अयनाश : 023:35:42) चन्द्रमा 9.0 व.1.0 म.27 द.

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से
1	राहु	9.0 y.1.0 m.27 d.	02:04:1981
2	बृहस्पति	16.0 y.0.0 m.0 d.	30:05:1990
3	शनि	19.0 y.0.0 m.0 d.	30:05:2006
4	बुध	17.0 y.0.0 m.0 d.	30:05:2025
5	केतु	7.0 y.0.0 m.0 d.	30:05:2042
6	शुक्र	20.0 y.0.0 m.0 d.	30:05:2049
7	सूर्य	6.0 y.0.0 m.0 d.	30:05:2069
8	चन्द्रमा	10.0 y.0.0 m.0 d.	30:05:2075
9	मंगल	7.0 y.0.0 m.0 d.	30:05:2085

राहु दशा

अन्तर्दशा	से
राहु	
बृहस्पति	
शनि	
बुध	02:04:1981
केतु	28:11:1982
शुक्र	16:12:1983
सूर्य	16:12:1986
चन्द्रमा	10:11:1987
मंगल	11:05:1989

बृहस्पति दशा

अन्तर्दशा	से
बृहस्पति	30:05:1990
शनि	17:07:1992
बुध	28:01:1995
केतु	05:05:1997
शुक्र	11:04:1998
सूर्य	10:12:2000
चन्द्रमा	28:09:2001
मंगल	28:01:2003
राहु	04:01:2004

शनि दशा

अन्तर्दशा	से
शनि	30:05:2006
बुध	02:06:2009
केतु	09:02:2012
शुक्र	21:03:2013
सूर्य	20:05:2016
चन्द्रमा	02:05:2017
मंगल	01:12:2018
राहु	10:01:2020
बृहस्पति	16:11:2022

बुध दशा

अन्तर्दशा	से
बुध	30:05:2025
केतु	26:10:2027
शुक्र	22:10:2028
सूर्य	23:08:2031
चन्द्रमा	28:06:2032
मंगल	28:11:2033
राहु	25:11:2034
बृहस्पति	14:06:2037
शनि	19:09:2039

केतु दशा

अन्तर्दशा	से
केतु	30:05:2042
शुक्र	26:10:2042
सूर्य	25:12:2043
चन्द्रमा	01:05:2044
मंगल	01:12:2044
राहु	29:04:2045
बृहस्पति	17:05:2046
शनि	23:04:2047
बुध	01:06:2048

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से
शुक्र	30:05:2049
सूर्य	28:09:2052
चन्द्रमा	28:09:2053
मंगल	30:05:2055
राहु	29:07:2056
बृहस्पति	29:07:2059
शनि	30:03:2062
बुध	30:05:2065
केतु	29:03:2068

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से
सूर्य	30:05:2069
चन्द्रमा	16:09:2069
मंगल	18:03:2070
राहु	23:07:2070
बृहस्पति	17:06:2071
शनि	04:04:2072
बुध	18:03:2073
केतु	22:01:2074
शुक्र	30:05:2074

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	30:05:2075
मंगल	29:03:2076
राहु	28:10:2076
बृहस्पति	29:04:2078
शनि	29:08:2079
बुध	30:03:2081
केतु	29:08:2082
शुक्र	30:03:2083
सूर्य	28:11:2084

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से
मंगल	30:05:2085
राहु	26:10:2085
बृहस्पति	13:11:2086
शनि	19:10:2087
बुध	28:11:2088
केतु	25:11:2089
शुक्र	23:04:2090
सूर्य	23:06:2091
चन्द्रमा	29:10:2091

राहु ग्रह दशा

(Start Date: 02:04:1981, End Date: 29:05:1990)

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	....
बृहस्पति	....
शनि	....
बुध	....
केतु	....
शुक्र	....
सूर्य	....
चन्द्रमा	....
मंगल	....

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	....
शनि	....
बुध	....
केतु	....
शुक्र	....
सूर्य	....
चन्द्रमा	....
मंगल	....
राहु	....

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	....
बुध	....
केतु	....
शुक्र	....
सूर्य	....
चन्द्रमा	....
मंगल	....
राहु	....
बृहस्पति	....

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	....
केतु	....
शुक्र	02:04:1981
सूर्य	18:04:1981
चन्द्रमा	03:06:1981
मंगल	20:08:1981
राहु	13:10:1981
बृहस्पति	02:03:1982
शनि	04:07:1982

केतु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
केतु	28:11:1982
शुक्र	20:12:1982
सूर्य	22:02:1983
चन्द्रमा	13:03:1983
मंगल	14:04:1983
राहु	07:05:1983
बृहस्पति	03:07:1983
शनि	23:08:1983
बुध	23:10:1983

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	16:12:1983
सूर्य	16:06:1984
चन्द्रमा	10:08:1984
मंगल	10:11:1984
राहु	13:01:1985
बृहस्पति	26:06:1985
शनि	19:11:1985
बुध	11:05:1986
केतु	13:10:1986

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	16:12:1986
चन्द्रमा	02:01:1987
मंगल	29:01:1987
राहु	17:02:1987
बृहस्पति	07:04:1987
शनि	21:05:1987
बुध	12:07:1987
केतु	28:08:1987
शुक्र	16:09:1987

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	10:11:1987
मंगल	25:12:1987
राहु	26:01:1988
बृहस्पति	18:04:1988
शनि	30:06:1988
बुध	25:09:1988
केतु	12:12:1988
शुक्र	13:01:1989
सूर्य	14:04:1989

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	11:05:1989
राहु	03:06:1989
बृहस्पति	30:07:1989
शनि	19:09:1989
बुध	19:11:1989
केतु	12:01:1990
शुक्र	04:02:1990
सूर्य	08:04:1990
चन्द्रमा	28:04:1990

बृहस्पति ग्रह दशा

(Start Date: 30:05:1990, End Date: 29:05:2006)

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	30:05:1990
शनि	10:09:1990
बुध	12:01:1991
केतु	02:05:1991
शुक्र	16:06:1991
सूर्य	24:10:1991
चन्द्रमा	02:12:1991
मंगल	05:02:1992
राहु	22:03:1992

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	17:07:1992
बुध	11:12:1992
केतु	21:04:1993
शुक्र	14:06:1993
सूर्य	15:11:1993
चन्द्रमा	31:12:1993
मंगल	18:03:1994
राहु	11:05:1994
बृहस्पति	27:09:1994

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	28:01:1995
केतु	25:05:1995
शुक्र	12:07:1995
सूर्य	27:11:1995
चन्द्रमा	08:01:1996
मंगल	17:03:1996
राहु	04:05:1996
बृहस्पति	06:09:1996
शनि	25:12:1996

केतु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
केतु	05:05:1997
शुक्र	25:05:1997
सूर्य	21:07:1997
चन्द्रमा	07:08:1997
मंगल	04:09:1997
राहु	24:09:1997
बृहस्पति	14:11:1997
शनि	30:12:1997
बुध	22:02:1998

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	11:04:1998
सूर्य	20:09:1998
चन्द्रमा	08:11:1998
मंगल	28:01:1999
राहु	26:03:1999
बृहस्पति	19:08:1999
शनि	26:12:1999
बुध	29:05:2000
केतु	14:10:2000

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	10:12:2000
चन्द्रमा	25:12:2000
मंगल	18:01:2001
राहु	04:02:2001
बृहस्पति	20:03:2001
शनि	28:04:2001
बुध	13:06:2001
केतु	24:07:2001
शुक्र	11:08:2001

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	28:09:2001
मंगल	08:11:2001
राहु	06:12:2001
बृहस्पति	17:02:2002
शनि	23:04:2002
बुध	09:07:2002
केतु	16:09:2002
शुक्र	14:10:2002
सूर्य	04:01:2003

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	28:01:2003
राहु	17:02:2003
बृहस्पति	09:04:2003
शनि	24:05:2003
बुध	17:07:2003
केतु	03:09:2003
शुक्र	23:09:2003
सूर्य	19:11:2003
चन्द्रमा	06:12:2003

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	04:01:2004
बृहस्पति	14:05:2004
शनि	08:09:2004
बुध	25:01:2005
केतु	30:05:2005
शुक्र	20:07:2005
सूर्य	13:12:2005
चन्द्रमा	25:01:2006
मंगल	08:04:2006

शनि ग्रह दशा

(Start Date: 30:05:2006, End Date: 29:05:2025)

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	30:05:2006
बुध	19:11:2006
केतु	24:04:2007
शुक्र	27:06:2007
सूर्य	27:12:2007
चन्द्रमा	20:02:2008
मंगल	22:05:2008
राहु	25:07:2008
बृहस्पति	06:01:2009

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	02:06:2009
केतु	19:10:2009
शुक्र	15:12:2009
सूर्य	28:05:2010
चन्द्रमा	16:07:2010
मंगल	06:10:2010
राहु	02:12:2010
बृहस्पति	28:04:2011
शनि	06:09:2011

केतु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
केतु	09:02:2012
शुक्र	04:03:2012
सूर्य	10:05:2012
चन्द्रमा	31:05:2012
मंगल	03:07:2012
राहु	27:07:2012
बृहस्पति	26:09:2012
शनि	19:11:2012
बुध	22:01:2013

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	21:03:2013
सूर्य	29:09:2013
चन्द्रमा	26:11:2013
मंगल	02:03:2014
राहु	09:05:2014
बृहस्पति	29:10:2014
शनि	01:04:2015
बुध	01:10:2015
केतु	13:03:2016

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	20:05:2016
चन्द्रमा	06:06:2016
मंगल	05:07:2016
राहु	25:07:2016
बृहस्पति	16:09:2016
शनि	01:11:2016
बुध	26:12:2016
केतु	13:02:2017
शुक्र	05:03:2017

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	02:05:2017
मंगल	19:06:2017
राहु	23:07:2017
बृहस्पति	18:10:2017
शनि	03:01:2018
बुध	04:04:2018
केतु	25:06:2018
शुक्र	29:07:2018
सूर्य	02:11:2018

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	01:12:2018
राहु	25:12:2018
बृहस्पति	23:02:2019
शनि	18:04:2019
बुध	21:06:2019
केतु	18:08:2019
शुक्र	10:09:2019
सूर्य	17:11:2019
चन्द्रमा	07:12:2019

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	10:01:2020
बृहस्पति	14:06:2020
शनि	31:10:2020
बुध	14:04:2021
केतु	08:09:2021
शुक्र	08:11:2021
सूर्य	30:04:2022
चन्द्रमा	21:06:2022
मंगल	16:09:2022

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	16:11:2022
शनि	19:03:2023
बुध	13:08:2023
केतु	22:12:2023
शुक्र	14:02:2024
सूर्य	17:07:2024
चन्द्रमा	01:09:2024
मंगल	18:11:2024
राहु	11:01:2025

बुध ग्रह दशा

(Start Date: 30:05:2025, End Date: 29:05:2042)

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	30:05:2025
केतु	01:10:2025
शुक्र	21:11:2025
सूर्य	17:04:2026
चन्द्रमा	31:05:2026
मंगल	12:08:2026
राहु	02:10:2026
बृहस्पति	11:02:2027
शनि	08:06:2027

केतु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
केतु	26:10:2027
शुक्र	16:11:2027
सूर्य	15:01:2028
चन्द्रमा	02:02:2028
मंगल	03:03:2028
राहु	25:03:2028
बृहस्पति	18:05:2028
शनि	05:07:2028
बुध	01:09:2028

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	22:10:2028
सूर्य	13:04:2029
चन्द्रमा	04:06:2029
मंगल	29:08:2029
राहु	28:10:2029
बृहस्पति	01:04:2030
शनि	17:08:2030
बुध	28:01:2031
केतु	23:06:2031

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	23:08:2031
चन्द्रमा	07:09:2031
मंगल	03:10:2031
राहु	21:10:2031
बृहस्पति	07:12:2031
शनि	17:01:2032
बुध	06:03:2032
केतु	19:04:2032
शुक्र	08:05:2032

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	28:06:2032
मंगल	11:08:2032
राहु	10:09:2032
बृहस्पति	27:11:2032
शनि	04:02:2033
बुध	27:04:2033
केतु	09:07:2033
शुक्र	08:08:2033
सूर्य	02:11:2033

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	28:11:2033
राहु	19:12:2033
बृहस्पति	11:02:2034
शनि	01:04:2034
बुध	28:05:2034
केतु	18:07:2034
शुक्र	08:08:2034
सूर्य	08:10:2034
चन्द्रमा	26:10:2034

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	25:11:2034
बृहस्पति	14:04:2035
शनि	16:08:2035
बुध	10:01:2036
केतु	21:05:2036
शुक्र	15:07:2036
सूर्य	17:12:2036
चन्द्रमा	02:02:2037
मंगल	20:04:2037

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	14:06:2037
शनि	02:10:2037
बुध	10:02:2038
केतु	07:06:2038
शुक्र	25:07:2038
सूर्य	10:12:2038
चन्द्रमा	21:01:2039
मंगल	31:03:2039
राहु	18:05:2039

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	19:09:2039
बुध	22:02:2040
केतु	10:07:2040
शुक्र	06:09:2040
सूर्य	17:02:2041
चन्द्रमा	07:04:2041
मंगल	28:06:2041
राहु	24:08:2041
बृहस्पति	19:01:2042

केतु ग्रह दशा

(Start Date: 30:05:2042, End Date: 29:05:2049)

केतु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
केतु	30:05:2042
शुक्र	07:06:2042
सूर्य	02:07:2042
चन्द्रमा	09:07:2042
मंगल	22:07:2042
राहु	31:07:2042
बृहस्पति	22:08:2042
शनि	11:09:2042
बुध	04:10:2042

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	26:10:2042
सूर्य	05:01:2043
चन्द्रमा	26:01:2043
मंगल	02:03:2043
राहु	27:03:2043
बृहस्पति	30:05:2043
शनि	26:07:2043
बुध	01:10:2043
केतु	01:12:2043

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	25:12:2043
चन्द्रमा	01:01:2044
मंगल	11:01:2044
राहु	19:01:2044
बृहस्पति	07:02:2044
शनि	24:02:2044
बुध	15:03:2044
केतु	03:04:2044
शुक्र	10:04:2044

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	01:05:2044
मंगल	19:05:2044
राहु	01:06:2044
बृहस्पति	03:07:2044
शनि	31:07:2044
बुध	03:09:2044
केतु	03:10:2044
शुक्र	16:10:2044
सूर्य	20:11:2044

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	01:12:2044
राहु	10:12:2044
बृहस्पति	01:01:2045
शनि	21:01:2045
बुध	14:02:2045
केतु	07:03:2045
शुक्र	15:03:2045
सूर्य	09:04:2045
चन्द्रमा	17:04:2045

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	29:04:2045
बृहस्पति	26:06:2045
शनि	16:08:2045
बुध	15:10:2045
केतु	09:12:2045
शुक्र	31:12:2045
सूर्य	05:03:2046
चन्द्रमा	24:03:2046
मंगल	25:04:2046

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	17:05:2046
शनि	02:07:2046
बुध	25:08:2046
केतु	12:10:2046
शुक्र	01:11:2046
सूर्य	28:12:2046
चन्द्रमा	14:01:2047
मंगल	11:02:2047
राहु	03:03:2047

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	23:04:2047
बुध	26:06:2047
केतु	22:08:2047
शुक्र	15:09:2047
सूर्य	21:11:2047
चन्द्रमा	12:12:2047
मंगल	14:01:2048
राहु	07:02:2048
बृहस्पति	08:04:2048

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	01:06:2048
केतु	22:07:2048
शुक्र	13:08:2048
सूर्य	12:10:2048
चन्द्रमा	30:10:2048
मंगल	29:11:2048
राहु	21:12:2048
बृहस्पति	13:02:2049
शनि	02:04:2049

शुक्र ग्रह दशा

(Start Date: 30:05:2049, End Date: 29:05:2069)

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	30:05:2049
सूर्य	18:12:2049
चन्द्रमा	17:02:2050
मंगल	30:05:2050
राहु	08:08:2050
बृहस्पति	07:02:2051
शनि	19:07:2051
बुध	28:01:2052
केतु	19:07:2052

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	28:09:2052
चन्द्रमा	16:10:2052
मंगल	16:11:2052
राहु	07:12:2052
बृहस्पति	31:01:2053
शनि	21:03:2053
बुध	17:05:2053
केतु	08:07:2053
शुक्र	29:07:2053

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	28:09:2053
मंगल	18:11:2053
राहु	23:12:2053
बृहस्पति	25:03:2054
शनि	14:06:2054
बुध	18:09:2054
केतु	13:12:2054
शुक्र	18:01:2055
सूर्य	29:04:2055

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	30:05:2055
राहु	23:06:2055
बृहस्पति	26:08:2055
शनि	22:10:2055
बुध	28:12:2055
केतु	27:02:2056
शुक्र	23:03:2056
सूर्य	02:06:2056
चन्द्रमा	23:06:2056

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	29:07:2056
बृहस्पति	10:01:2057
शनि	05:06:2057
बुध	25:11:2057
केतु	29:04:2058
शुक्र	02:07:2058
सूर्य	31:12:2058
चन्द्रमा	24:02:2059
मंगल	26:05:2059

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	29:07:2059
शनि	06:12:2059
बुध	09:05:2060
केतु	24:09:2060
शुक्र	20:11:2060
सूर्य	01:05:2061
चन्द्रमा	19:06:2061
मंगल	08:09:2061
राहु	04:11:2061

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	30:03:2062
बुध	29:09:2062
केतु	11:03:2063
शुक्र	18:05:2063
सूर्य	26:11:2063
चन्द्रमा	23:01:2064
मंगल	29:04:2064
राहु	06:07:2064
बृहस्पति	26:12:2064

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	30:05:2065
केतु	23:10:2065
शुक्र	22:12:2065
सूर्य	13:06:2066
चन्द्रमा	03:08:2066
मंगल	29:10:2066
राहु	28:12:2066
बृहस्पति	01:06:2067
शनि	17:10:2067

केतु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
केतु	29:03:2068
शुक्र	23:04:2068
सूर्य	03:07:2068
चन्द्रमा	24:07:2068
मंगल	29:08:2068
राहु	23:09:2068
बृहस्पति	26:11:2068
शनि	22:01:2069
बुध	30:03:2069

सूर्य ग्रह दशा

(Start Date: 30:05:2069, End Date: 29:05:2075)

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	30:05:2069
चन्द्रमा	04:06:2069
मंगल	13:06:2069
राहु	19:06:2069
बृहस्पति	06:07:2069
शनि	21:07:2069
बुध	07:08:2069
केतु	22:08:2069
शुक्र	29:08:2069

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	16:09:2069
मंगल	01:10:2069
राहु	12:10:2069
बृहस्पति	08:11:2069
शनि	03:12:2069
बुध	31:12:2069
केतु	26:01:2070
शुक्र	06:02:2070
सूर्य	08:03:2070

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	18:03:2070
राहु	25:03:2070
बृहस्पति	13:04:2070
शनि	30:04:2070
बुध	20:05:2070
केतु	07:06:2070
शुक्र	15:06:2070
सूर्य	06:07:2070
चन्द्रमा	13:07:2070

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	23:07:2070
बृहस्पति	11:09:2070
शनि	24:10:2070
बुध	15:12:2070
केतु	31:01:2071
शुक्र	19:02:2071
सूर्य	15:04:2071
चन्द्रमा	01:05:2071
मंगल	29:05:2071

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	17:06:2071
शनि	26:07:2071
बुध	10:09:2071
केतु	21:10:2071
शुक्र	07:11:2071
सूर्य	26:12:2071
चन्द्रमा	10:01:2072
मंगल	03:02:2072
राहु	20:02:2072

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	04:04:2072
बुध	29:05:2072
केतु	17:07:2072
शुक्र	07:08:2072
सूर्य	04:10:2072
चन्द्रमा	21:10:2072
मंगल	19:11:2072
राहु	09:12:2072
बृहस्पति	30:01:2073

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	18:03:2073
केतु	30:04:2073
शुक्र	19:05:2073
सूर्य	09:07:2073
चन्द्रमा	25:07:2073
मंगल	20:08:2073
राहु	07:09:2073
बृहस्पति	23:10:2073
शनि	04:12:2073

केतु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
केतु	22:01:2074
शुक्र	29:01:2074
सूर्य	19:02:2074
चन्द्रमा	26:02:2074
मंगल	09:03:2074
राहु	16:03:2074
बृहस्पति	04:04:2074
शनि	21:04:2074
बुध	11:05:2074

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	30:05:2074
सूर्य	29:07:2074
चन्द्रमा	17:08:2074
मंगल	16:09:2074
राहु	07:10:2074
बृहस्पति	01:12:2074
शनि	19:01:2075
बुध	18:03:2075
केतु	08:05:2075

चन्द्रमा ग्रह दशा

(Start Date: 30:05:2075, End Date: 29:05:2085)

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	30:05:2075
मंगल	24:06:2075
राहु	12:07:2075
बृहस्पति	26:08:2075
शनि	06:10:2075
बुध	23:11:2075
केतु	05:01:2076
शुक्र	23:01:2076
सूर्य	14:03:2076

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	29:03:2076
राहु	10:04:2076
बृहस्पति	12:05:2076
शनि	10:06:2076
बुध	14:07:2076
केतु	13:08:2076
शुक्र	25:08:2076
सूर्य	30:09:2076
चन्द्रमा	11:10:2076

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	28:10:2076
बृहस्पति	19:01:2077
शनि	02:04:2077
बुध	27:06:2077
केतु	13:09:2077
शुक्र	15:10:2077
सूर्य	14:01:2078
चन्द्रमा	11:02:2078
मंगल	28:03:2078

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	29:04:2078
शनि	03:07:2078
बुध	18:09:2078
केतु	26:11:2078
शुक्र	24:12:2078
सूर्य	15:03:2079
चन्द्रमा	09:04:2079
मंगल	19:05:2079
राहु	17:06:2079

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	29:08:2079
बुध	28:11:2079
केतु	18:02:2080
शुक्र	23:03:2080
सूर्य	28:06:2080
चन्द्रमा	27:07:2080
मंगल	13:09:2080
राहु	17:10:2080
बृहस्पति	12:01:2081

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	30:03:2081
केतु	11:06:2081
शुक्र	11:07:2081
सूर्य	05:10:2081
चन्द्रमा	31:10:2081
मंगल	13:12:2081
राहु	12:01:2082
बृहस्पति	31:03:2082
शनि	08:06:2082

केतु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
केतु	29:08:2082
शुक्र	10:09:2082
सूर्य	16:10:2082
चन्द्रमा	26:10:2082
मंगल	13:11:2082
राहु	25:11:2082
बृहस्पति	27:12:2082
शनि	25:01:2083
बुध	28:02:2083

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	30:03:2083
सूर्य	09:07:2083
चन्द्रमा	08:08:2083
मंगल	28:09:2083
राहु	03:11:2083
बृहस्पति	02:02:2084
शनि	23:04:2084
बुध	29:07:2084
केतु	23:10:2084

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	28:11:2084
चन्द्रमा	07:12:2084
मंगल	22:12:2084
राहु	02:01:2085
बृहस्पति	29:01:2085
शनि	23:02:2085
बुध	24:03:2085
केतु	18:04:2085
शुक्र	29:04:2085

मंगल ग्रह दशा

(Start Date: 30:05:2085, End Date: 28:05:2092)

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	30:05:2085
राहु	07:06:2085
बृहस्पति	30:06:2085
शनि	19:07:2085
बुध	12:08:2085
केतु	02:09:2085
शुक्र	11:09:2085
सूर्य	06:10:2085
चन्द्रमा	13:10:2085

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	26:10:2085
बृहस्पति	22:12:2085
शनि	11:02:2086
बुध	13:04:2086
केतु	06:06:2086
शुक्र	28:06:2086
सूर्य	31:08:2086
चन्द्रमा	19:09:2086
मंगल	21:10:2086

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	13:11:2086
शनि	28:12:2086
बुध	20:02:2087
केतु	09:04:2087
शुक्र	29:04:2087
सूर्य	25:06:2087
चन्द्रमा	12:07:2087
मंगल	09:08:2087
राहु	29:08:2087

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	19:10:2087
बुध	23:12:2087
केतु	18:02:2088
शुक्र	13:03:2088
सूर्य	19:05:2088
चन्द्रमा	09:06:2088
मंगल	12:07:2088
राहु	05:08:2088
बृहस्पति	05:10:2088

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	28:11:2088
केतु	18:01:2089
शुक्र	08:02:2089
सूर्य	10:04:2089
चन्द्रमा	28:04:2089
मंगल	28:05:2089
राहु	18:06:2089
बृहस्पति	11:08:2089
शनि	29:09:2089

केतु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
केतु	25:11:2089
शुक्र	04:12:2089
सूर्य	28:12:2089
चन्द्रमा	05:01:2090
मंगल	17:01:2090
राहु	26:01:2090
बृहस्पति	17:02:2090
शनि	09:03:2090
बुध	02:04:2090

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	23:04:2090
सूर्य	03:07:2090
चन्द्रमा	24:07:2090
मंगल	29:08:2090
राहु	23:09:2090
बृहस्पति	25:11:2090
शनि	21:01:2091
बुध	30:03:2091
केतु	29:05:2091

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	23:06:2091
चन्द्रमा	29:06:2091
मंगल	10:07:2091
राहु	17:07:2091
बृहस्पति	05:08:2091
शनि	23:08:2091
बुध	12:09:2091
केतु	30:09:2091
शुक्र	07:10:2091

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	29:10:2091
मंगल	15:11:2091
राहु	28:11:2091
बृहस्पति	30:12:2091
शनि	27:01:2092
बुध	01:03:2092
केतु	31:03:2092
शुक्र	13:04:2092
सूर्य	18:05:2092

योगिनी दशा

ग्रह (नक्षत्र)	दशा अवधि	से–	सिद्धी बिन्दु
धान्य (वृहस्पति)(शतभिशा)	1.0 y.6.0 m.9 d.	02:04:1981	265:05:01
भ्रमरि (मंगल)(पूर्वाभाद्र)	4.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:1982	149:53:41
भद्रिका (बुध)(उत्तरभाद्र)	5.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:1986	128:52:45
उल्का (शनि)(रेवाति)	6.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:1991	128:52:45
सिद्धा (शुक्र)(अश्विनी)	7.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:1997	271:36:19
संकटा (शनि)(भरणी)	8.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2004	091:36:19
मंगला(चन्द्रमा)(कृतिका)	1.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2012	302:02:40
पिगंला (सूर्य)(रोहिणी)	2.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2013	302:02:40
धान्य (वृहस्पति)(मृगशिरा)	3.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2015	149:53:41
भ्रमरि (मंगल)(अरिद्रा)	4.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2018	092:59:24
भद्रिका (बुध)(पुनर्वसु)	5.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2022	127:30:06
उल्का (शनि)(पु)	6.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2027	324:44:37
सिद्धा (शुक्र)(अश्लेाा)	7.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2033	314:01:23
संकटा (शनि)(मघा)	8.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2040	028:10:44
मंगला(चन्द्रमा)(पुर्वफाल्गुनी)	1.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2048	300:43:56
पिगंला (सूर्य)(उत्तरफाल्गुनी)	2.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2049	337:39:22
धान्य (वृहस्पति)(हस्ता)	3.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2051	114:12:38
भ्रमरि (मंगल)(चित्रा)	4.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2054	337:48:03
भद्रिका (बुध)(स्वाति)	5.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2058	070:35:49
उल्का (शनि)(विशाखा)	6.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2063	323:21:57
सिद्धा (शुक्र)(अनुराधा)	7.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2069	149:53:15
संकटा (शनि)(ज्येश्ठा)	8.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2076	070:35:49
मंगला(चन्द्रमा)(मूला)	1.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2084	237:18:22
पिगंला (सूर्य)(पूर्वाशाढ़)	2.0 y.0.0 m.0 d.	11:10:2085	336:20:38

अष्टोत्तरी दशा (प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:35:42) : गुरु : 9 व. 6 मा. 19 दि.

आपकी कुण्डली में अष्टोत्तरी दशा का अरिद्रादी सिद्धान्त प्रावी हो रहा है।

राहु लग्न में स्थित नहीं है, और लग्नाधिपति से केन्द्र या त्रिकोन में स्थित है। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में अनुपस्थित है।

कृष्ण पक्ष में दिन का जन्म या शुक्ल पक्ष में रात का जन्म। अष्टोत्तरी दशा के कुण्डली में प्रभावी होने की यह स्थिति आपकी कुण्डली में उपस्थित है।

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से
1	बृहस्पति	9.0 y.6.0 m.20 d.	02:04:1981
2	राहु	12.0 y.0.0 m.0 d.	22:10:1990
3	शुक्र	21.0 y.0.0 m.0 d.	22:10:2002
4	सूर्य	6.0 y.0.0 m.0 d.	22:10:2023
5	चन्द्रमा	15.0 y.0.0 m.0 d.	22:10:2029
6	मंगल	8.0 y.0.0 m.0 d.	22:10:2044
7	बुध	17.0 y.0.0 m.0 d.	22:10:2052
8	शनि	10.0 y.0.0 m.0 d.	22:10:2069

बृहस्पति दशा

अन्तर्दशा	से
बृहस्पति	
राहु	
शुक्र	
सूर्य	02:04:1981
चन्द्रमा	04:01:1982
मंगल	25:08:1984
बुध	21:01:1986
शनि	18:01:1989

राहु दशा

अन्तर्दशा	से
राहु	22:10:1990
शुक्र	21:02:1992
सूर्य	22:06:1994
चन्द्रमा	20:02:1995
मंगल	22:10:1996
बुध	11:09:1997
शनि	02:08:1999
बृहस्पति	11:09:2000

शुक्र दशा

अन्तर्दशा	से
शुक्र	22:10:2002
सूर्य	21:11:2006
चन्द्रमा	21:01:2008
मंगल	22:12:2010
बुध	12:07:2012
शनि	01:11:2015
बृहस्पति	12:10:2017
राहु	22:06:2021

सूर्य दशा

अन्तर्दशा	से
सूर्य	22:10:2023
चन्द्रमा	21:02:2024
मंगल	22:12:2024
बुध	02:06:2025
शनि	13:05:2026
बृहस्पति	01:12:2026
राहु	22:12:2027
शुक्र	22:08:2028

चन्द्रमा दशा

अन्तर्दशा	से
चन्द्रमा	22:10:2029
मंगल	21:11:2031
बुध	01:01:2033
शनि	13:05:2035
बृहस्पति	01:10:2036
राहु	23:05:2039
शुक्र	21:01:2041
सूर्य	22:12:2043

मंगल दशा

अन्तर्दशा	से
मंगल	22:10:2044
बुध	26:05:2045
शनि	29:08:2046
बृहस्पति	26:05:2047
राहु	22:10:2048
शुक्र	11:09:2049
सूर्य	02:04:2051
चन्द्रमा	11:09:2051

बुध दशा

अन्तर्दशा	से
बुध	22:10:2052
शनि	25:06:2055
बृहस्पति	21:01:2057
राहु	18:01:2060
शुक्र	08:12:2061
सूर्य	30:03:2065
चन्द्रमा	09:03:2066
मंगल	19:07:2068

शनि दशा

अन्तर्दशा	से
शनि	22:10:2069
बृहस्पति	25:09:2070
राहु	28:06:2072
शुक्र	08:08:2073
सूर्य	19:07:2075
चन्द्रमा	07:02:2076
मंगल	29:06:2077
बुध	26:03:2078

अष्टोत्तरी दशा (प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:35:42) : गुरु : 9 व. 6 मा. 19 दि.

बृहस्पति दशा (02:04:1981 – 22:10:1990)

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	....
राहु	....
शुक्र	....
सूर्य	....
चन्द्रमा	....
मंगल	....
बुध	....
शनि	....

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	....
शुक्र	....
सूर्य	....
चन्द्रमा	....
मंगल	....
बुध	....
शनि	....
बृहस्पति	....

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	....
सूर्य	....
चन्द्रमा	....
मंगल	....
बुध	....
शनि	....
बृहस्पति	....
राहु	....

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	....
चन्द्रमा	....
मंगल	....
बुध	02:04:1981
शनि	28:05:1981
बृहस्पति	03:07:1981
राहु	08:09:1981
शुक्र	21:10:1981

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	04:01:1982
मंगल	18:05:1982
बुध	28:07:1982
शनि	27:12:1982
बृहस्पति	26:03:1983
राहु	11:09:1983
शुक्र	27:12:1983
सूर्य	02:07:1984

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	25:08:1984
बुध	02:10:1984
शनि	22:12:1984
बृहस्पति	08:02:1985
राहु	09:05:1985
शुक्र	05:07:1985
सूर्य	13:10:1985
चन्द्रमा	11:11:1985

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	21:01:1986
शनि	12:07:1986
बृहस्पति	21:10:1986
राहु	01:05:1987
शुक्र	30:08:1987
सूर्य	30:03:1988
चन्द्रमा	30:05:1988
मंगल	29:10:1988

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	18:01:1989
बृहस्पति	18:03:1989
राहु	09:07:1989
शुक्र	18:09:1989
सूर्य	21:01:1990
चन्द्रमा	26:02:1990
मंगल	26:05:1990
बुध	13:07:1990

अष्टोत्तरी दशा (प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:35:42) : गुरु : 9 व. 6 मा. 19 दि.

राहु दशा (22:10:1990 – 22:10:2002)

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	22:10:1990
शुक्र	15:12:1990
सूर्य	19:03:1991
चन्द्रमा	15:04:1991
मंगल	22:06:1991
बुध	28:07:1991
शनि	13:10:1991
बृहस्पति	27:11:1991

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	21:02:1992
सूर्य	05:08:1992
चन्द्रमा	21:09:1992
मंगल	18:01:1993
बुध	22:03:1993
शनि	03:08:1993
बृहस्पति	21:10:1993
राहु	19:03:1994

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	22:06:1994
चन्द्रमा	06:07:1994
मंगल	08:08:1994
बुध	26:08:1994
शनि	04:10:1994
बृहस्पति	26:10:1994
राहु	08:12:1994
शुक्र	04:01:1995

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	20:02:1995
मंगल	16:05:1995
बुध	30:06:1995
शनि	04:10:1995
बृहस्पति	29:11:1995
राहु	15:03:1996
शुक्र	22:05:1996
सूर्य	18:09:1996

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	22:10:1996
बुध	15:11:1996
शनि	05:01:1997
बृहस्पति	04:02:1997
राहु	02:04:1997
शुक्र	08:05:1997
सूर्य	10:07:1997
चन्द्रमा	28:07:1997

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	11:09:1997
शनि	29:12:1997
बृहस्पति	03:03:1998
राहु	02:07:1998
शुक्र	16:09:1998
सूर्य	28:01:1999
चन्द्रमा	08:03:1999
मंगल	12:06:1999

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	02:08:1999
बृहस्पति	08:09:1999
राहु	19:11:1999
शुक्र	03:01:2000
सूर्य	22:03:2000
चन्द्रमा	13:04:2000
मंगल	09:06:2000
बुध	09:07:2000

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	11:09:2000
राहु	25:01:2001
शुक्र	20:04:2001
सूर्य	17:09:2001
चन्द्रमा	30:10:2001
मंगल	14:02:2002
बुध	12:04:2002
शनि	11:08:2002

अष्टोत्तरी दशा (प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:35:42) : गुरु : 9 व. 6 मा. 19 दि.

शुक्र दशा (22:10:2002 – 22:10:2023)

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	22:10:2002
सूर्य	08:08:2003
चन्द्रमा	29:10:2003
मंगल	24:05:2004
बुध	11:09:2004
शनि	04:05:2005
बृहस्पति	19:09:2005
राहु	09:06:2006

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	21:11:2006
चन्द्रमा	15:12:2006
मंगल	12:02:2007
बुध	15:03:2007
शनि	22:05:2007
बृहस्पति	30:06:2007
राहु	13:09:2007
शुक्र	30:10:2007

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	21:01:2008
मंगल	17:06:2008
बुध	04:09:2008
शनि	19:02:2009
बृहस्पति	29:05:2009
राहु	02:12:2009
शुक्र	30:03:2010
सूर्य	23:10:2010

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	22:12:2010
बुध	02:02:2011
शनि	02:05:2011
बृहस्पति	24:06:2011
राहु	01:10:2011
शुक्र	04:12:2011
सूर्य	23:03:2012
चन्द्रमा	24:04:2012

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	12:07:2012
शनि	18:01:2013
बृहस्पति	10:05:2013
राहु	08:12:2013
शुक्र	21:04:2014
सूर्य	12:12:2014
चन्द्रमा	17:02:2015
मंगल	03:08:2015

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	01:11:2015
बृहस्पति	06:01:2016
राहु	10:05:2016
शुक्र	28:07:2016
सूर्य	13:12:2016
चन्द्रमा	22:01:2017
मंगल	30:04:2017
बुध	22:06:2017

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	12:10:2017
राहु	06:06:2018
शुक्र	03:11:2018
सूर्य	23:07:2019
चन्द्रमा	06:10:2019
मंगल	10:04:2020
बुध	19:07:2020
शनि	17:02:2021

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	22:06:2021
शुक्र	25:09:2021
सूर्य	09:03:2022
चन्द्रमा	26:04:2022
मंगल	22:08:2022
बुध	24:10:2022
शनि	07:03:2023
बृहस्पति	25:05:2023

अष्टोत्तरी दशा (प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:35:42) : गुरु : 9 व. 6 मा. 19 दि.

सूर्य दशा (22:10:2023 – 22:10:2029)

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	22:10:2023
चन्द्रमा	28:10:2023
मंगल	14:11:2023
बुध	23:11:2023
शनि	13:12:2023
बृहस्पति	24:12:2023
राहु	14:01:2024
शुक्र	28:01:2024

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	21:02:2024
मंगल	03:04:2024
बुध	25:04:2024
शनि	12:06:2024
बृहस्पति	11:07:2024
राहु	02:09:2024
शुक्र	06:10:2024
सूर्य	05:12:2024

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	22:12:2024
बुध	03:01:2025
शनि	28:01:2025
बृहस्पति	12:02:2025
राहु	13:03:2025
शुक्र	31:03:2025
सूर्य	01:05:2025
चन्द्रमा	10:05:2025

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	02:06:2025
शनि	26:07:2025
बृहस्पति	27:08:2025
राहु	27:10:2025
शुक्र	04:12:2025
सूर्य	09:02:2026
चन्द्रमा	28:02:2026
मंगल	17:04:2026

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	13:05:2026
बृहस्पति	31:05:2026
राहु	06:07:2026
शुक्र	28:07:2026
सूर्य	06:09:2026
चन्द्रमा	17:09:2026
मंगल	15:10:2026
बुध	30:10:2026

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	01:12:2026
राहु	07:02:2027
शुक्र	22:03:2027
सूर्य	05:06:2027
चन्द्रमा	26:06:2027
मंगल	19:08:2027
बुध	16:09:2027
शनि	16:11:2027

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	22:12:2027
शुक्र	18:01:2028
सूर्य	05:03:2028
चन्द्रमा	19:03:2028
मंगल	22:04:2028
बुध	10:05:2028
शनि	17:06:2028
बृहस्पति	10:07:2028

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	22:08:2028
सूर्य	13:11:2028
चन्द्रमा	06:12:2028
मंगल	03:02:2029
बुध	07:03:2029
शनि	13:05:2029
बृहस्पति	21:06:2029
राहु	04:09:2029

अष्टोत्तरी दशा (प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:35:42) : गुरु : 9 व. 6 मा. 19 दि.

चन्द्रमा दशा (22:10:2029 – 22:10:2044)

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	22:10:2029
मंगल	04:02:2030
बुध	02:04:2030
शनि	30:07:2030
बृहस्पति	09:10:2030
राहु	20:02:2031
शुक्र	15:05:2031
सूर्य	10:10:2031

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	21:11:2031
बुध	21:12:2031
शनि	23:02:2032
बृहस्पति	01:04:2032
राहु	11:06:2032
शुक्र	27:07:2032
सूर्य	14:10:2032
चन्द्रमा	05:11:2032

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	01:01:2033
शनि	16:05:2033
बृहस्पति	04:08:2033
राहु	03:01:2034
शुक्र	09:04:2034
सूर्य	23:09:2034
चन्द्रमा	10:11:2034
मंगल	10:03:2035

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	13:05:2035
बृहस्पति	28:06:2035
राहु	26:09:2035
शुक्र	21:11:2035
सूर्य	28:02:2036
चन्द्रमा	27:03:2036
मंगल	06:06:2036
बुध	13:07:2036

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	01:10:2036
राहु	20:03:2037
शुक्र	05:07:2037
सूर्य	08:01:2038
चन्द्रमा	03:03:2038
मंगल	14:07:2038
बुध	24:09:2038
शनि	22:02:2039

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	23:05:2039
शुक्र	29:07:2039
सूर्य	25:11:2039
चन्द्रमा	28:12:2039
मंगल	22:03:2040
बुध	06:05:2040
शनि	10:08:2040
बृहस्पति	06:10:2040

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	21:01:2041
सूर्य	16:08:2041
चन्द्रमा	14:10:2041
मंगल	11:03:2042
बुध	29:05:2042
शनि	12:11:2042
बृहस्पति	19:02:2043
राहु	25:08:2043

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	22:12:2043
चन्द्रमा	07:01:2044
मंगल	19:02:2044
बुध	12:03:2044
शनि	29:04:2044
बृहस्पति	28:05:2044
राहु	20:07:2044
शुक्र	23:08:2044

अष्टोत्तरी दशा (प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:35:42) : गुरु : 9 व. 6 मा. 19 दि.

मंगल दशा (22:10:2044 – 22:10:2052)

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	22:10:2044
बुध	07:11:2044
शनि	11:12:2044
बृहस्पति	31:12:2044
राहु	07:02:2045
शुक्र	03:03:2045
सूर्य	14:04:2045
चन्द्रमा	26:04:2045

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	26:05:2045
शनि	06:08:2045
बृहस्पति	18:09:2045
राहु	08:12:2045
शुक्र	28:01:2046
सूर्य	27:04:2046
चन्द्रमा	23:05:2046
मंगल	26:07:2046

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	29:08:2046
बृहस्पति	23:09:2046
राहु	09:11:2046
शुक्र	09:12:2046
सूर्य	31:01:2047
चन्द्रमा	15:02:2047
मंगल	24:03:2047
बुध	13:04:2047

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	26:05:2047
राहु	24:08:2047
शुक्र	20:10:2047
सूर्य	28:01:2048
चन्द्रमा	26:02:2048
मंगल	08:05:2048
बुध	15:06:2048
शनि	04:09:2048

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	22:10:2048
शुक्र	27:11:2048
सूर्य	29:01:2049
चन्द्रमा	16:02:2049
मंगल	02:04:2049
बुध	26:04:2049
शनि	16:06:2049
बृहस्पति	16:07:2049

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	11:09:2049
सूर्य	31:12:2049
चन्द्रमा	31:01:2050
मंगल	20:04:2050
बुध	01:06:2050
शनि	29:08:2050
बृहस्पति	21:10:2050
राहु	29:01:2051

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	02:04:2051
चन्द्रमा	11:04:2051
मंगल	03:05:2051
बुध	16:05:2051
शनि	10:06:2051
बृहस्पति	25:06:2051
राहु	24:07:2051
शुक्र	11:08:2051

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	11:09:2051
मंगल	06:11:2051
बुध	07:12:2051
शनि	08:02:2052
बृहस्पति	17:03:2052
राहु	28:05:2052
शुक्र	12:07:2052
सूर्य	29:09:2052

अष्टोत्तरी दशा (प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:35:42) : गुरु : 9 व. 6 मा. 19 दि.

बुध दशा (22:10:2052 – 22:10:2069)

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	22:10:2052
शनि	24:03:2053
बृहस्पति	23:06:2053
राहु	12:12:2053
शुक्र	30:03:2054
सूर्य	06:10:2054
चन्द्रमा	29:11:2054
मंगल	14:04:2055

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	25:06:2055
बृहस्पति	18:08:2055
राहु	27:11:2055
शुक्र	30:01:2056
सूर्य	21:05:2056
चन्द्रमा	22:06:2056
मंगल	10:09:2056
बुध	22:10:2056

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	21:01:2057
राहु	01:08:2057
शुक्र	30:11:2057
सूर्य	01:07:2058
चन्द्रमा	30:08:2058
मंगल	29:01:2059
बुध	20:04:2059
शनि	09:10:2059

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	18:01:2060
शुक्र	03:04:2060
सूर्य	16:08:2060
चन्द्रमा	23:09:2060
मंगल	28:12:2060
बुध	17:02:2061
शनि	06:06:2061
बृहस्पति	09:08:2061

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	08:12:2061
सूर्य	31:07:2062
चन्द्रमा	06:10:2062
मंगल	22:03:2063
बुध	20:06:2063
शनि	27:12:2063
बृहस्पति	17:04:2064
राहु	15:11:2064

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	30:03:2065
चन्द्रमा	18:04:2065
मंगल	05:06:2065
बुध	30:06:2065
शनि	23:08:2065
बृहस्पति	24:09:2065
राहु	24:11:2065
शुक्र	01:01:2066

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	09:03:2066
मंगल	07:07:2066
बुध	09:09:2066
शनि	22:01:2067
बृहस्पति	12:04:2067
राहु	11:09:2067
शुक्र	16:12:2067
सूर्य	01:06:2068

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	19:07:2068
बुध	22:08:2068
शनि	02:11:2068
बृहस्पति	15:12:2068
राहु	06:03:2069
शुक्र	26:04:2069
सूर्य	24:07:2069
चन्द्रमा	19:08:2069

अष्टोत्तरी दशा (प्रचलित विभाजन विधि)

जन्म के समय अष्टोत्तरी योग्य दशा (एन सी लहरी अयनाश : 023:35:42) : गुरु : 9 व. 6 मा. 19 दि.

शनि दशा (22:10:2069 – 22:10:2079)

शनि अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शनि	22:10:2069
बृहस्पति	22:11:2069
राहु	20:01:2070
शुक्र	27:02:2070
सूर्य	04:05:2070
चन्द्रमा	23:05:2070
मंगल	08:07:2070
बुध	02:08:2070

बृहस्पति अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बृहस्पति	25:09:2070
राहु	16:01:2071
शुक्र	28:03:2071
सूर्य	31:07:2071
चन्द्रमा	05:09:2071
मंगल	03:12:2071
बुध	19:01:2072
शनि	30:04:2072

राहु अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
राहु	28:06:2072
शुक्र	12:08:2072
सूर्य	31:10:2072
चन्द्रमा	22:11:2072
मंगल	18:01:2073
बुध	17:02:2073
शनि	21:04:2073
बृहस्पति	29:05:2073

शुक्र अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
शुक्र	08:08:2073
सूर्य	24:12:2073
चन्द्रमा	02:02:2074
मंगल	11:05:2074
बुध	03:07:2074
शनि	23:10:2074
बृहस्पति	27:12:2074
राहु	01:05:2075

सूर्य अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
सूर्य	19:07:2075
चन्द्रमा	30:07:2075
मंगल	28:08:2075
बुध	12:09:2075
शनि	13:10:2075
बृहस्पति	01:11:2075
राहु	07:12:2075
शुक्र	29:12:2075

चन्द्रमा अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
चन्द्रमा	07:02:2076
मंगल	18:04:2076
बुध	25:05:2076
शनि	13:08:2076
बृहस्पति	29:09:2076
राहु	28:12:2076
शुक्र	22:02:2077
सूर्य	01:06:2077

मंगल अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
मंगल	29:06:2077
बुध	19:07:2077
शनि	30:08:2077
बृहस्पति	24:09:2077
राहु	11:11:2077
शुक्र	11:12:2077
सूर्य	02:02:2078
चन्द्रमा	17:02:2078

बुध अन्तर्दशा

पत्यंतरदशा	से
बुध	26:03:2078
शनि	25:06:2078
बृहस्पति	17:08:2078
राहु	26:11:2078
शुक्र	29:01:2079
सूर्य	20:05:2079
चन्द्रमा	21:06:2079
मंगल	09:09:2079

जैमिनी चर दशा (नीलकान्त सिद्धान्त)

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से
1	मिथुन	8.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:1981
2	वृष	2.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:1989
3	मेष	11.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:1991
4	मीन	6.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:2002
5	कुम्भ	7.0 y.0.0 m.0 d.	01:04:2008
6	मकर	4.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:2015
7	धनु	9.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:2019
8	वृश्चिक	8.0 y.0.0 m.0 d.	01:04:2028
9	तुला	5.0 y.0.0 m.0 d.	01:04:2036
10	कन्या	7.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:2041
11	सिहं	7.0 y.0.0 m.0 d.	01:04:2048
12	कर्क	5.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:2055

जैमिनी चर दशा की भुक्ति

मिथुन दशा

भुक्ति	से
वृष	02:04:1981
मेष	01:12:1981
मीन	02:08:1982
कुम्भ	02:04:1983
मकर	01:12:1983
धनु	01:08:1984
वृश्चिक	02:04:1985
तुला	01:12:1985
कन्या	02:08:1986
सिहं	02:04:1987
कर्क	01:12:1987
मिथुन	01:08:1988

वृष दशा

भुक्ति	से
मेष	02:04:1989
मीन	02:06:1989
कुम्भ	02:08:1989
मकर	01:10:1989
धनु	01:12:1989
वृश्चिक	31:01:1990
तुला	02:04:1990
कन्या	02:06:1990
सिहं	02:08:1990
कर्क	01:10:1990
मिथुन	01:12:1990
वृष	31:01:1991

मेष दशा

भुक्ति	से
वृष	02:04:1991
मिथुन	02:03:1992
कर्क	31:01:1993
सिहं	01:01:1994
कन्या	01:12:1994
तुला	01:11:1995
वृश्चिक	01:10:1996
धनु	01:09:1997
मकर	02:08:1998
कुम्भ	02:07:1999
मीन	01:06:2000
मेष	02:05:2001

मीन दशा

भुक्ति	से
मेष	02:04:2002
वृष	01:10:2002
मिथुन	02:04:2003
कर्क	01:10:2003
सिहं	01:04:2004
कन्या	01:10:2004
तुला	02:04:2005
वृश्चिक	01:10:2005
धनु	02:04:2006
मकर	01:10:2006
कुम्भ	02:04:2007
मीन	01:10:2007

कुम्भ दशा

भुक्ति	से
मीन	01:04:2008
मेष	01:11:2008
वृष	02:06:2009
मिथुन	01:01:2010
कर्क	02:08:2010
सिहं	03:03:2011
कन्या	01:10:2011
तुला	02:05:2012
वृश्चिक	01:12:2012
धनु	02:07:2013
मकर	31:01:2014
कुम्भ	01:09:2014

मकर दशा

भुक्ति	से
धनु	02:04:2015
वृश्चिक	02:08:2015
तुला	01:12:2015
कन्या	01:04:2016
सिहं	01:08:2016
कर्क	01:12:2016
मिथुन	02:04:2017
वृष	02:08:2017
मेष	01:12:2017
मीन	02:04:2018
कुम्भ	02:08:2018
मकर	01:12:2018

धनु दशा

भुक्ति	से
वृश्चिक	02:04:2019
तुला	01:01:2020
कन्या	01:10:2020
सिहं	02:07:2021
कर्क	02:04:2022
मिथुन	01:01:2023
वृष	01:10:2023
मेष	02:07:2024
मीन	02:04:2025
कुम्भ	01:01:2026
मकर	01:10:2026
धनु	02:07:2027

वृश्चिक दशा

भुक्ति	से
तुला	01:04:2028
कन्या	01:12:2028
सिहं	02:08:2029
कर्क	02:04:2030
मिथुन	01:12:2030
वृष	02:08:2031
मेष	01:04:2032
मीन	01:12:2032
कुम्भ	02:08:2033
मकर	02:04:2034
धनु	01:12:2034
वृश्चिक	02:08:2035

तुला दशा

भुक्ति	से
वृश्चिक	01:04:2036
धनु	01:09:2036
मकर	31:01:2037
कुम्भ	02:07:2037
मीन	01:12:2037
मेष	02:05:2038
वृष	01:10:2038
मिथुन	03:03:2039
कर्क	02:08:2039
सिहं	01:01:2040
कन्या	01:06:2040
तुला	01:11:2040

कन्या दशा

भुक्ति	से
तुला	02:04:2041
वृश्चिक	01:11:2041
धनु	02:06:2042
मकर	01:01:2043
कुम्भ	02:08:2043
मीन	02:03:2044
मेष	01:10:2044
वृष	02:05:2045
मिथुन	01:12:2045
कर्क	02:07:2046
सिहं	31:01:2047
कन्या	01:09:2047

सिहं दशा

भुक्ति	से
कन्या	01:04:2048
तुला	01:11:2048
वृश्चिक	02:06:2049
धनु	01:01:2050
मकर	02:08:2050
कुम्भ	03:03:2051
मीन	01:10:2051
मेष	02:05:2052
वृष	01:12:2052
मिथुन	02:07:2053
कर्क	31:01:2054
सिहं	01:09:2054

कर्क दशा

भुक्ति	से
मिथुन	02:04:2055
वृष	01:09:2055
मेष	31:01:2056
मीन	02:07:2056
कुम्भ	01:12:2056
मकर	02:05:2057
धनु	01:10:2057
वृश्चिक	03:03:2058
तुला	02:08:2058
कन्या	01:01:2059
सिहं	02:06:2059
कर्क	01:11:2059

जैमिनी चर दशा (नीलकान्त सिद्धान्त)

मकर दशा (02:04:2015 से 02:04:2019)

धनु दशा

भुक्ति	से
वृश्चिक	02:04:2015
तुला	12:04:2015
कन्या	22:04:2015
सिहं	02:05:2015
कर्क	13:05:2015
मिथुन	23:05:2015
वृष	02:06:2015
मेष	12:06:2015
मीन	22:06:2015
कुम्भ	02:07:2015
मकर	12:07:2015
धनु	23:07:2015

वृश्चिक दशा

भुक्ति	से
तुला	02:08:2015
कन्या	12:08:2015
सिहं	22:08:2015
कर्क	01:09:2015
मिथुन	11:09:2015
वृष	21:09:2015
मेष	01:10:2015
मीन	12:10:2015
कुम्भ	22:10:2015
मकर	01:11:2015
धनु	11:11:2015
वृश्चिक	21:11:2015

तुला दशा

भुक्ति	से
वृश्चिक	01:12:2015
धनु	11:12:2015
मकर	22:12:2015
कुम्भ	01:01:2016
मीन	11:01:2016
मेष	21:01:2016
वृष	31:01:2016
मिथुन	10:02:2016
कर्क	21:02:2016
सिहं	02:03:2016
कन्या	12:03:2016
तुला	22:03:2016

कन्या दशा

भुक्ति	से
तुला	01:04:2016
वृश्चिक	11:04:2016
धनु	22:04:2016
मकर	02:05:2016
कुम्भ	12:05:2016
मीन	22:05:2016
मेष	01:06:2016
वृष	11:06:2016
मिथुन	22:06:2016
कर्क	02:07:2016
सिहं	12:07:2016
कन्या	22:07:2016

सिहं दशा

भुक्ति	से
कन्या	01:08:2016
तुला	11:08:2016
वृश्चिक	22:08:2016
धनु	01:09:2016
मकर	11:09:2016
कुम्भ	21:09:2016
मीन	01:10:2016
मेष	11:10:2016
वृष	22:10:2016
मिथुन	01:11:2016
कर्क	11:11:2016
सिहं	21:11:2016

कर्क दशा

भुक्ति	से
मिथुन	01:12:2016
वृष	11:12:2016
मेष	22:12:2016
मीन	01:01:2017
कुम्भ	11:01:2017
मकर	21:01:2017
धनु	31:01:2017
वृश्चिक	10:02:2017
तुला	20:02:2017
कन्या	03:03:2017
सिहं	13:03:2017
कर्क	23:03:2017

मिथुन दशा

भुक्ति	से
वृष	02:04:2017
मेष	12:04:2017
मीन	22:04:2017
कुम्भ	02:05:2017
मकर	13:05:2017
धनु	23:05:2017
वृश्चिक	02:06:2017
तुला	12:06:2017
कन्या	22:06:2017
सिहं	02:07:2017
कर्क	12:07:2017
मिथुन	23:07:2017

वृष दशा

भुक्ति	से
मेष	02:08:2017
मीन	12:08:2017
कुम्भ	22:08:2017
मकर	01:09:2017
धनु	11:09:2017
वृश्चिक	21:09:2017
तुला	01:10:2017
कन्या	12:10:2017
सिहं	22:10:2017
कर्क	01:11:2017
मिथुन	11:11:2017
वृष	21:11:2017

मेष दशा

भुक्ति	से
वृष	01:12:2017
मिथुन	11:12:2017
कर्क	22:12:2017
सिहं	01:01:2018
कन्या	11:01:2018
तुला	21:01:2018
वृश्चिक	31:01:2018
धनु	10:02:2018
मकर	20:02:2018
कुम्भ	03:03:2018
मीन	13:03:2018
मेष	23:03:2018

मीन दशा

भुक्ति	से
मेष	02:04:2018
वृष	12:04:2018
मिथुन	22:04:2018
कर्क	02:05:2018
सिहं	13:05:2018
कन्या	23:05:2018
तुला	02:06:2018
वृश्चिक	12:06:2018
धनु	22:06:2018
मकर	02:07:2018
कुम्भ	12:07:2018
मीन	23:07:2018

कुम्भ दशा

भुक्ति	से
मीन	02:08:2018
मेष	12:08:2018
वृष	22:08:2018
मिथुन	01:09:2018
कर्क	11:09:2018
सिहं	21:09:2018
कन्या	01:10:2018
तुला	12:10:2018
वृश्चिक	22:10:2018
धनु	01:11:2018
मकर	11:11:2018
कुम्भ	21:11:2018

मकर दशा

भुक्ति	से
धनु	01:12:2018
वृश्चिक	11:12:2018
तुला	22:12:2018
कन्या	01:01:2019
सिहं	11:01:2019
कर्क	21:01:2019
मिथुन	31:01:2019
वृष	10:02:2019
मेष	20:02:2019
मीन	03:03:2019
कुम्भ	13:03:2019
मकर	23:03:2019

जैमिनी चर दशा (नीलकान्त सिद्धान्त)

क्र0 स0	ग्रह दशा	अवधि	से
1	मिथुन	4.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:1981
2	तुला	5.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:1985
3	कुम्भ	6.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:1990
4	कर्क	5.0 y.0.0 m.0 d.	01:04:1996
5	वृश्चिक	4.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:2001
6	मीन	10.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:2005
7	सिहं	7.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:2015
8	धनु	9.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:2022
9	मेष	11.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:2031
10	कन्या	6.0 y.0.0 m.0 d.	02:04:2042
11	मकर	8.0 y.0.0 m.0 d.	01:04:2048
12	वृष	10.0 y.0.0 m.0 d.	01:04:2056

जैमिनी चर दशा की भुक्ति

मिथुन दशा

भुक्ति	से
कुम्भ	02:04:1981
मीन	02:04:1982
मेष	02:04:1983
वृष	01:04:1984
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--

तुला दशा

भुक्ति	से
मीन	02:04:1985
कुम्भ	02:04:1986
मकर	02:04:1987
धनु	01:04:1988
वृश्चिक	02:04:1989
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--

कुम्भ दशा

भुक्ति	से
कन्या	02:04:1990
सिहं	02:04:1991
कर्क	01:04:1992
मिथुन	02:04:1993
वृष	02:04:1994
मेष	02:04:1995
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--

कर्क दशा

भुक्ति	से
कुम्भ	01:04:1996
मीन	02:04:1997
मेष	02:04:1998
वृष	02:04:1999
मिथुन	01:04:2000
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--

वृश्चिक दशा

भुक्ति	से
मीन	02:04:2001
कुम्भ	02:04:2002
मकर	02:04:2003
धनु	01:04:2004
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--

मीन दशा

भुक्ति	से
कन्या	02:04:2005
सिहं	02:04:2006
कर्क	02:04:2007
मिथुन	01:04:2008
वृष	02:04:2009
मेष	02:04:2010
मीन	02:04:2011
कुम्भ	01:04:2012
मकर	02:04:2013
धनु	02:04:2014
..	--
..	--

सिहं दशा

भुक्ति	से
मीन	02:04:2015
कुम्भ	01:04:2016
मकर	02:04:2017
धनु	02:04:2018
वृश्चिक	02:04:2019
तुला	01:04:2020
कन्या	02:04:2021
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--

धनु दशा

भुक्ति	से
कन्या	02:04:2022
सिहं	02:04:2023
कर्क	01:04:2024
मिथुन	02:04:2025
वृष	02:04:2026
मेष	02:04:2027
मीन	01:04:2028
कुम्भ	02:04:2029
मकर	02:04:2030
..	--
..	--
..	--

मेष दशा

भुक्ति	से
मीन	02:04:2031
कुम्भ	01:04:2032
मकर	02:04:2033
धनु	02:04:2034
वृश्चिक	02:04:2035
तुला	01:04:2036
कन्या	02:04:2037
सिहं	02:04:2038
कर्क	02:04:2039
मिथुन	01:04:2040
वृष	02:04:2041
..	--

कन्या दशा

भुक्ति	से
कुम्भ	02:04:2042
मीन	02:04:2043
मेष	01:04:2044
वृष	02:04:2045
मिथुन	02:04:2046
कर्क	02:04:2047
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--
..	--

मकर दशा

भुक्ति	से
कन्या	01:04:2048
सिहं	02:04:2049
कर्क	02:04:2050
मिथुन	02:04:2051
वृष	01:04:2052
मेष	02:04:2053
मीन	02:04:2054
कुम्भ	02:04:2055
..	--
..	--
..	--
..	--

वृष दशा

भुक्ति	से
मीन	01:04:2056
कुम्भ	02:04:2057
मकर	02:04:2058
धनु	02:04:2059
वृश्चिक	01:04:2060
तुला	02:04:2061
कन्या	02:04:2062
सिहं	02:04:2063
कर्क	01:04:2064
मिथुन	02:04:2065
..	--
..	--

जैमिनी चर दशा (नीलकान्त सिद्धान्त)

सिहं दशा (02:04:2015 से 02:04:2022)

मीन दशा

भुक्ति	से
कन्या	02:04:2015
सिहं	02:05:2015
कर्क	02:06:2015
मिथुन	02:07:2015
वृष	02:08:2015
मेष	01:09:2015
मीन	01:10:2015
कुम्भ	01:11:2015
मकर	01:12:2015
धनु	01:01:2016
वृश्चिक	31:01:2016
तुला	02:03:2016

कुम्भ दशा

भुक्ति	से
कन्या	01:04:2016
सिहं	02:05:2016
कर्क	01:06:2016
मिथुन	02:07:2016
वृष	01:08:2016
मेष	01:09:2016
मीन	01:10:2016
कुम्भ	01:11:2016
मकर	01:12:2016
धनु	01:01:2017
वृश्चिक	31:01:2017
तुला	03:03:2017

मकर दशा

भुक्ति	से
कन्या	02:04:2017
सिहं	02:05:2017
कर्क	02:06:2017
मिथुन	02:07:2017
वृष	02:08:2017
मेष	01:09:2017
मीन	01:10:2017
कुम्भ	01:11:2017
मकर	01:12:2017
धनु	01:01:2018
वृश्चिक	31:01:2018
तुला	03:03:2018

धनु दशा

भुक्ति	से
कन्या	02:04:2018
सिहं	02:05:2018
कर्क	02:06:2018
मिथुन	02:07:2018
वृष	02:08:2018
मेष	01:09:2018
मीन	01:10:2018
कुम्भ	01:11:2018
मकर	01:12:2018
धनु	01:01:2019
वृश्चिक	31:01:2019
तुला	03:03:2019

वृश्चिक दशा

भुक्ति	से
मीन	02:04:2019
कुम्भ	02:05:2019
मकर	02:06:2019
धनु	02:07:2019
वृश्चिक	02:08:2019
तुला	01:09:2019
कन्या	01:10:2019
सिहं	01:11:2019
कर्क	01:12:2019
मिथुन	01:01:2020
वृष	31:01:2020
मेष	02:03:2020

तुला दशा

भुक्ति	से
मीन	01:04:2020
कुम्भ	02:05:2020
मकर	01:06:2020
धनु	02:07:2020
वृश्चिक	01:08:2020
तुला	01:09:2020
कन्या	01:10:2020
सिहं	01:11:2020
कर्क	01:12:2020
मिथुन	01:01:2021
वृष	31:01:2021
मेष	03:03:2021

कन्या दशा

भुक्ति	से
कुम्भ	02:04:2021
मीन	02:05:2021
मेष	02:06:2021
वृष	02:07:2021
मिथुन	02:08:2021
कर्क	01:09:2021
सिहं	01:10:2021
कन्या	01:11:2021
तुला	01:12:2021
वृश्चिक	01:01:2022
धनु	31:01:2022
मकर	03:03:2022

दशा

भुक्ति	से
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---

दशा

भुक्ति	से
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---

दशा

भुक्ति	से
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---

दशा

भुक्ति	से
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---

दशा

भुक्ति	से
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---
...	---

जातक से संबंधित सामान्य भविष्यफल

सामान्य जानकारी :–

आपकी लग्न राशि मिथुन है, जो दोहरेपन का प्रतीक है। इस राशि का स्वामी बुध है और तत्व वायु है। यह एक फुर्तीली, लचीली तथा लचीली राशि है। यह दयालु दोहरी, नीरस, तथा हिंसात्मक राशि है। यह ध्वनि की भी राशि है।

इस लग्न में जन्म लेने के कारण आप दयालु, बुद्धिमान और वाक्पटु होंगे तथा कलात्मक कार्यों की तरफ आपका ध्यान होगा। आप सक्षम तथा साधनयुक्त होंगे। आप परिश्रम करने से कभी नहीं घबरायेंगे और धनी होंगे। बहुमुखी प्रतिभा, दोहरी छवि तथा उत्तेजना आपकी कुछ खास विशेषताऐं होंगी। आप मानवीय हृदय वाले, दूसरों के बारे में सोचने वाले, क्षमाशील तथा न्यायप्रिय होंगे। विनम्रता और भाषणकला में दक्षता भी आपके गुण होंगे। आपमें ज्ञान और सूचनाओं की जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा होगी और नये तकनीकी विकास में आपकी रूचि होगी। आप खोजी प्रवृति वाले होंगे और चीजों को उनकी गहराई में जाकर पता करेंगे। शिक्षा एवं बौद्धिक कार्यों में आपकी संलग्नता आपको प्रगति के मार्ग पर ले जायेगी। आप खुले विचारों वाले और ताक्रिक होंगे तथा अपनी बुद्धिमानी एवं कूटनितियों से अपने विरोधियों को पराजित करेंगे।

आप सिद्धान्तवादी तथा अनुशासनप्रिय होंगे, लेकिन आप अपने निर्णय के बारे में संशयग्रस्त हो सकते हैं, जिससे अपने कार्यों को कार्यान्वित करने में आप दोहरी मानसिकता अपना सकते हैं। इन सभी गुणों के होने के बावजूद आप धैर्यवान नहीं हो सकते हैं और परिणाम की प्राप्ति में शीघ्रता कर सकते हैं। आपका दिमाग स्थिर नहीं होगा और समय–समय पर आपके इरादे बदलते रहेंगे। आज आप जिस चीज में विश्वास करेंगे, कल उसके विपरीत होकर उससे दूर जा सकते हैं। कभी–कभी आप दूसरों को भ्रमित कर सकते हैं, फिर भी सभी के लिए रूचिकर होंगे और सब आपसे स्नेह करेंगे।

मानसिक स्थिति :–

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा कुंभ राशि में स्थित है। यह एक सकारात्मक, स्थिर तथा द्रुतगामी राशि है, जो शनि द्वारा शासित है और यह पानी का बर्तन खाली करते हुए मनुष्य द्वारा दर्शायी जाती है। इस राशि में आने वाले जातक अपने गहन स्वभाव और चरित्र के लिए जाने जाते हैं। तेज दिमाग, गहन सोच, आत्मीकरण शक्ति और धैर्य आपकी प्रमुख विशेषतायें होंगी। चन्द्रमा पर दूसरे ग्रहों के प्रभाव के कारण कुछ भिन्नतायें होने की संभावना है। एक तरफ आपको उदास स्वभाव वाला, अकेला एवं अशान्त बना सकता है। आप दाशर्निक स्वभाव वाले होंगे और विज्ञान और प्रौद्योगिकी या किसी तकनीकी सम्बन्धित कार्यों में संलग्न रहेंगे।

आप थोड़ा–बहुत सुस्त होंगे, फिर भी निश्चित तौर पर आप कुछ ऐसा करेंगे, जो नया और प्रशंसनीय होगा,

जिसकी वजह से आपका नाम और यश चारो तरफ फैलेगा। आप शान्त और एकान्तप्रिय होंगे और पढ़े–लिखे तथा बुद्धिमान लोगों की संगति पसन्द करेंगे। वहीं दूसरी तरफ, आप खुशमिजाज स्वभाव वाले, उदार एवं कलात्मक कार्यों में रूचि रखने वाले हो सकते हैं। आपको किसी भी तरह के झगड़ों से दूर रहना चाहिए और किसी तरह का समारोह या सभा में उपस्थित होना अपनी नैतिक जिम्मेदारी और कर्तव्य समझेंगे। भौतिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कृषि तथा सजावट कला जैसे विषय आपको आकर्षित करेंगे। आप अपना भाग्य निर्माता खुद होंगे और किसी दूरस्थ प्रदेश या विदेश जा सकते हैं।

आप उन विषयों से अधिक जुड़े होंगे, जो असाधारण, वास्तविक तथा अद्‌भुत होंगे। रहस्यपूर्ण विषयों जैसे हस्तरेखा, अंक विज्ञान तथा सपनों की व्याख्या में रूचि के कारण आप आकर्षण का केन्द्र बनेंगे। कुछ लोग आपको विलक्षण व्यक्ति समझेंगे। परन्तु आमतौर पर लोग आपको दिमाग से धनी, आशावादी, दार्शनिक, परोपकारी तथा सहानुभूति रखने वाले मानेंगे। आप अपने को छोटे परिवार में जन्म लेने वाला या उससे सम्बन्धित समझने के बजाय, आप अपने जीवन को किसी उद्‌देश्य की पूर्ति हेतु समझेंगे और दूसरों के लिए उचित काम करके उनकी जरूरतें पूरी करना अपनी सफलता का मापदण्ड बनायेंगे। आप किसी विशिष्ट कार्य के लिए अपना जीवन समर्पित करेंगे, जिसके लिए आप किसी धमार्थ संस्था से जुड़ सकते हैं।

शारीरिक संरचना :–

आप लम्बे कद वाले, पतले सुन्दर डील–डौल, आकर्षक चेहरे, चौड़े माथे, लम्बी बांहों तथा अंगुलियों वाले हो सकते हैं, परन्तु आपकी आंखें आकर्षण का केन्द्र होंगी।

गुण :–

आप बुद्धिमान, सहानुभूति रखने वाले, बहुमुखी, अनुकूलनीय, सौम्य, हाजिरजवाब और पार्टियों की शान होंगे। अपनी विद्वता और तीव्र बुद्धि के कारण आप योजनाऐं बनाने में माहिर होंगे। आप लिखने, पढ़ने और अन्दरूनी क्रिया–कलापों के शौकीन होंगे। आप कल्पनाशील एवं कलात्मक होंगे और संगीत पसन्द करेंगे। आपको दोस्त प्यारे होंगे और आप उनकी हर संभव मदद को हमेशा तैयार रहेंगे।

अवगुण :–

कभी–कभी नई चीजों को जानने की जिज्ञासा और गैरजरूरी अध्ययन में आप अपने समय, संसाधनों और उर्जा को नष्ट कर सकते हैं, जिससे आपकी शक्ति का ह्रास हो सकता है। आप अधीर होकर असफल हो सकते हैं। मित्रों के चयन में आप गलती कर सकते हैं, जिससे आप घोखे और छल–कपट के शिकार हो सकते हैं। आप चालबाज भी हो सकते हैं।

विशेष लक्षण :–

1– असावधानी ही हानि को जन्म देती है, अतः आपको अपने हर कार्य में सावधानी बरतनी चाहिए। आप रसिक, हाजिर जवाब और मजाक पसन्द करने वाले होंगे।;
2– आप बुद्धिमान होने के साथ–साथ मौलिक, प्रवीण एवं बौद्धिक क्षमताओं से भरपूर होंगे।
3– आप काफी अनुकूल, बहुमुखी एवं हर परिस्थिति में सामंजस्य बैठाने वाले होंगे।
4– उपेक्षित महसूस होने पर आप उत्तेजित हो सकते हैं।
5– आपको काफी चीजों की जानकारी होगी, लेकिन आपका ज्ञान निरर्थक होगा।
6– आप जोशपूर्ण और जीवंत होंगे।

रोजगार :–

आपको अध्ययन और लेखन पसन्द होगा, अतः आप पत्रकारिता और प्रकाशन के क्षेत्र में उत्तम सफलता प्राप्त कर सकते हैं। मार्केटिंग, परिवहन या संचार क्षेत्र में रोजगार कर सकते हैं। आप अंतरिक्ष अनुसंधान, सूचना प्रौद्योगिकी, सूती कपड़े का व्यापार, पर्यटन या नौवाहन में सफलता प्राप्त कर सकते हैं। आप गणितज्ञ, वकील, लेखपाल, व्यापारी, प्राध्यापक या सलाहकार के रूप में बढ़िया कर सकते हैं।

शुभ एवं अशुभ ग्रह :–

1– असावधानी ही हानि को जन्म देती है, अतः आपको अपने हर कार्य में सावधानी बरतनी चाहिए। आप रसिक, हाजिर जवाब और मजाक पसन्द करने वाले होंगे।;
2– आप बुद्धिमान होने के साथ–साथ मौलिक, प्रवीण एवं बौद्धिक क्षमताओं से भरपूर होंगे।
3– आप काफी अनुकूल, बहुमुखी एवं हर परिस्थिति में सामंजस्य बैठाने वाले होंगे।
4– उपेक्षित महसूस होने पर आप उत्तेजित हो सकते हैं।
5– आपको काफी चीजों की जानकारी होगी, लेकिन आपका ज्ञान निरर्थक होगा।
6– आप जोशपूर्ण और जीवंत होंगे।
7– बुध पहले और चौथे भाव का स्वामी होकर काफी शुभ होगा।
8– शुक्र शुभ होगा, क्योंकि यह पांचवें एवं बारहवें भाव का स्वामी है।
9– चन्द्रमा तटस्थ है।
10– सूर्य तीसरे भाव का स्वामी, मंगल छठे एवं ग्यारहवे भाव का स्वामी एवं शनि आठवें भाव का स्वामी अशुभ होंगे।
11– बृहस्पति सातवें भाव का स्वामी होकर मारकेश होगा।

मिथुन लग्न वाले कुछ महत्वपूर्ण व्यक्ति :–

श्री पी चिदम्बरम – अर्थशास्त्री, प्रमोद महाजन – मंत्री, जयललिता – राजनीतिज्ञ, अल्बर्ट आइन्सटीन –

वैज्ञानिक, सर विलियम हैमिल्टन – ज्योतिषाचार्य, डॉ. जाकिर हुसैन – राष्ट्रपति, मोरारजी देसाई – प्रधानमंत्री ।

विभिन्न ज्योतिष कारकों का फल

जन्म कालिक ब्राहस्पत्य (संवत्सर) का फल :

आपका जन्म रौद्र संवत्सर में हुआ है।यदि आपकी कुण्डली में कुछ अनुकूल योग मौजूद नहीं हैं, और/या कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव भी उपस्थित नहीं हैं, तो आपको कुछ प्रतिकूल परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। आप भयानक या क्रूर स्वरूप, अनैतिक प्रवृति, कपटी प्रकृति और कठोर मिजाज के व्यक्ति हो सकते हैं। आप बहुत बुद्धिमान या सुशिक्षित नहीं हो सकते हैं और आपको बिना किसी उद्देश्य या औचित्य के कटु शब्दों का कठोर वाणी में प्रयोग करने की आदत हो सकती है। आपकी प्रकृति हठी, अधीर, स्वार्थी और गैर–समझौतावादी हो सकती है। आप कृषि कार्यों और/या मवेशियों के पालन से आजीविका अर्जित कर सकते हैं।

जन्म कालिक सौर अयन का फल :

आपका जन्म सूर्य के उत्तरायन (सौम्यायन) में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल हैं। आप स्वतंत्र विचारों वाले उदार प्रवृत्ति और उच्च नैतिकता वाले व्यक्ति होंगे। आप हमेशा सद्कृत्यों में संलग्न रहेंगे और आपका न्यायसंगत आचरण होगा। आप अपने गुणों जैसे सहिष्णुता, धैर्य और दृढ़ता के कारण जाने जाएंगे। आप निरन्तर बढ़ती सम्पन्नता के बीच लम्बी आयु का आनन्द लेंगे और आपका घरेलू जीवन शांतिपूर्ण और खुशहाल होगा। आप कठोर हृदय वाले हो सकते हैं– ऐसा लम्बे समय तक विभिन्न कारणों से पीड़ित होने का परिणाम हो सकता है।

जन्म कालिक ऋतु का फल :

आपका जन्म बसन्त ऋतु में हुआ है। यदि कुछ प्रतिकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल हैं। आप बहुत सुन्दर, आकर्षक, सौम्य स्वभाव और मनोहारी बर्ताव वाले व्यक्ति हो सकते हैं। आप ना केवल साहसी और वीर होंगे, बल्कि विवेकी, दूरदर्शी और सत्यनिष्ठ भी होंगे। आप गणित में निपुण होंगे, विभिन्न पवित्र प्राचीन शास्त्रों के ज्ञाता होंगे एवं संगीत या ललित कलाओं की किसी विधा में दक्षता प्राप्त कर सकते हैं। आप एक शुद्ध हृदय वाले व्यक्ति होंगे और फैशनपूर्ण आधुनिक परिधानों के शौकीन होंगे।

जन्म कालिक मास का फल :

आपका जन्म चैत्र मास (मार्च/अप्रैल) में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली मे कुछ प्रतिकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो संकेत अनुकूल हैं। आप उदार, सौम्य, स्नेही, सद्गुणी और विद्वान व्यक्ति होंगे। आप कई वांछित गुणों और असाधारण वरदानों या प्रतिभाओं से सम्पन्न होंगे। आपके सद्कृत्यों एवं परोपकारी कार्यों के कारण सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे। विभिन्न पवित्र ग्रन्थों का उत्कृष्ट अध्ययन करके आप बहुत उच्च स्तरीय जीवन के लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करेंगे। आप एक सलाहकार या परामर्शदाता के रूप में ख्याति प्राप्त करेंगे। यद्यपि कुछ विचार–विमर्श काफी विचित्र प्रकार के हो सकते हैं, फिर भी आप विभिन्न क्षेत्रों के लोगों

को भली–भांति साथ लेकर चलने में सक्षम होंगे।

जन्म कालिक पक्ष का फल :

आपका जन्म कृष्ण पक्ष में हुआ है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो ये संकेत अनुकूल नहीं हैं। आपकी शारीरिक संरचना कुछ–कुछ कमजोर हो सकती है और आप आसानी से रोगादि से ग्रसित हो सकती हैं। आप चंचल प्रकृति और अस्थिर स्वभाव वाली हो सकती हैं। आप पर शरारती और/या झगड़ालु होने की छाप लग सकती है। आप बहुत भावुक प्रकृति की हो सकती हैं, चीजों को उनके उचित परिपेक्ष्य में देखे बिना ही आप राई को पहाड़ बना सकती हैं।

जन्म कालिक वार का फल :

आपका जन्म बृहस्पतिवार को हुआ है। दिवसपति बृहस्पति की स्थिति आपकी कुण्डली में काफी महत्वपूर्ण है। इसका फल– भाव में इसकी स्थिति के अनुसार– और भी अधिक महत्वपूर्ण होगा। सामान्यतः अन्य सारे संकेत अनुकूल हैं। आप विद्वान व्यक्ति होंगे एवं आपका धार्मिक रूझान उत्कृष्ट होगा। आपके मन में बड़ों, शिक्षकों और धर्मपरायण लोगों के प्रति अत्यधिक सम्मान होगा। आपमें वांछित गुणों व सद्गुणों के विद्यमान होने के कारण, सामान्यतः लोग आपके साथ सम्मान पूर्ण व्यवहार करेंगे। अपनी बुद्धिमानी, निर्णय की शक्ति और प्रभावशाली व्यक्तित्व से आप एक सलाहकार या परामर्शदाता के रूप काफी विख्यात होंगे एवं प्रचूर धन संचित करेंगे।

दिन या रात के जन्म का फल :

आपका जन्म दिन के समय में हुआ है। ये संकेत अनुकूल हैं। आप सक्रिय, उर्जावान, बुद्धिमान और प्रतिभाशाली होंगे। आपको अपने पिता से सद्गुण विरासत में प्राप्त होंगे, सुन्दर प्रभावशाली आँखे होंगी और आशावादी दृष्टिकोण होगा। आप अपने सराहनीय कार्यों के लिए जाने जाएंगे। आपकी आय उत्तम होगी और उच्च स्तरीय जीवन वाले लोगों से आपकी मित्रता होगी। आपके सद्गुणों और गुणों के लिए, सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

जन्म कालिक सूर्य सिद्धान्त योग का फल :

सूर्य–सिद्धान्त के अनुसार आपका जन्म शुभ योग में हुआ है। इस योग को असाधारण रूप से शुभ योग माना जाता है। इस योग में जन्म होने के कारण, आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। जैसाकि नाम से प्रदर्शित होता है, कि आप सदैव लाभदायक परिस्थितियों में रहेंगे और निरन्तर बढ़ती समृद्धि वाले अत्यंत धनवान व्यक्ति होंगे। आप मृदुभाषी व्यक्ति होने के साथ–साथ आनन्दित और हंसमुख होंगे। आप अपने प्रशंसनीय कार्यों और न्यायसंगत परामर्श के लिए सराहना प्राप्त करेंगे।

जन्म कालिक तिथि का फल :

आपका जन्म त्रयोदशी तिथि को हुआ है। आप बहुत बुद्धिमान और चतुर होंगे, तथा साहसी व वीर भी होंगे। यद्यपि आप सात्विक प्रकृति के व्यक्ति होंगे, फिर भी यदि किसी अच्छे उद्देश्य के लिए युद्ध भी करना पड़ेगा तो आप उससे दूर नहीं भागेंगे। आप धैर्यवान होंगे और आपमें सत्यनिष्ठा व न्याय की विकसित भावना विद्यमान होगी। आप अपने सिद्धान्तों का कठोरता से अनुसरण करने और अपने वादों को पूरा करने वाले व्यक्ति के रूप में जाने जाएंगे। आपके कुछ संबंधी या मित्र या परिचित अपनी स्वार्थपरता या संवेदनशीलता की कमी के कारण आपकी भावनाओं को चोट पहुंचा सकते हैं, किन्तु आपका मन विशाल होने से आप उन्हें क्षमा कर देंगे।

जन्म कालिक करन का फल :

आपका जन्म गरिजा करन में हुआ है। यह चर श्रेणी का पांचवां करन है। आप उत्तम स्वास्थ्य, सुगठित शारीरिक संरचना, सुन्दर स्वरूप और मनोहारी बर्ताव से सुसम्पन्न होंगे। आप बुद्धिमान और ज्ञानी होंगे, उदार वादी विचारों वाले, सम्माननीय और दूसरों के प्रति हितकारी भाव रखने वाले होंगे। आप चतुर होंगे, किन्तु विवेकपूर्ण भी होंगे, आप अपने सभी शत्रुओं को पूर्णतः परास्त करने में सक्षम होंगे– किन्तु आप ऐसा बिना किसी गुट, सामाजिक संघ या कपटपूर्ण कार्यों का सहारा लिए ही करेंगे। आपकी सफलता की कुंजी आपकी सहनशीलता, दृढ़ता, समझदारी और समय पर कार्य करने की आदत होगी। आप अपना मार्ग स्वयं बनाने में सक्षम होंगे और दीर्घकाल में अपने समकालीनों से आगे निकल जाएंगे।

जन्म कालिक नक्षत्र का फल :

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा शतभिषा नक्षत्र में स्थित है। इस नक्षत्र में जन्म लेने के कारण, आप कई मामलों में भाग्यशाली नहीं हो सकती हैं। यद्यपि आप विश्वसनीय और ईमानदार होंगी, तो भी आपके विचार संशयग्रस्त हो सकते हैं। आप शोक या वेदना से ग्रस्त हो सकती हैं और यह देखकर कि आपके आस–पास के लोग और चीजें आपकी पसन्द के अनुरूप नहीं हैं, आप बहुत हताश एवं क्रोधी मिजाज की हो सकती हैं। आपमें कठोर शब्दों का प्रयोग करने की प्रवृत्ति हो सकती है– जिसकी वजह से आप धीरे–धीरे अपने प्रति लोगों की सहानुभूति खो सकती हैं। आप अपनी गलतियों से सबक लेने का प्रयास बिल्कुल भी नहीं कर सकती हैं तथा समझौता करने से कठोरता से मना कर सकती हैं। आपके अपने स्वतन्त्र तरीके हो सकते हैं और बिना विचार किए अपना कार्य कर सकती हैं।

जन्म कालिक लग्न का फल :

आपका जन्म मिथुन लग्न में हुआ है। यह राशिचक्र की तृतीय राशि है। संरचनात्मक रूप से यह एक वायु तत्व की उभय राशि है– शासित ग्रह बुध की सकारात्मक राशि है। आप उदीयमान राशि मिथुन और इसके स्वामी ग्रह बुध की नैसर्गिक विशेषताओं और विशिष्ट गुणों से सम्पन्न होंगे। स्थायीत्व और सुरक्षा इस राशि के लाक्षणिक महत्व हैं। इस राशि का स्वामित्व शरीर के कंधे, बांह, हाथ और फेफड़े वाले भाग पर है, आप ब्रॉन्कायटिस (श्वासनली शोथ), न्यूमोनिया और फेफड़ों की कमजोरी जैस श्वसन संबंधी बीमारियों से पीड़ित हो सकते हैं। आप

नारंगी रंग के शौकीन होंगे, आपका भाग्यशाली रत्न पन्ना है और आपका पसन्दीदा फूल सौन्दर्य की रानी गुलाब है।

आप एक बहुमुखी प्रतिभाशाली, प्रज्ञावान, शीघ्र समझने वाले, तेजी से कार्यान्वयन करने वाले और कार्यों में फुर्तीले होंगे। आपका दिमाग सदैव कुछ ना कुछ सोचने में व्यस्त रहेगा और आप बहुत व्यस्त रहेंगे। आप अत्यंत रचनात्मक, साफ और सुवयवस्थित व्यक्ति होंगे।

आपका सकारात्मक पक्ष यह है, कि आप अपने व्यवहार में हमेशा व्यवस्थित रहेंगे और परिणामों को प्राप्त करने के लिए क्रमबद्ध तरीकों का प्रयोग करेंगे। आप बहुत जिज्ञासु, प्रवीण, नवपरिवर्तनशील और अविष्कार करने योग्य होंगे। आप केवल सिद्धान्तों को जानकर ही संतुष्ट नहीं हो जाएंगे, बल्कि इसे आगे सिद्ध भी करेंगे एवं इसके क्रियाविधि के बारे में भी सीखेंगे। इसके अतिरिक्त, अपने सर्वोत्तकृष्ट योग्यताओं से सदैव यह साबित करने का प्रयत्न करेंगे कि सबसे अच्छे को भी काफी आसानी से बेहतर बनाया जा सकता है।

हांलाकि इसका दूसरा पक्ष यह है, कि अपनी बुद्धि का प्रयोग करने की बजाय आप चतुराईपूर्ण साधनों से अपने उद्देश्य को पूरा करने का प्रयास कर सकते हैं। आप एक अविश्वसनीय अस्थिर दिमाग वाले व्यक्ति हो सकते हैं और एक बुद्धिमान अव्यवस्थित पुरुष होने की संज्ञा मिलने का खतरा हो सकता है। अपने प्रयासों को अत्यधिक साधारण बनाने या उद्देश्यों को दुगुनी तेजी से प्राप्त करने के प्रयास में आप फिजूलखर्ची और भारी अव्यवस्था का शिकार हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में संचालित ग्रहीय प्रभावों का एकत्रित प्रभाव और आपके द्वारा अपनी इच्छा–शक्ति के प्रयोग का तरीका यह निर्धारित करेगा, कि आप कौन सा रास्ता चुनना पसन्द करेंगे और आपको उस पर चलने से वास्तव में किस प्रकार का परिणाम प्राप्त होगा।

जन्म कालिक होरा का फल :

आपकी कुण्डली में लग्न मेष राशि के दूसरे होरा में स्थित है– जो कि कक्र होरा के समकक्ष है। इस युति के कारण, आप लम्बे कद और बड़ी आंखों वाले होंगे, किन्तु आपके पैरों या अंगुलियों में कुछ विकृति हो सकती है। आप बहुत बुद्धिमान होंगे, किन्तु लापरवाह प्रकृति के होंगे। आपको छोटी विधि और सुविधाजनक साधनों का प्रयोग करने में अधिक रूचि हो सकती है।

जन्म कालिक द्रेष्काण का फल :

आपकी कुण्डली में, लग्न मिथुन राशि के द्वितीय द्रेष्काण में स्थित है– जो तुला द्रेष्काण के समकक्ष है। इस योग के कारण, आप पतले अंग, चुम्बकीय आंखें और आकर्षक स्वरूप के साथ–साथ सुन्दर आकृति वाले व्यक्ति होंगे। आपकी प्रकृति कल्पना लोक में विचरन करने वाली हो सकती है और मानसिक स्थिति कमजोर हो सकती है।

आप एक असामान्य लम्बे समय तक किसी चीज के विचार में डूबे रह सकते हैं और अचानक उससे सर्वथा मुंह मोड़ सकते हैं। संबंधों के मामले में भी आप बिना किसी कारण के अपनी प्राथमिकताओं को बदल सकते हैं। लोगों को आपको ठीक से समझने में काफी परेशानी हो सकती है और वे आपको रंग बदलने वाले की संज्ञा दे सकते हैं। हालांकि, आप बहुत बुद्धिमान, व्यवहार में विवेकशील और सौदों में चतुर होंगे। आपकी अपनी प्रतिष्ठा होगी।

जन्म कालिक प्राणपद का फल :

आपकी कुण्डली में, प्राणपद दूसरे भाव (धन भाव) में स्थित है। यह अत्यंत अनुकूल योग है। आप अपने परिवार और पारिवारिक धन के मामले में बहुत भाग्यशाली होंगे। आप प्रचूरता व समृद्धि से सम्पन्न होंगे। आपमें मिट्टी को छूकर सोना बनाने का गुण विद्यमान होगा, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। आपका जीवनसाथी आपको अपने जीवन से भी अधिक प्रेम करेगा और आपकी संतानें आनन्द का स्रोत होंगी।

जन्म कालिक गुलिक का फल :

आपकी कुण्डली में, गुलिक ग्यारहवें भाव (आय–भाव) में स्थित है। यह एक अत्यंत शुभ योग है। आप असाधारण रूप से भाग्यशाली होंगे और अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। आप गौर वर्ण, आकर्षक स्वरूप, प्रभावशाली व्यक्तित्व और राजसी व्यवहार वाले व्यक्ति होंगे। आप धनवान, शक्तिसम्पन्न और प्रभावशाली होंगे। लोग आपको बहुत अधिक पसन्द करेंगे एवं आप अपने मित्रों व परिचितों के बहुत बड़े दायरे में आकर्षण का केन्द्र होंगे।

जन्म कालिक गण का फल :

देबारी (राक्षस) गण नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आपमें कुछ अवांछित जातिस्वभावगत विशेषताएं हो सकती हैं। आपके मन में पारम्परिक मान्यताओं, सामाजिक रीतियों और धार्मिक कृत्यों के प्रति सम्मान का भाव नहीं हो सकता है। आप अक्खड़ प्रवृति लिए हुए आक्रामक स्वभाव के हो सकते हैं। आप बातूनी, दूराग्रही, झगड़ालू, कूपित, और दूष्ट भी हो सकते हैं। यदि आप अपमानित महसूस करते हैं, या यदि आपके हित दांव पर हैं, तो आप हिंसक हो सकते हैं और प्रतिकारात्मक उपायों का सहारा ले सकते हैं।

जन्म कालिक वर्ण का फल :

शूद्र (मजदूर) वर्ण नक्षत्र में जन्म लेने के कारण आप अनेक मामलों में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। आप आध्यात्मिक विकास की चौथी श्रेणी से संबंध रखेंगे। यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो आपका जन्म आरामदायक परिस्थितियों में नहीं हुआ है, आपको जीवन में प्रगति करने के लिए लम्बे समय तक कठिन संघर्ष करना पड़ सकता है। आप मुख्यतः सर्वप्रथम अपनी उत्तरजीविता के बारे में सोच सकते हैं एवं अपनी प्रगति के बारे में उसके बाद। आपके जीवन में संघर्ष का अनुभव आपके दिमाग पर अमिट रूप से अंकित हो सकता है एवं आप धीरे–धीरे निराशावादी व अविश्वसनीय हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त, आप युक्तिपूर्ण और

चालाक नहीं हो सकते हैं, गलत व्यक्ति या गलत जगह या गलत समय पर गलत शब्द बोलकर आप दूसरों की भावनाओं को आहत कर सकते हैं– जिसके परिणामस्वरूप आपके संबंध समाप्त हो सकते हैं। आप धनवान नहीं हो सकते हैं और आपका पारिवारिक जीवन बहुत शांतिपूर्ण या खुशहाल नहीं हो सकता है।

ग्रहों की भावगत और राशिगत स्थिति का फल

सूर्य की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में सूर्य मीन राशि में स्थित है। जैसाकि सूर्य अपने मित्र की राशि में सुव्यवस्थित है, अतः आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगी। आपके कई सगे भाई बहन होंगे या आप संयुक्त परिवार की सदस्य होंगी। साथ ही आपके कुछ संबंधी आपके परिवार के आश्रित सदस्य होंगे। पानी में या उसके नीचे उगने वाली वस्तुओं का व्यापार करके आप बहुत आय प्राप्त कर सकती हैं और धन संग्रह कर सकती हैं। आप एक विद्वान और बुद्धिमान महिला होंगी। अपनी समझदार प्रकृति, वाक्पटुता और उदार स्वभाव के कारण आप अपने मित्रों और परिचितों के एक बहुत बड़े दायरे में आकर्षण का केन्द्र होंगी। आप में केवल वही बातें कहने की आदत होगी, जिन्हें लोग सुनना पसन्द करते हैं और आप उसे सलीके के साथ व्यक्त करेंगी। इस कारण से आप बहुत विख्यात होंगी और आपके संबंधियों से आपके संबंध बहुत मधुर होंगे। आपको विपरीत लिंग के लोगों की संगति बहुत पसन्द हो सकती है, आपके गुप्तांग में रोग हो सकता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य दसवें भाव में स्थित है। जैसाकि आपका लग्न मिथुन है। तृतीयेश सूर्य की दसवें भाव में स्थिति के कारण आप अपने रोजगार में कई बदलाव कर सकती हैं और एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भी जा सकती हैं। आपके व्यवसाय का संबंध अखबार, रेडियो/प्रसारण, परिवहन/रेल आदि से हो सकता है। हालाकि आप अपने छोटे सगे भाई या सगी बहन के संबंध में भाग्यशाली नहीं हो सकती हैं– उसे किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ सकता है। आपकी लेखन क्षमता असाधारण हो सकती है और आप एक विख्यात लेखक, संपादक हो सकती हैं। गूढ़ विषयों में आपकी बहुत रूचि हो सकती है।

चन्द्रमा की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में चंद्रमा कुम्भ राशि में स्थित है। इस कारण से आप ठंड के प्रति संवेदी हो सकती हैं, आपको ऐसी चीजों से बचना चाहिए। यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं, तो चंद्रमा के लिए यह अनुकूल स्थिति नहीं है– जैसाकि अपने स्थान से यह षष्ठेश है और अपनी राशि से आठवें भाव में स्थित है। आप जीवन में भारी उतार–चढ़ाव का सामना कर सकती हैं और विषमताओं के खिलाफ संघर्ष में अपने अनुभवों के कारण बढ़ती आयु में आपके अन्दर अविश्वास की प्रवृति और चिड़चिड़ा स्वभाव जन्म ले सकता है। आपके बहुत सारे मित्र और परिचित होने के बावजूद भी उनसे संबंध वास्तव में सतही होंगे– जैसाकि आप का मतलब सिर्फ अपने हितों की पूर्ति करना हो सकता है। आर्थिक लाभ को प्राप्त करने के लिए आप सुविधाजनक तरीकों को अपना सकती हैं और सम्पत्ति प्राप्त करने के लिए आप गलत रास्तों पर भी जा सकती हैं, और लोगों को नीच काम करने के लिए उकसा सकती हैं।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा नौवें भाव में स्थित है। इस कारण से आप बहुत कल्पनापूर्ण प्रकृति और रूमानी स्वभाव

वाली होंगी, इसके अलावा, आप बहुत परिवर्तनशील और हमेशा भिन्नता चाहने वाली होंगी। विदेशी स्थान आपको बहुत आकर्षित करेंगे और आप किसी विकसित देश में जा सकती हैं– जहां आपको बहुत लाभ और मूल्यवान अनुभव प्राप्त होंगे। यदि चंद्रमा वृषभ या कक्र राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगी, लेकिन यदि चंद्रमा वृश्चिक राशि में है, तो आपको किसी दूर स्थान पर दुर्भाग्य का सामना करना पड़ सकता है। आपको लकड़ी या हथियार के कारण कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है या आपको कोई छोटी शल्य चिकित्सा करवानी पड़ सकती है।

मंगल की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में मंगल मीन राशि में स्थित है। इस कारण से आप कुछ मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर अपने पिता और घरेलू दौलत के मामले में। आप विदेश में रहने वाले किसी व्यक्ति से या आयात–निर्यात का व्यापार करके उत्तम लाभ प्राप्त कर सकते हैं। हांलाकि आप दब्बू और प्रशंसा के शौकीन हो सकते हैं। आपमें मैत्री की भावना का अभाव हो सकता है। यदि मंगल वक्री और/या पीड़ित है, तो आप स्वकेन्द्रित और स्वार्थी हो सकते हैं। आपकी प्रकृति चालाक और स्वभाव कपटपूर्ण हो सकता है– जिससे आपके अपने संबंधी आपका त्याग कर सकते हैं। आपको रोगों के कारण परेशानी का सामना करना पड़ सकता है, आप निराश हो सकते हैं और अविवेकी कामों के कारण अपना धन गवां सकते हैं।

आपकी कुण्डली में मंगल दसवें भाव में स्थित है। यदि मंगल मेष या वृश्चिक या मकर राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे– जैसाकि आप रूचक योग (एक पंचमहापुरुष योग) के लाभकारी परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे। इस कारण से आप बहुत उर्जावान और प्रतापी होंगे और अपने साहसी कामों के बल पर अपने उद्देश्यों को प्राप्त करेंगे। आप मंत्रों और यंत्रों में निपुण होंगे। यदि मंगल कक्र राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे– जैसाकि यहां पर मंगल को दिक् बल प्राप्त है, आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में बहुत प्रगति करेंगे, लेकिन फिर भी आपको सावधान रहना चाहिए– जैसाकि आप निन्दा और अपमान का शिकार हो सकते हैं।

बुध की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में बुध मेष राशि में स्थित है। इस कारण से आप कुछ मामलों में भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं– यदि कुछ संशोधनकारी प्रभाव आपकी कुण्डली में मौजूद नहीं हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है– जैसाकि आपकी रोग के प्रति प्रतिरोधक क्षमता और स्वस्थ होने की दर औसत से कम हो सकती है। आपके दायरे में आपके कुछ शत्रु मित्र के वेष में छिपे हो सकते हैं और आपके कुछ संबंधियों की आपके प्रति उत्तम भावना नहीं हो सकती है। लेकिन शैक्षिणिक कार्यों और बौद्धिक क्रियाकलापों में आप उत्तम काम करेंगे, हालांकि आपको अपने नम्र रवैये और हठी स्वभाव से छुटकारा पाने की कोशिश करना चाहिए। यदि शनि आपकी कुण्डली में सुव्यवस्थित है, तो आप कुछ उत्तम कार्यों को करने के कारण यश प्राप्त कर सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बुध नौवें भाव में स्थित है। आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे, आपकी शिक्षा उत्तम होगी,

साहित्यिक कामों में रूचि होगी, ज्ञान के हर रूप और उपयोगों को जानने में रत रहेंगे। आप एक जिज्ञासु पाठक होंगे और हमेशा लिखने वाले होंगे। विदेश में रहने वाले लोग और उनका जीवन आपको बहुत आकर्षित करेगा और आपको ऐसे स्थानों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उत्तम लाभ प्राप्त होंगे। आपका दिमाग हमेशा व्यस्त और निरन्तर सक्रिय रहेगा, व्यापक जानकारियों पर अत्यधिक ध्यान देने के कारण आप कुछ लोगों को बहुत हस्तक्षेप करने वाले प्रतीत हो सकते हैं। आपका स्वभाव दयालु और उदार होगा, लेकिन अपने जीवन में किसी समय आप अपने व्यवसाय में अस्थायी आघात के कारण थोड़ा परेशान हो सकते हैं।

बृहस्पति की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में बृहस्पति कन्या राशि में स्थित है। इस कारण से आप कई मामलों में भाग्यशाली होंगे– यदि बुध या शुक्र बृहस्पति के साथ स्थित है या उनमें से किसी की दृष्टि इस पर है, तो आपके भाग्य में और बढ़ोत्तरी होगी। आप शुद्ध हृदयी, ईमानदार, सद्गुणी, परोपकारी, आशावादी दृष्टिकोण वाले और ज्ञानी व्यक्ति होंगे। अपने उदार व्यवहार और क्षमाशील स्वभाव के कारण आप हर मिलने वाले व्यक्ति का हृदय जीत लेंगे। आप एक विद्वान व्यक्ति होंगे, यदि बृहस्पति किसी प्रकार से पीड़ित नहीं है, अन्यथा आप व्यावहारिक कला या शिल्प में निपुणता प्राप्त करेंगे और अपने काम में दक्ष होंगे। आप व्यवस्थित, सतत् और उद्यमी होंगे तथा आपका घरेलू जीवन बहुत शांतिपूर्ण और आनन्दमय होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति दूसरे भाव में स्थित है। यदि बृहस्पति धनु या मीन या कक्र राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे– जैसाकि आपको हम्सा योग (एक पंचमहापुरुष युति) का सुख प्राप्त होगा। इस कारण से आप एक विद्वान, बुद्धिमान और सद्गुणी व्यक्ति होंगे, आपका धार्मिक रूझान बहुत उत्कृष्ट होगा, आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। आपको पानी वाले रिसार्ट पसन्द होंगे, लेकिन आप कुछ हद तक कामुक हो सकते हैं। आप हमेशा प्रशंसनीय काम करने में रत रहेंगे और दूसरों की मदद करेंगे। सामान्यतः लोग आपको बहुत सम्मान और उचित आदर देंगे। आप पवित्र तीर्थों की यात्रा करेंगे। यदि बृहस्पति किसी अन्य राशि में है, तो आप माता–पिता और विरासत में प्राप्त होने वाले लाभ के मामले में भाग्यशाली होंगे। आपके भाग्य का सितारा आपके जन्म स्थान या निवास स्थान पर ही चमकेगा।

शुक्र की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में शुक्र मीन राशि में स्थित है। जैसाकि शुक्र अपनी राशि में सुव्यवस्थित है, आप कुछ मामलों में भाग्यशाली होंगे– विशेषकर यदि बुध या बृहस्पति इसके साथ है या उनकी दृष्टि इस पर है। आपका जन्म एक धनी परिवार में हुआ है और आप सद्गुणी स्वभाव वाले एक उदार व्यक्ति होंगे। आप एक बुद्धिमान, सुशिक्षित व्यक्ति होंगे और अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उत्कृष्ट काम करेंगे तथा अपने जीवन में विशिष्टता प्राप्त करेंगे। आप मृदुभाषी, अपनी सौम्य प्रकृति एवं उदार व्यवहार के कारण सभी के प्रिय होंगे। आप साहसी एवं निडर होंगे तथा अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। आपका जीवनसाथी सुन्दर और कुलीन परिवार से होगा।

आपकी कुण्डली में शुक्र दसवें भाव में स्थित है। यदि शुक्र वृषभ या मीन या तुला राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे– जैसाकि आपको मालव्य योग (एक पंचमहापुरुष युति) का सुख प्राप्त होगा। इस कारण से आपमें कई वांछित गुण होंगे और आप जीवन के सभी प्रकार के आरामों और सुखों का आनन्द प्राप्त करेंगे, आपको मौजमस्ती प्रिय हो सकती है, लेकिन आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। आपका जीवनसाथी स्वस्थ, आवेगी, सहयोगी और आप से लगाव रखने वाला होगा। आप हमेशा उत्तम कार्य करने में रत रहेंगे एवं उत्तम कार्यों के लिए उदारता पूर्वक दान करेंगे। आपके मित्र ऊँचे पदों पर होंगे और लोग सदा आपको बहुत सम्मान देंगे। यदि शुक्र किसी और राशि में स्थित है, तो आप भविष्यवक्ता हो सकते हैं और शकुन विद्या में आपकी रूचि हो सकती है, साथ ही आप कुछ कलात्मक कार्यों में रत हो सकते हैं।

शनि की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में शनि कन्या राशि में स्थित है। इस कारण से आप कलात्मक कार्यों में सफलता प्राप्त करने के लिए शिक्षा प्राप्त करने के मामले में नैसर्गिक कारक बुध पर शनि के सौम्य प्रभाव से निर्देशित हो सकते हैं। प्रायः शनि किसी को ऐसे व्यवहारपरक क्षेत्र की तरफ आकर्षित करता है– जिसका व्यक्ति के पेशे के क्षेत्र में फलदायी उपयोग किया जा सकता हो, यह कृषि, खनन, तकनीकी या इंजीनियरिंग हो सकता है– जहां पर श्रम/श्रमिक भी शामिल हों। साथ ही, यह कोई व्यावहारिक कला या शिल्प हो सकती है। अपेक्षाकृत विकास की अवस्था के दौरान एक लम्बे समय के निरन्तर अध्ययन और अभ्यास के द्वारा प्रायः व्यक्ति की क्षमतायें पूर्णरूप से निखरती हैं। आप दुर्लभ किस्म की गंभीरता से पूर्ण होंगे, धैर्य और निरन्तर परिश्रमशील होने के गुणों से पूर्ण होने के कारण आप अवश्य ही विशेषीकरण के क्षेत्र में अपनी पहचान बनायेंगे और उपलब्धियां प्राप्त करेंगे।

आपकी कुण्डली में शनि चौथे भाव में स्थित है। यदि शनि आपकी कुण्डली में सुव्यवस्थित नहीं है, तो आपका दृष्टिकोण संकुचित और मतलब सीमित हो सकता है। जबकि सुखद पक्ष यह है कि आप भावुक प्रकृति के हो सकते हैं और अपने परिवार के सदस्यों के लिये जिम्मेदारी की गहरी भावना हो सकती है, दूसरी तरफ आप स्वार्थी हो सकते हैं। इसके अलावा, आपका व्यक्तित्व कमजोर हो सकता है, आप निकृष्टता की भावना का शिकार हो सकते हैं। अपने हितों की पूर्ति के लिए आप भ्रांतियों को बैसाखी के रूप में इस्तेमाल कर सकते हैं और बहुत हठी होने का दिखावा कर सकते हैं। यदि सूर्य शनि के साथ स्थित है, तो आपके पिता की मानसिक स्थिति का ह्रास आपकी चिन्ता का कारण हो सकता है।

यदि बृहस्पति शनि के साथ में स्थित है, तो आपकी संतानों की मानसिक स्थिति का क्षय आपकी वास्तविक भारी चिन्ता का कारण हो सकता है। यदि शनि कुम्भ या मकर या तुला राशि में स्थित है, तो आप बहुत भाग्यशाली होंगे– जैसाकि आपको शश योग (एक पंचमहापुरुष युति) का सुख प्राप्त होगा। आप एक महत्वपूर्ण और सम्माननीय व्यक्ति की तरह समाज में जाने जायेंगे, लेकिन आपको अपने संबंधियों से दूर रहना पड़ सकता है।

राहु की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में राहु दूसरे भाव में स्थित है। इस कारण से आपका जन्म एक सम्पन्न परिवार में हुआ होगा, लेकिन आपके परिवार का भाग्य कुछ हद तक अस्थायी हो सकता है और आपको पुराना स्तर प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ सकता है। आपको मिलने वाले अवसरों का उपयोग करके आप अपने भाग्य में सुधार करेंगे, लेकिन आपको कुछ शुभ घरेलू समारोहों जैसे शादी में भारी धन खर्च करना पड़ सकता है। आपके अपने जीवनसाथी और ससुराल वालों से संबंध बहुत आत्मीय नहीं हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु उस नक्षत्र का स्वामी है, जहां आपका लग्न स्थित है। इसके अतिरिक्त, इसकी स्थिति किसी प्रतिकूल त्रिक भाव (छठे, आठवें या बारहवें) के साथ नहीं मिलती है और यह अपने नक्षत्र में स्थित है। यह एक अनुकूल युति है और आप बहुत भाग्यशाली होंगे तथा राहु की भुक्ति या दशा के दौरान आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। हालांकि आप इसके अन्तिम चरण के दौरान कुछ छोटी खीज पैदा करने वाली समस्याओं का सामना कर सकते हैं।

केतु की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में केतु आठवें भाव में स्थित है। इस कारण से आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है और आप जहरीले रसायनों, गर्म गैसों, धुंआ, धूल, विकिरण या अन्य प्रदूषकों के कारण परेशानी का सामना कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी का स्वास्थ्य और सुख चिन्ता का कारण हो सकता है। यदि सूर्य केतु के साथ स्थित है, तो आपके पिता का मिजाज चिड़चिड़ा हो सकता है और आपको बहुत परेशान या चिन्तित कर सकता है। इसके अलावा, आपको अपनी चाह के विपरीत कुछ आश्रितों के भार को सहन करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है।

हर्षल की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में, यूरेनस वृश्चिक राशि में स्थित है। इस कारण से आपकी शारीरिक संरचना चौड़ी और सुगठित, कद औसत से अधिक, रंगत सांवली और मिजाज कुछ–कुछ बेलगाम प्रकृति का हो सकता है। आप एक पुरुष हैं, तो आपका पहनावा बेढंगा और सफाई के मामले में आप लापरवाह हो सकते हैं। आपका अपना दृष्टिकोण बिल्कुल भी रूढ़िवादी नहीं हो सकता है और आपका प्रेम प्रसंग विचित्र हो सकता है। आप गुर्दे की पथरी, मूत्रमार्ग में परेशानी, मधुमेह, मूत्राशय में संकुचन, स्कर्वी आदि से रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, यूरेनस छठवें भाव में स्थित है। इस कारण से, आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है– इस कारण से आपको ना केवल अपने स्वास्थ्य का उचित ध्यान रखना चाहिए, बल्कि सभी के ऐतिहाती व बचावकारी उपाय भी अपनाने चाहिए। अत्यधिक चिन्ताओं के कारण आपको मानसिक रोग हो सकते हैं। अपने घरेलू नौकर या कर्मचारी के चुनाव के मामले में आपको बहुत सावधान व सजग रहना चाहिए– जैसाकि उनमें से कुछ चोरी, उठाईगिरी या किसी अन्य कपटपूर्ण तरीके से जानबूझकर आपको कुछ बड़े नुकसान पहुंचा सकते हैं।

नेपच्यून की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में, नेप्च्यून धनु राशि में स्थित है। इस कारण से, आपकी शारीरिक संरचना सुन्दर/आकर्षक, कद औसत से अधिक, रंगत गोरी, बाल भूरे, नाक उभरी हुई और पैर लम्बे हो सकते हैं। आप ईमानदार व दयालु होंगे, आप हर प्रकार के कपटपूर्ण, धृष्ट और गलत कार्यों से हमेशा दूर रहेंगे, इसके अलावा आप दूसरों में इन अवगुणों को शीघ्र ही पकड़ लेंगे। दूरस्थ स्थानों के जीवन के प्रति आपमें भारी आकर्षण होगा, और आप कुछ लम्बी यात्रा कर सकते हैं। आप रक्त वाहिनियों में विकार, नितम्ब के जोड़ों में विकार, हड्डी के जोड़ उखड़ना, साइटिका, पैरों के निचले भाग में खिंचाव आदि जैसे रोगों से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, नेप्च्यून सातवें भाव में स्थित है। इस कारण से, आप कपटपूर्ण प्रकृति के हो सकते हैं– जिससे आप असम्मानजनक या अनैतिक क्रियाकलापों के द्वारा सामाजिक नियमों को भंग कर सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव मौजूद नहीं हैं, तो अवैध संबंधों या कर्तव्यों की पूर्णतः उपेक्षा करने के कारण आपका वैवाहिक जीवन बर्बाद हो सकता है। साथ ही, आपका जीवनसाथी मनोविक्षेप प्रकार के किसी क्षयकारी रोग से ग्रसित हो सकता है।

प्लूटो की स्थिति का फल :–

आपकी कुण्डली में, प्लूटो कन्या राशि में स्थित है। इस कारण से, आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत पतली, वर्गाकार, कद औसत और बाल काले हो सकते हैं। आपमें स्वयं को बहुत महत्वपूर्ण समझने की प्रवृत्ति हो सकती है और दूसरों को बिना झिझक ठेस पहुंचाने की आदत हो सकती है– जो आपके विचारों और मतों से सहमत नहीं हों। यदि किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह से प्लूटो पीड़ित है, तो आपका यश धीरे–धीरे मंद पड़ सकता है, और आप गुमनामी के अंधेरों में खो सकते हैं। आप कलाई और अंगुलियों में मांसपेशियों के खिंचाव, भोजन विषाक्तता, डायरिया, दस्त, पेचिश, काला ज्वर आदि रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में, प्लूटो चौथे भाव में स्थित है। इस कारण से, आपको अपने प्रारम्भिक जीवन में कुछ कटु अनुभवों का सामना करना पड़ सकता है। कुछ असामान्य घटनाएं जैसे माता–पिता से अलगाव या उनकी हानि या कोई त्रासदिक कारण आपके घरेलू ताने बाने को बुरी तरह से प्रभावित कर सकता है, जिससे आपको भारी मानसिक तनाव हो सकता है। सम्पत्ति के मामले में भी यह बिल्कुल भी अनुकूल नहीं है– जैसाकि कुछ निष्ठुर लोगों के द्वारा कड़े उपायों को अपनाये जाने के कारण सम्पत्ति हानि का भय हो सकता है। हालांकि, यदि किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह का प्रभाव युति या दृष्टि के द्वारा प्लूटो पर पड़ता है, तो चीजों में बेहतरी के लिए सुधार होगा।

शरीर के विभिन्न अंगो का ज्योतिषीय विश्लेषण

बाहरी व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, कद–काठी व त्वचा का रंग

इनमें से प्रत्येक तत्व अनेक कारकों पर निर्भर हैं, जहां प्रत्येक कारक अनेक संशोधनकारी प्रभाव उत्पन्न कर सकता है, जैसे– लग्न–राशि, लग्न में उपस्थित ग्रह (यदि कोई है तो), लग्न पर दृष्टि डालने वाले ग्रह (यदि कोई है तो), चंद्र–राशि में उपस्थित ग्रह(यदि कोई है तो), चंद्र–राशि पर दृष्टि डालने वाले ग्रह, लग्न का क्रिशांश, ग्रहों की राशिगत स्थिति, लग्नेश की भावगत स्थिति इत्यादि।

संभावित कद (लंम्बाई) का अनुमान (वयस्क होने पर)

आपकी लग्न राशि मिथुन है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना लम्बी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न का स्वामी लग्न से अपोक्लिम भाव में स्थित है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना अपेक्षाकृत छोटी होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की शायन डिग्री राशि के दूसरे या तीसरे चतुर्थांश में है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपकी शारीरिक संरचना सामान्य होगी।

संभावित त्वचा के रंग का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य और मंगल की युति है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप गौरवर्ण के होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल व शुक्र की युति है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप गौरवर्ण के होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य व शुक्र की युति है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप गौरवर्ण के होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली ना तो मेष लग्न की है और ना ही वृश्चिक लग्न की है तथा मंगल की आपके लग्न पर दृष्टि पड़ रही है। अतः आप गौर वर्ण के हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली मकर अथवा कुम्भ लग्न की नहीं है तथा शनि की आपके लग्न पर दृष्टि पड़ रही है। अतः

आप गहरे वर्ण के हो सकते हैं।

त्वचा के रंग पर ग्रहों का संयुक्त प्रभाव

सूर्य से लेकर शनि तक के सभी ग्रहों के संचित प्रभाव को ध्यान में रखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि आप मध्यम वर्ण के हो सकते हैं अर्थात ना ही गहरे और ना ही गौर वर्ण के।

शरीर के स्थूलकाय (मोटे) होने का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में दो या दो से अधिक ग्रह अस्त हैं। ऐसी ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रतिकूल प्रभाव के कारण संभवतः आप कमजोर संरचना वाले या रोगी प्रकृति वाले हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र की एक अथवा एक से अधिक ग्रहों के साथ मीन राशि में युति है, जो कि एक जलीय राशि है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रभाव के कारण किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध से अथवा उसके बाद के आयु काल से आपके शरीर का वजन बढ़ना शुरू हो सकता है एवं संभवतः शीघ्र ही आपका शरीर स्थूल एवं वजनी हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न या तो शनि के साथ संयुक्त हैं या शनि की इस पर दृष्टि पड़ रही है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो इसके प्रतिकूल प्रभाव के कारण आपका शरीर अत्यधिक मांसल या स्थूल या भारी नहीं हो सकता है।

आँखे और आँखो की रोशनी का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में बारहवें भाव का स्वामी नीचस्थ और/या अस्त और/या ग्रसित है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपनी बाईं आँख में कुछ परेशानी हो सकती है तथा आपको चश्मा पहनना पड़ सकता है। आपको अपनी आँख के प्रति अधिक सावधानी रखनी चाहिए एवं यदि आपको कभी किसी प्रकार की असुविधा महसूस होती है तो किसी अनुभवी नेत्र–विशेषज्ञ से जांच करवानी चाहिए।

शुक्र आँखों के लेंस को संचालित करता है। इसका कुछ प्रभाव पुरुषों के संदर्भ में बाईं आँख पर तथा महिलाओं के संदर्भ में दाईं आँख पर भी होता है। आपकी कुण्डली में शुक्र नीचस्थ और/या अस्त और/या ग्रसित है। अतः इसके परिणामस्वरूप ऐसी कुछ संभावना है कि आपके किशोरावस्था के उत्तरार्द्ध में अथवा प्रौढ़ावस्था के प्रारम्भ में आपकी आँखें कुछ हद तक प्रभावित हो सकती हैं। यदि आपको किसी प्रकार की कोई परेशानी महसूस होती है तो आपको इसे नजरअंदाज करने की बजाय किसी अनुभवी नेत्र–विशेषज्ञ से परामर्श लेना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति एवं शुक्र की एक दूसरे के विपरीत काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट की दृष्टि के अन्दर) स्थित हैं। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अधिक अनुकूल है। आपकी कुण्डली में उपस्थित ऐसे ग्रह योग के कारण आपकी आँखें बहुत सुंदर होंगी। ऐसी प्रबल संभावना है कि आपकी आँखों की पुतली का रंग गहरा नीला होगा। यदि आप गौर वर्ण के होंगे तो आपकी आँखों की पुतलियों का रंग बैंगनी हो सकता है।

जीभ, दांत और बोलने की क्षमता का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में दूसरे भाव का स्वामी ना ही उच्चस्थ है एवं ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। इसके अतिरिक्त यह एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके दांत अधिक आकर्षक नहीं होंगे अथवा वे अधिक लंबे समय तक मोतियों जैसे या चमकदार नहीं रहेंगे। जैसाकि आप अपने दांतों का उचित ख्याल नहीं रखेंगे इसलिए वे समय से पूर्व ही खराब हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह लग्न से विपरीत में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह लग्न से स्क्वायर में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह लग्न से स्क्वायर में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह लग्न से त्रिन में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह लग्न से त्रिक में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आपका लग्न–स्वामी नहीं है। यह लग्न से सेक्सटाइल में स्थित है तथा इसकी दृष्टि काफी नजदीक (3 डिग्री 20 मिनट के अन्दर) है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो, जैसा कि शुक्र का प्रभाव चल रहा है, इसलिए संभवतः आपके दांत एक दूसरे से आंशिक रूप से ढके हो सकते हैं–विशेषकर ऊपरी पंक्ति में तथा संभवतः सिर्फ एक तरफ।

जैसा कि बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में सात बिन्दु है। यह योग अधिक अनुकूल तथ्यों की ओर इंगित करता है। इसके प्रभाव से आप एक असाधारण अनुकूल/ आनन्ददायक वक्ता होंगे। इसके अतिरिक्त आप एक समर्थ लेखक भी होंगे। आप दूसरे लोगों से अपनी बात मनवाने में सक्षम होंगे एवं अपने विचारों व मतों के लिए समर्थन प्राप्त कर लेंगे। यदि आपकी कुण्डली में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह ठीक ढंग से व्यवस्थित है एवं पांचवां भाव भी शक्तिशाली स्थिति में है तो आप एक कवि या साहित्यकार भी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में चार (या अधिक) बिन्दु हैं। बुध अपनी कक्षा में एक बिन्दु का योगदान कर रहा है, जबकि इस भाव राशि में एक (या अधिक) शुभ ग्रह भी बिन्दु का योगदान कर रहा है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपमें मनोहारी शिष्टाचार होगा। बातचीत के दौरान आप ताक्रिक व हाजिर जवाबी होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में चार (या अधिक) बिन्दु हैं। बृहस्पति अपनी कक्षा में एक बिन्दु का योगदान कर रहा है, जबकि इस भाव राशि में एक (या अधिक) शुभ ग्रह भी बिन्दु का योगदान कर रहा है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपमें मनोहारी शिष्टाचार होगा। बातचीत के दौरान आपकी बातें बुद्धिमतापूर्ण, स्पष्ट एवं अधिक उपदेशात्मक/शिक्षाप्रद होंगी।

आपकी जन्मकुण्डली में बुध के भिन्नाष्टक वर्ग में, दूसरे भाव की राशि में चार (या अधिक) बिन्दु हैं। शुक्र अपनी कक्षा में एक बिन्दु का योगदान कर रहा है, जबकि इस भाव राशि में एक (या अधिक) शुभ ग्रह भी बिन्दु का योगदान कर रहा है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपमें मनोहारी शिष्टाचार होगा। बातचीत के दौरान आपकी बातें उंचे आदर्शों एवं रोचक किस्सों के साथ फैलेंगी।

कान और सुनने की शक्ति

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह, जो कि उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है, तीसरे भाव के स्वामी से एक डिग्री के अंदर स्थित है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने कान या श्रवण शक्ति से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपका दायां कान प्रभावित हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह, जो कि उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है, ग्यारहवें भाव के स्वामी से एक डिग्री के अंदर स्थित है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने कान या श्रवण शक्ति से संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपका बायां कान प्रभावित हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में एक नैसर्गिक शुभ ग्रह तीसरे भाव की राशि पर दृष्टि डाल रहा है। यह आंशिक रूप से अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप एक पुरुष है इसलिए आपके दाएं कान/श्रवण शक्ति से संबंधित किसी प्रकार की समस्या होने की संभावना अत्यंत कम है।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र अस्त या ग्रसित है। इस ग्रह का आधिपत्य कंठ–कर्ण नली एवं श्रवण संबंधी नलिकाओं पर होता है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपको अपने कानों से संबंधित कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है और जीवन के उत्तरार्द्ध में आपकी श्रवण शक्ति क्षीण हो सकती है।

बाँह, हाथ और कन्धे की संरचना का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव के स्वामी की बृहस्पति के साथ युति है या बृहस्पति की इस पर दृष्टि पड़ रही है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल है। जैसा कि तीसरे भाव के स्वामी का आधिपत्य शरीर के बांह व कंधे वाले भाव पर होता है। अतः आपके शरीर के ये भाग उचित रूप से विकसित होंगे। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी आहार–नली, हवा–नली, तंत्रिका प्रणाली व श्वसन प्रणाली को भी संचालित करता है, अतः आपके शरीर के ये अंग भी बिल्कुल सही ढंग से काम करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में तीसरे भाव के स्वामी की शुक्र के साथ युति है या शुक्र की इस पर दृष्टि पड़ रही है। ऐसी ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल है। जैसा कि तीसरे भाव के स्वामी का आधिपत्य शरीर के बांह व कंधे वाले भाव पर होता है। अतः आपके शरीर के ये भाग उचित रूप से विकसित होंगे। जैसा कि तीसरे भाव का स्वामी आहार–नली, हवा–नली, तंत्रिका प्रणाली व श्वसन प्रणाली को भी संचालित करता है, अतः आपके शरीर के ये अंग भी बिल्कुल सही ढंग से काम करेंगे।

हृदय और पीठ की स्थिति का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है जैसा कि यह उच्चस्थ है या अपनी राशि

या अपने नक्षत्र में स्थित है। पांचवें भाव का स्वामी हृदय एवं पीठ को शासित करता है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी जन्मकुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग सही ढंग से काम करेंगे।

सूर्य जो कि प्राकृतिक राशि–चक्र के पांचवी राशि का स्वामी है, आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रहों के साथ युत है अथवा ऐसे किसी ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका हृदय एवं पीठ का भाग संभवतः मजबूत नहीं होगा। जैसा कि सिंह राशि का आधिपत्य गठिया, ज्वर एवं पेट के ऊपरी भाग से संबंधित समस्याओं पर भी होता है। अतः आपको इनमें से एक या एक से अधिक कष्टों से पीड़ित होना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव के स्वामी की बृहस्पति के साथ युति है अथवा बृहस्पति की इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह ग्रह स्थिति आपके लिए अनुकूल है। जैसाकि पांचवें भाव के स्वामी का आधिपत्य हृदय एवं पीठ वाले भाग पर होता है। अतः आपके शरीर के ये अंग स्वस्थ्य व मजबूत होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में पांचवें भाव के स्वामी की शनि के साथ युति अथवा दृष्टि संबंध है, जबकि शनि ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह योग आपके लिए अनुकूल नहीं है। जैसा कि पांचवें भाव के स्वामी का आधिपत्य हृदय एवं पीठ वाले भाग पर होता है। अतः आपके शरीर के ये भाग संभवतः स्वस्थ्य या मजबूत नहीं रहेंगे।

उदर (पेट) और पाचन क्रिया का अनुमान

कर्क राशि का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह इस राशि में स्थित हैं, जबकि इसमें कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह उपस्थित नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली छोटी–मोटी समस्याओं से मुक्त नहीं रह सकती है और आपकी पाचन शक्ति भी अच्छी रहने की संभावना कम है।

कर्क राशि का आधिपत्य शरीर के महत्वपूर्ण आंतरिक अंग 'पेट' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि इस पर किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह की दृष्टि नहीं है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके पेट की कार्य–प्रणाली छोटी–मोटी समस्याओं से मुक्त नहीं होगी और आपकी पाचन शक्ति भी अच्छी नहीं रहेगी।

कन्या राशि एवं इसके स्वामी बुध का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में कन्या राशि का स्वामी ग्रह बुध किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ राशि परिवर्तन अथवा नक्षत्र परिवर्तन करने के कारण अशुभ प्रभाव में है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपके शरीर की पाचन–प्रणाली समस्यारहित नहीं हो सकती है, जिसका आपके स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।

छठवें भाव का आधिपत्य शरीर के बहुत महत्वपूर्ण आंतरिक क्रिया 'पाचन तंत्र' पर होता है। आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक नैसर्गिक अशुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि पड़ रही है, जबकि किसी भी नैसर्गिक शुभ ग्रह की इस राशि पर दृष्टि नहीं है। अतः यह ग्रह स्थिति अनुकूल नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको अपने पाचन–प्रणाली को प्रभावित करने वाली कुछ समस्याओं से गुजरना पड़ सकता है, जिसका प्रभाव आपके स्वास्थ्य पर भी पड़ सकता है।

शरीर के ग्राही, अवशोषी और उत्सर्जी अंगो का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों के साथ संबंधित है या उनकी इस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर की तरल प्रसारण प्रणाली एवं ग्रंथि प्रणाली बिना किसी समस्या के काम करती रहेगी।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र शक्तिशाली स्थिति में है, जैसा कि यह उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः ये अनुकूल संकेत हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आपको अपने आंतरिक जननेन्द्रिय से संबंधित किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

जाँघ, घुटना, टांगो और पंजो का अनुमान

आपकी जन्मकुण्डली में एक अथवा एक से अधिक शुभ ग्रह नौवें भाव में उपस्थित हैं, जो कि नितंब वाले भाग एवं जांघों को संचालित करते हैं। अतः यह एक अनुकूल संकेत है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग काफी विकसित होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में एक उच्चस्थ ग्रह दसवें भाव में उपस्थित हैं, जिसका कुछ आधिपत्य शरीर के घुटने के आस–पास वाले भाग पर होता है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग उचित रूप से विकसित होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में एक या एक से अधिक शुभ ग्रह दसवें भाव में उपस्थित हैं, जो कि शरीर के घुटने के आस–पास वाले भाग को दर्शाता है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग उचित रूप से विकसित होंगे।

प्राकृतिक राशि–चक्र की दसवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है तथा आपकी कुण्डली में यह एक कार्यात्मक अशुभ ग्रह भी है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में इसकी एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रह के साथ युति है अथवा इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के घुटनों के आस–पास वाले भाग उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

प्राकृतिक राशि–चक्र की ग्यारहवीं राशि का स्वामी शनि है, जो कि एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है तथा आपकी कुण्डली में यह एक कार्यात्मक अशुभ ग्रह भी है। इसके अतिरिक्त आपकी कुण्डली में इसकी एक या एक से अधिक कार्यात्मक अशुभ ग्रह के साथ युति है अथवा इस पर ऐसे किसी ग्रह की दृष्टि पड़ रही है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के टांग के आस–पास के भाग, 'घुटने से नीचे एवं टखने से ऊपर वाले भाग', उचित रूप से विकसित नहीं होंगे। या फिर आपको अपने शरीर के इस भाग के आस–पास जन्मजात कष्ट महसूस हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में बारहवें भाव का स्वामी शक्तिशाली स्थिति में है, क्योंकि यह उच्च राशि में या अपनी राशि में या अपने नक्षत्र में उपस्थित है। बारहवें भाव का स्वामी पैर एवं पैर की उंगलियों का सूचक है। अतः यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपके शरीर के ये भाग मजबूत एवं अच्छे आकार या स्थिति में होंगे।

स्वास्थ्य और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याएं

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य पीड़ित है, अतः आप किसी प्रकार के जैविक विकार से ग्रसित हो सकते हैं। आपकी मौलिक संरचना अधिक उत्तम नहीं हो सकती है एवं आपमें आनुवांशिक रूप से कोई रोग प्रवेश कर सकता है–संभवतः अपने पिता से।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा पीड़ित है, अतः आपको कुछ ईंद्रियात्मक अनियमितता से पीड़ित होना पड़ सकता है। आपका स्वास्थ्य अधिक समय तक अच्छा नहीं रह सकता है तथा आपको बाह्य कारणों जैसे जलवायु व वातावरणीय स्थितियों में परिवर्तन के कारण रोग हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में लग्न पीड़ित है। अतः आपमें रोगों के लड़ने की उत्तम प्रतिरोधक क्षमता नहीं होगी। आप कभी–कभी एक या अन्य रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठवें भाव का स्वामी (छठा भाव – रोग) सूर्य के साथ स्थित है। अतः आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आप अपने जीवन में कभी किसी गंभीर रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में छठवें भाव के स्वामी (छठा भाव – रोग) की दृष्टि लग्न पर पड़ रही है। अतः आप किसी रोग से लम्बे समय तक ग्रसित हो सकते हैं। संभवतः आप अपने बचपन में या प्रारम्भिक युवावस्था में किसी रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव के स्वामी (आठवां भाव – गंभीर समस्या) की लग्न पर दृष्टि पड़ रही है। अतः आप किसी गंभीर रोग से काफी लम्बे समय तक ग्रसित रह सकते हैं। संभवतः अपने प्रारम्भिक बचपन में आप किसी रोग से लम्बे समय पीड़ित रहे हों।

आपकी कुण्डली में आठवें भाव के स्वामी (आठवां भाव – गंभीर समस्या) की सूर्य पर दृष्टि पड़ रही है। अतः आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आप अपने जीवन में कभी किसी गंभीर रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बारहवें भाव का स्वामी (बारहवां भाव– बिस्तर पर रहने या अस्पताल में भर्ती होने की दशा) सूर्य के साथ स्थित है। अतः आप अधिक स्वस्थ्य नहीं हो सकते हैं तथा आप अपने जीवन में कभी किसी गंभीर रोग से ग्रसित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य मीन राशि में स्थित है तथा लग्न उससे पीड़ित है। अतः आप द्रवीय शिकायतों आदि जैसे विकारों से ग्रसित हो सकते हैं। आपके गुप्तांगों में भी विकार या दर्द होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति कन्या राशि में स्थित है तथा चन्द्रमा उससे पीड़ित है। अतः आप क्षय रोग, फेफड़ों में रूकावट, आंतों का ढीलापन, उदासीनता, आदि से ग्रसित से हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल मीन राशि में स्थित है तथा सूर्य उससे पीड़ित है। अतः आप अशुद्ध रक्त, फेफड़ों की समस्या, तपेदिक, ब्रॉन्काइटिस, ड्राप्सी, पैरों में सूजन आदि जैसे रोगों से पीड़ित हो सकते हैं।

जन्मकुण्डली में केतु आठवें भाव में अकेले विद्यमान है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है तो आपको अपने जीवन में किसी समय शल्य चिकित्सा करवानी पड़ सकती है, साथ ही आपको किसी मारकाट, रक्तहीनता या किसी स्वास्थ्य संबंधी जटिलता का सामना भी करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि उच्चस्थ नहीं है और ना ही अपने भाव में स्थित है और यह वक्री है। अतः आपको बहुत सावधान व सतर्क रहना चाहिए, क्योंकि आपको अपने जीवनकाल में कभी उंचाई से गिरने के कारण चोट लग सकती है अथवा कोई वस्तु आपके शरीर के किसी भाग पर गिरने के कारण भी चोट लग सकती है।

शिक्षा की संभावना और संबंधित तथ्यों की जाँच

शिक्षा के दौरान आने वाली बाधाओं का आकलन –

आपकी जन्मकुण्डली में वक्री ग्रह प्रमुख शिक्षा संबंधी भावों में से एक में (दूसरे या चौथे या पांचवें) स्थित है। फिर भी यह एक लाभदायक कारक है। चूंकि आप बहुत नियमित या अत्यधिक अध्ययनशील नहीं हो सकते हैं। तब भी आप में एकाग्रता की विशिष्ट क्षमता विद्यमान होगी तथा आप अत्यंत कम समय में अविश्वसनीय रूप से बहुत कुछ प्राप्त करेंगे। आपका उत्साह अवधि/वर्ष/पाठ्यक्रम के प्रारम्भ होने पर और पुनः अन्तिम परीक्षा के दौरान अपने चरम पर होगा, जिसमें की आप निश्चित रूप से सफलता प्राप्त करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, वृहस्पति वक्री है। यह शिक्षा के लिए कदापि बाधक कारक नहीं है, अपितु यह काफी लाभदायक है। आप निश्चित रूप से उच्च महात्वाकांक्षा वाले तथा गर्व की भावना से पूर्ण होंगे, जो कि अप्रत्यक्ष रूप से आपको उत्तम शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेगा। यद्यपि आप असंतुलित विचारों वाले हो सकते हैं तथा धन को बहुत अधिक महत्व दे सकते हैं, तथापि आपको भाषा, व्याकरण और साहित्य का अत्यंत उत्तम ज्ञान होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि वक्री है। यह शिक्षा के लिए कदापि बाधक कारक नहीं है, अपितु यह काफी लाभदायक है। आप निश्चित रूप से उच्च महात्वाकांक्षा वाले तथा गर्व की भावना से पूर्ण होंगे, जो कि अप्रत्यक्ष रूप से आपको उत्तम शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित करेगा। आपमें एकाग्रता का गुण विद्यमान होगा तथा मातृ–भाषा के अतिरिक्त विदेशी भाषाओं (जैसे अंग्रजी आदि) सहित अन्य भाषाओं को बोलने व लिखने की काफी अच्छी पकड़ हो सकती है। हालांकि आपको बहुत सावधान रहने की आवश्यकता है, क्योंकि वक्री शनि आपकी शिक्षा में स्थाई या अस्थाई रूप से बाधा डाल सकता है। जैसाकि शनि आपकी कुण्डली में शक्तिशाली स्थिति में नहीं है, क्योंकि यह उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। इसलिए शिक्षा में आने वाली बाधा स्थाई होगी और/या यह बाधा प्रवीणता के अभाव के कारण अथवा 'स्क्रीनिंग परीक्षा' (यह प्रवेश–परीक्षा या प्रारम्भिक स्क्रीनिंग परीक्षा भी हो सकती है) में असफलता के कारण हो सकती है।

अनौपचारिक शिक्षा (तीसरे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, शनि और तीसरे भाव के स्वामी की परस्पर एक दूसरे पर दृष्टि पड़ रही है। यह दर्शाता है कि आप अत्यंत धैर्यवान होंगे तथा आप अपनी रूचि के विभिन्न विषयों का कई वर्षों तक अनौपचारिक शिक्षा ग्रहण करते रहेंगे।

लिखावट (तीसरे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों की तीसरे भाव पर दृष्टि पड़ रही है। यह

दर्शाता है कि आप प्रभावशाली व्यक्तित्व के होंगे तथा आपमें असाधारण लेखन क्षमता विद्यमान होगी। आपकी लिखावट अत्यंत सुन्दर होगी, जिसे सुन्दर भी कहा जा सकता है।

सामान्य शिक्षा (चौथे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रह चौथे भाव में उपस्थित हैं। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से यह एक अनुकूल संकेत है। ना केवल आप अपनी स्नातक की ही शिक्षा सफलतापूर्वक पूर्ण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्थान से कोई व्यावसायिक शिक्षा या शिक्षा के उपरान्त प्रशिक्षण ग्रहण कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक या एक से अधिक नैसर्गिक शुभ ग्रहों की चौथे भाव पर दृष्टि पड़ रही है। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने की दृष्टि से यह एक अनुकूल संकेत है। आप ना केवल सफलतापूर्वक अपनी स्नातक की शिक्षा पूर्ण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप अपनी योग्यता बढ़ाने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्थान से कोई व्यावसायिक शिक्षा या शिक्षा के उपरांत प्रशिक्षण भी ग्रहण कर सकते हैं।

बुद्धि, मेधा और योग्यता (पाँचवे भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें भाव का स्वामी उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित होने के कारण शक्तिशाली स्थिति में है। उत्तम शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह अनुकूल संकेत दे रहा है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरणशक्ति वाले होंगे। आप विशिष्ट गुणों से सम्पन्न भी हो सकते हैं। आप ना केवल सुगमतापूर्वक अपनी स्नातक की शिक्षा ग्रहण करेंगे, बल्कि आगे की भी शिक्षा जारी रखेंगे। आप सामान्य क्षेत्रों में उच्च शिक्षा जारी रख सकते हैं अथवा अपनी प्रतिष्ठा अथवा अपने व्यासायिक स्तर में वृद्धि करने के लिए किसी प्रतिष्ठित संस्था से कोई व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

वस्तु–परक शिक्षा (केन्द्र और त्रिकोन के अधिपतियों के बीच का सह संबंध) –

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें एवं सातवें भाव के स्वामी की एक दूसरे पर दृष्टि पड़ रही है। ऐसा योग किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु अत्यंत अनुकूल है। आप प्रखर बुद्धि तथा अवधारक स्मरण शक्ति से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आपको भाषा, साहित्य, दर्शन आदि जैसे मानवतावादी विषय तथा विधि का अध्ययन अत्यधिक आकर्षित कर सकता हैं। इसके अतिरिक्त आपको ललित कला की किसी विधा में अथवा मनोरंजन के क्षेत्रों में काफी रूचि हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें एवं नौवें भाव के स्वामी की एक साथ युति है। तकनीकि या इंजीनीयरिंग जैसे व्यवहारपरक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह एक अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरण शक्ति से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही

आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आपको व्यापार प्रबंधन तथा विधि जैसे विषय अत्यधिक आकर्षित कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपको आयात–निर्यात अथवा विदेशी मामलों में भी काफी रूचि हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें एवं दसवें भाव के स्वामी की परस्पर दृष्टि पड़ रही है। तकनीकि या इंजीनियरिंग जैसे व्यवहारपरक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह अत्यंत अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि तथा अवधारक स्मरण शक्ति से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आप आधुनिक तकनीकियों को सीखने के लिए काफी उत्सुक हो सकते हैं, जो कि बहुत बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन में उपयोगी हो सकता है। अतः आप तकनीकि या इंजीनियरिंग की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त व्यापार प्रबंधन और विधि–अध्ययन जैसे विषय भी आपको आकर्षित कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें भाव का स्वामी दसवें भाव में उपस्थित है। किसी व्यवहारपरक क्षेत्र में उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु यह अत्यंत अनुकूल योग है। आप बहुत बुद्धिमान तथा अवधारक स्मरण शक्ति से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार कोई भी व्यावसायिक कोर्स अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से प्राप्त करने में सक्षम होंगे। आप आधुनिक तकनीकियों को सीखने के लिए काफी उत्सुक हो सकते हैं, जो कि बहुत बड़े पैमाने पर औद्योगिक उत्पादन में उपयोगी हो सकता है। अतः आप तकनीकि या इंजीनियरिंग की शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त व्यापार प्रबंधन और विधि–अध्ययन जैसे विषय भी आपको आकर्षित कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, नौवें एवं दसवें भाव के स्वामी की युति है। तकनीकि या इंजीनियरिंग जैसी व्यवहारपरक शिक्षा प्राप्त करने के लिए यह बहुत अनुकूल योग है। आप कुशाग्र बुद्धि, अवधारक स्मरण शक्ति, उत्तम प्रकृति तथा दैवीय ज्ञान से परिपूर्ण होंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार किसी भी व्यावसायिक पाठ्यक्रम को अत्यंत कम प्रयासों में ही आसानी से पूर्ण करने में सक्षम होंगे। आपको कुटनीतिक कार्यों, विदेशी मामले अथवा आयात–निर्यात में अधिक रूचि हो सकती है। इसके अतिरिक्त आप धर्म, दर्शन आदि में भी काफी रूचि ले सकते हैं। आप किसी धार्मिक या सांस्कृतिक उद्देश्य की पूर्ति के लिए किसी दूरस्थ स्थान पर अथवा विदेश भी जा सकते हैं।

उच्च/ब्यावहारिक शिक्षा और शोध (नौवें भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, चौथे एवं नौवें भाव के स्वामी परस्पर राशि–परिवर्तन कर रहे हैं। यह विशिष्ट शिक्षा प्राप्त करने के लिए अत्यंत अनुकूल योग है, क्योंकि चौथा भाव शिक्षा का कारक है, जबकि नौवां भाव उच्च शिक्षा को दर्शाता है। आपमें बहुत अच्छी प्रवीणता विद्यमान होगी तथा आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे। आप अपनी रूचि के अनुसार किसी क्षेत्र में शोध कार्य भी कर सकते हैं। जैसाकि चौथा भाव घर/स्थानीय परिवेश को तथा नौवां भाव दूरस्थ स्थान या विदेश को दर्शाता है। अतः आपको अपनी सामान्य शिक्षा अथवा उच्च शिक्षा के लिए ऐसे स्थानों पर जाना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, पांचवें तथा नौवें भाव के स्वामी की परस्पर एक दूसरे पर दृष्टि पड़ रही है। अच्छी शिक्षा प्राप्ति के लिए यह बहुत लाभदायक योग है, जैसाकि पांचवा भाव योग्यता को एवं नौवां भाव उच्च शिक्षा को दर्शाता है। आपमें बहुत अच्छी दक्षता विद्यमान होगी तथा आप उच्च शिक्षा ग्रहण करेंगे। जैसाकि पांचवां भाव व्यावहारपरक शिक्षा को एवं नौवां भाव दूरस्थ स्थान या विदेश को भी दर्शाता है। अतः आप अपनी व्यावसायिक शिक्षा किसी प्रतिष्ठित विदेशी संस्थान से प्राप्त करेंगे।

शिक्षा की संभावना और रूझान के क्षेत्र (बुध के भिन्नाष्टक वर्ग से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध के भिन्नाष्टक–वर्ग में, दूसरे भाव में शुभ बिन्दु काफी संख्या (7 या 8) में हैं। यह एक अनुकूल योग है। आपका शिक्षा के प्रति अधिक रूझान होगा तथा आप में शैक्षिणिक दक्षता विद्यमान होगी। आपको वाक्पटुता का वरदान प्राप्त होगा तथा आप वित्तिय सौदों के मामले में बहुत विश्वसनीय होंगे।

ऐसी शिक्षा जो बाद में ब्यवसाय में काम आये (दसवें भाव से) –

आपकी जन्मकुण्डली में, दसवें और पांचवें भाव के स्वामी की परस्पर दृष्टि पड़ रही है। जैसाकि दसवां भाव ज्ञान का कारक है तथा पांचवां भाव गुण या योग्यता को दर्शाता है। अतः यह बहुत ही अनुकूल संकेत है। यह योग ये सुनिश्चित करता है कि आपको अच्छी शिक्षा प्राप्त होगी तथा अनौपचारिक अध्ययन भी करेंगे, जिसका उपयोग आप अपने व्यावसायिक क्षेत्र में सम्पूर्ण कार्यकाल के दौरान प्रभावपूर्ण ढंग से करेंगे।

शिक्षा की गुणवत्ता और विस्तार (चर्तुविशांश वर्ग कुण्डली से) –

आपके चतुर्विशांश कुण्डली (जिसका उपयोग विशेष रूप से शिक्षा को विचारने के लिए किया जाता है) में, एक केन्द्र भाव का स्वामी एक त्रिकोण भाव में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप व्यवहारपरक क्षेत्र में शिक्षा जारी रख सकते हैं, जिसका संबंध तकनीकि या इंजीनियरिंग से हो सकता है।

आपके चतुर्विशांश कुण्डली (जिसका उपयोग विशेष रूप से शिक्षा को विचारने के लिए किया जाता है) में, शुक्र लग्न से ग्यारहवें भाव में स्थित है। आप शिक्षा के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। संभवतः आप किसी प्रसिद्ध व प्रतिष्ठित संस्थान से उच्च शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। प्रबल संभावना है कि आपकी शिक्षा का कुछ संबंध इंजीनियरिंग, व्यापार प्रबंधन, नेत्र संबंधी, फैशन डिजाइनिंग आदि जैसे क्षेत्रों से हो सकता है।

भिन्नाष्टक वर्ग में बिन्दुओं की कुल संख्या से शिक्षा की संभावना का आकलन –

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। यह आपको उपयोगी सूचना को एकत्र करने के मामले में बुद्धिमान, सौम्य और सजग बनाएगा तथा आप उनका उपयोग प्रभावशाली रूप से व उद्देश्यपूर्ण ढंग से करने में सक्षम होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, दूसरे भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आपका शिक्षा के प्रति रूझान अधिक होगा तथा आपमें शैक्षिणिक दक्षता विद्यमान होगी। आपको वाक्पटुता का वरदान प्राप्त होगा तथा आप आर्थिक सौदों के मामले में बहुत ही विश्वसनीय होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, छठवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी रूचि होगी तो आप रोगों और उनके उपचार के बारे में औपचारिक या अनौपचारिक अध्ययन के द्वारा काफी ज्ञान व जानकारी प्राप्त करेंगे। यदि आप एक निपुण चिकित्सक नहीं भी होते हैं तो भी आपके व्यवसाय का अथवा शौक भी का संबंध आधुनिक या वैकल्पिक दवाओं से हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, आठवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आपको ज्योतिषशास्त्र, हस्तरेखाशास्त्र, अंक विज्ञान आदि जैसे गूढ़ विषयों में अधिक रूचि हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, ग्यारहवें भाव में शुभ बिन्दुओं (शिक्षा के लिए अनुकूल ग्रहों के द्वारा दिये गए योगदान से प्राप्त) की कुल संख्या बहुत ही उत्तम है। यह एक अनुकूल योग है। आपका विभिन्न विषयों में गहन रूझान होगा, जिसके बारे में आप ज्ञान व जानकारी एकत्र करेंगे। जो कि आपको अपने मित्रों व परिचितों के मध्य आकर्षण का केन्द्र बनाने में मदद करेगा। वे लोग आपके विचारों को महत्व देंगे तथा आवश्यकता पड़ने पर कुछ मसलों पर आपसे सूझाव भी लेंगे।

ब्यवसाय (रोजगार) की संभावनाओं का ज्यातिषिय विश्लेषण

आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य लग्न से दसवें भाव में उपस्थित है। अतः आप अत्यंत कर्मठ होंगे एवं अपने सभी प्रयत्नों में सफल होंगे। आपको सरकारी विभागों, दूतावासों आदि से संरक्षण प्राप्त होगा तथा अपनी मध्य आयु में आपको सम्मान भी प्राप्त होगा। आपकी ख्याति सुरक्षित रहेगी। आपमें नेतृत्व करने का गुण विद्यमान होगा तथा आप दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत होंगे। आपका उठना–बैठना उच्च स्तरीय लोगों के साथ होगा तथा आप अपने विभिन्न उपायों व प्रयासों से धन अर्जित करेंगे। आपको सराहना प्राप्त होगी तथा आपका नाम व यश चारों तरफ फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल लग्न से दसवें भाव में उपस्थित है। अतः आप बहुत बहादुर व्यक्ति होंगे। यदि आप पुलिस या सुरक्षा या इसी प्रकार की किसी दूसरी सक्रिय नौकरी में हैं तो आप काफी अच्छा कार्य करेंगे तथा अधिकार व शक्ति वाले पद प्राप्त करेंगे। आपमें स्वतन्त्रता की उच्च भावना होगी तथा विजय की अभिलाषा होगी। यदि मंगल उच्चस्थ या अपने भाव में नहीं है तो आप छिद्रान्वेषी तथा झगड़ालू स्वभाव के हो सकते हैं। आप दूसरों के प्रति निर्दयी होकर खुशी महसूस कर सकते हैं। यदि मंगल किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबंधित है या मंगल पर उसकी दृष्टि पड़ रही है तो आप बदनामी और झूठी निन्दा के शिकार हो सकते हैं तथा आपका जीवन संघर्ष और अशांति से भरा हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र लग्न से दसवें भाव में उपस्थित है। अतः आप अत्यंत भाग्यशाली होंगे, क्योंकि यह जीवन में मनोरंजन, सुख–सुविधा और खुशहाली प्राप्त करने के लिए सर्वोत्तम योग है। आपको भविष्यवाणी करने का वरदान प्राप्त होगा तथा इस कला में आपकी रूचि भी होगी। आप पवित्र धार्मिक ग्रंथों तथा अन्य प्राचीन धर्मग्रन्थों के ज्ञाता होंगे, जिससे आप अपनी आजीविका अर्जित करेंगे। यदि शुक्र उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित है अथवा किसी नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ जुड़ा हुआ है तो आपको कलात्मक क्षेत्रों में भी सफलता प्राप्त हो सकती है। आपको अविवाहित लोगों के साथ प्रेम–प्रसंगों में सफलता मिल सकती है तथा खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति लग्न से दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप अत्यंत भाग्यशाली होंगे क्योंकि यह जीवन में समृद्धि, खुशहाली और स्पर्द्धा के लिए सर्वोत्तम योग है। आप विभिन्न स्रोतों से आय का उपार्जन करेंगे, मानसिक कार्यों से धन अर्जित करेंगे, सरकारी अधिकारियों से सम्मान व संरक्षण प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवन में बहुत उन्नति करेंगे, विश्वास और ख्याति अर्जित करेंगे। आपका यश चिर स्थायी होंगा। आपमें नेतृत्व का गुण विद्यमान होगा, आप एक गुणवान व्यक्ति होंगे तथा धर्मों के प्रति आपकी गहरी आस्था होगी। आप कानून को मानने वाले जिम्मेदार नागरिक होंगे तथा समाज में लोग आपका बहुत सम्मान करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि लग्न से दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप धैर्य एवं उद्यमशीलता के प्रतिरूप होंगे। आप अनुशासन का सख्ती से पालन करने वाले, कठोरता से काम लेने वाले तथा उद्देश्यों के प्रति

दृढ़ता आपके जीवन का प्रतीक होगा। यदि शनि उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित है तो आप निश्चित रूप से जीवन में उच्च पद की प्राप्ति करेंगे। किन्तु यदि शनि वक्री या नीचस्थ या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ जुड़ा हुआ है या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की शनि पर दृष्टि पड़ रही है तो आपको असफलता और अपमान का सामना करना पड़ेगा तथा अचानक नीचे गिरने का भी खतरा हो सकता है। आपके सार्वजनिक कार्य असफल हो सकते हैं और भारी नुकसान के साथ–साथ आपका मान भी घट सकता है। अतः आपको अत्यंत सावधान व सचेत रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि चंद्र–राशि से दसवें भाव पर दृष्टि डाल रहा है। अतः आप धैर्य एवं उद्यमशीलता के प्रतिरूप होंगे। आप अनुशासन का सख्ती से पालन करने वाले, कठोरता से काम लेने वाले तथा उद्देश्यों के प्रति दृढ़ता आपके जीवन का प्रतीक होगा। यदि शनि उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित है तो आप निश्चित रूप से जीवन में उच्च पद की प्राप्ति करेंगे। किन्तु यदि शनि वक्री या नीचस्थ या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ जुड़ा हुआ है या किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह की शनि पर दृष्टि पड़ रही है तो आपको असफलता और अपमान का सामना करना पड़ेगा तथा अचानक नीचे गिरने का भी खतरा हो सकता है। आपके सार्वजनिक कार्य असफल हो सकते हैं और भारी नुकसान के साथ–साथ आपका मान भी घट सकता है। अतः आपको अत्यंत सावधान व सचेत रहना चाहिए।

आपकी जन्मकुण्डली में दशमेश शनि के साथ जुड़ा हुआ है। अतः आप आप अपने व्यवसाय के संदर्भ में अधिक भाग्यशाली नहीं होंगे। यदि शनि उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है तो संभवतः आपको अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ सकता है तथा कठिन संघर्ष भी करना पड़ सकता है। आपका पेशा जिम्मेदारी और अधीनस्थता से भरा हो सकता है। आपके कार्यस्थल का परिवेश अधिक अनुकूल नहीं हो सकता है तथा आपका कार्य–समय भी सुविधाजनक नहीं हो सकता है। आपका पारिश्रमिक आपके कार्य के अनुकूल नहीं हो सकता है तथा आप काफी हताश महसूस कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र–राशि से दशमेश सूर्य के साथ जुड़ा हुआ है। अतः आपको अपने से श्रेष्ठ लोगों तथा सरकारी अधिकारियों से भी सहयोग और लाभ प्राप्त होगा। संभवतः आप सरकारी या अर्द्ध–सरकारी संस्थानों में सेवारत हो सकते हैं अथवा अपने रोजगार/व्यवसाय के सम्बन्ध में आपको उच्च सरकारी अधिकारियों के साथ कारोबार करना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में चंद्र–राशि से दशमेश शुक्र के साथ जुड़ा हुआ है। अतः आप अपने व्यवसाय के संदर्भ में अत्यंत भाग्यशाली होंगे। आप बहुत ही सुन्दर और आरामदायक परिवेश में कार्य करेंगे तथा समाज के उच्च व प्रभावशाली लोगों के सम्पर्क में रहेंगे। आप अत्यधिक आय अर्जित करेंगे तथा आरामदेह व आधुनिक जीवन व्यतीत करेंगे। प्रदर्शन वाले व्यवसाय और शोरूम आपको अत्यधिक आकर्षित करेंगे तथा आपके व्यवसाय का कुछ संबंध प्रदर्शन से हो सकता है।

आपकी जन्मकुडली में दशमेश बृहस्पति पर तृतीयेश सूर्य की दृष्टि पड़ रही है। संभवतः कई बार आपका स्थानान्तरण हो सकता है या आप नौकरी बदल सकते हैं। आप अच्छी शिक्षा प्राप्त करेंगे, अपने पेशे के सिलसिले में आप अनेक यात्राएं करेंगे तथा लम्बे समय तक विभिन्न स्थानों पर निवास करेंगे। जैसाकि बृहस्पति सप्तमेश भी है तथा यह वक्री है, इसलिए आपका जीवनसाथी कुछ–कुछ सनकी स्वभाव का हो सकता है तथा आपको अपने धूर्त सहयोगियों के कड़े विरोध का सामना भी करना पड़ सकता है। अतः आपको सावधान व सतक्र रहना चाहिए क्योंकि आपको किसी मुकदमें में फंसने की संभावना है। यदि बृहस्पति कुम्भ राशि में स्थित है तो आपको अपने खान–पान पर ध्यान देना चाहिए और अपने स्वास्थ्य का उचित ख्याल रखना चाहिए, क्योंकि आपको उच्च रक्चाप से पीड़ित होने की संभावना है।

आपकी जन्मकुण्डली में दशमेश (पेशा) बृहस्पति एकादशेश (आय) मंगल की दृष्टि पड़ रही है। अतः आप अपने पेशे और आय के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। जैसाकि मंगल षष्टेश (नौकरी) भी है, इसलिए संभवतः आप किसी नौकरी में कार्यरत हो सकते हैं। आप अपने वरिष्ठ एवं सरकारी अधिकारियों से प्रत्यक्ष सहयोग अथवा अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त कर सकते हैं तथा आप बहुत कम समय पदोन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आप प्रतियोगी परीक्षाओं में भी सफलता प्राप्त कर सकते हैं तथा प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर सकते हैं। आप सक्रिय, कर्मठ तथा उत्साह से परिपूर्ण होंगे। आप समय पर अपने वादों को पूरा करेंगे और आपकी विश्वसनीयता व सम्मान में हमेशा वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न से दशमेश लग्न से अष्टमेश के साथ जुड़ा हुआ है। अतः आपको कई बार अपनी नौकरी बदलनी पड़ सकती है अथवा आपका तबादला हो सकता है। ऐसा परिस्थितियों में परिवर्तन के कारण, आकस्मिक या अप्रत्याशित रूप से हो सकता है। आप निराश अथवा परेशान हो सकते हैं, क्योंकि आपको तैयारी के लिए पर्याप्त समय नहीं मिल सकता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य आजीविका का गौण कारक है। अतः आप सरकारी नौकरी में कार्यरत हो सकते हैं या सरकार के साथ संबंधित कार्यों में सफल हो सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित है तो आप राजनीति से जुड़ सकते हैं या यहां तक कि राजदूत भी बन सकते हैं। आप आधुनिक या पारम्परिक दवाओं या हड्डी के रोगों का उत्कृष्ट ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं अथवा नेत्र संबंधी विषयों में आपकी विशेष रूचि हो सकती है। सोना, तांबा, गहनें, घड़ियां व दसरे चमकीले/सुनहरे धातुओं आदि का व्यापार आपके लिए अनुकूल होगा। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य अच्छी स्थिति में नहीं है तो आप चावल, गेंहू, उनी वस्तुओं, जूट उत्पाद, लकड़ियों के फर्नीचर आदि जैसे उपभोग योग्य वस्तुओं का कारोबार कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र आजीविका का प्राथमिक कारक है, इसलिए आपकी रूचि ललित कलाओं एवं कलात्मक कार्यों में अधिक होगी। आपको फोटोग्राफी, सिनेमा, दूरदर्शन तथा अन्य मनोरंजन के क्षेत्र, ब्यूटी पार्लर,

पब आदि आकर्षित कर सकते हैं। आपको उन चीजों से अधिकाधिक रूचि होगी जो जीवन को सुन्दर व सजीव बनाती हों। आपके पेशे का कुछ संबंध कम्प्यूटर व इलेक्ट्रानिक्स, वस्त्र, कपड़े, पोशाक, होजरी, आभूषण, सौन्दर्य प्रसाधन, इत्र, फूल, फर्नीचर, आटोमोबाइल, विलासिता की वस्तुएं, मादक पदार्थ, तम्बाकू, गन्ना/चीनी, रबर, पेट्रोलियम यौगिक, मसाले, मिट्टी/चीनी मिट्टी के बर्तन आदि से हो सकता है। यदि शुक्र केवल किसी नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ जुड़ा हुआ है या उसकी शुक्र पर दृष्टि पड़ रही है तो आप नशे की कुछ बुरी लतों के आदि हो सकते हैं।

कालचक्र दशा अंश और जीव राशि से ब्यवसाय (रोजगार) का विश्लेषण

आपकी कालचक्र दशा अंश राशि – मिथुन

आपकी कालचक्र दशा जीव राशि – कुम्भ

आपकी जन्मकुण्डली में मंगल की आपके जीव–राशि (जीवन) पर दृष्टि पड़ रही है, अतः अपने बारे में आपके विचार बहुत उंचे होंगे और उम्मीद करेंगे कि आपके दायरे के लोग आपके साथ उचित सम्मान से व्यवहार करें। संभवतः आप बहुत जल्दी रूठ सकते है और चाहेंगे कि अपराधी को पर्याप्त रूप से सजा मिले। यदि मंगल के साथ कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित है या उसकी मंगल पर दृष्टि पड़ रही है तो आपकी स्थिति में सुधार होता रहेगा। किन्तु यदि मंगल के साथ कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित है या उसकी मंगल पर दृष्टि पड़ रही है तो आपकी स्थिति और खराब हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में शनि की आपके जीव–राशि (जीवन) पर दृष्टि पड़ रही है, अतः आप गम्भीर प्रकृति के व्यक्ति होंगे। संभवतः आप उदासीन और विचारमग्न स्वभाव के हो सकते हैं। यदि शनि के साथ कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह स्थित है या उसकी शनि पर दृष्टि पड़ रही है तो आप अनुशासित प्रकृति के बहुत उद्यमी व्यक्ति होंगे। किन्तु यदि शनि के साथ कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह स्थित है अथवा उसकी शनि पर दृष्टि पड़ रही है तो आपका दिमाग कुछ शोक व दर्द के कारण प्रभावित हो सकता है। आप निराशावादी भाव विकसित कर सकते हैं तथा आम लोगों के प्रति बहुत अविश्वासी हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में आपकी जीव–राशि (जीवन) दो घोर अशुभ ग्रहों मंगल व शनि से संयुक्त रूप से प्रभावित है, अतः आपका दिमाग क्रोध व घृणा से भरा हो सकता है। आपमें कठोर व निष्ठुर शब्दों के द्वारा किसी को अपमानित करने की आदत हो सकती है, जिसके कारण आप अपनी बहुत कठिनाई से अर्जित की हुई लोकप्रियता खो सकते हैं। जब तक कि कोई शुभ ग्रह इस राशि में स्थित ना हो या उसकी इस पर दृष्टि ना पड़ रही हो, तो संभवतः आपको गहरी मानसिक वेदना से पीड़ित होना पड़ सकता है, जो कि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में काल चक्र दशा अंश कुम्भ राशि में है। आपके लिए यह अत्यंत अनुकूल योग है। आप निश्चित रूप से अत्यंत सफल व्यावसायी होंगे। यदि अंश राशि का स्वामी आपकी कुण्डली में अच्छी स्थिति में है

तो आप असाधारण रूप से तेजोमय उन्नति कर सकते हैं तथा अविश्वसनीय रूप से काफी कम समय में आप वांछनीय स्थान प्राप्त कर सकते हैं। आपका नाम व यश चारों ओर फैलेगा। आपके मित्रों व परिचितों का दायरा काफी विस्तृत होगा और आपके कई मित्र उच्च स्थानों पर होंगे।

विवाह/प्रेम संबंधों से संबंधित संभावनाओं का आकलन

आपकी जन्मकुण्डली में शनि के भिन्नाष्टक वर्ग में, शुक्र से सातवें भाव में शुभ बिन्दुओं की संख्या 3 (या कम) है। शुक्र के नैसर्गिक कारकों– विवाह व विवाहित जीवन की खुशियों के संदर्भ में यह भाग्यशाली योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में अधिक भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। वह बहुत आकर्षक नहीं होंगी और ना ही किसी प्रतिष्ठित परिवार से होंगी। इसके अतिरिक्त उनमें व्यवहारकुशलता, सुसंस्कारीता व परिष्कृत रूचियों का अभाव हो सकता है। यद्यपि वह उद्यमशील हो सकती हैं, फिर भी आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय नहीं हो सकता है, जैसाकि वह विवादप्रिय तथा हठी प्रकृति की हो सकती हैं तथा यथार्थ से बिल्कुल विपरीत वृथा–अभिमानी स्वभाव की हो सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र गुरु के साथ स्थित (या गुरु की उस पर दृष्टि पड़ रही है) है, जबकि चन्द्रमा बुध के साथ जुड़ा हुआ है (या बुध की उस पर दृष्टि पड़ रही है)। यह एक अत्यंत शुभ इष्ट–योग है। आप अपने विवाह तथा वैवाहिक जीवन की खुशहाली के संदर्भ में अत्यंत भाग्यशाली होंगे। खुशहाली की किरणें आपके आस–पास सदैव जगमगाती रहेंगी औा आप सुख के सागर में सदैव गोते लगाते रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में आठवें भाव का स्वामी चौथे भाव में उपस्थित है। यह उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। जबकि यह वक्री है। अतः यह अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ सौम्य संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है तो यह दाम्पत्य जीवन की खुशियों में वृद्धि करने के लिए अनुकूल नहीं है, क्योंकि संभवतः अप्रत्याशित घटनाओं तथा परिस्थितियों में तीव्र उतार–चढ़ाव के कारण शांति का अभाव हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, नैसर्गिक शुभ ग्रह (बृहस्पति) की दृष्टि दूसरे नैसर्गिक शुभ ग्रह (शुक्र) पर पड़ रही है। जबकि बृहस्पति किसी त्रिक भाव (छठें या आठवें या बारहवें) का स्वामी नहीं है। शुक्र विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह है। अतः यह अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। वह आपके प्रति बहुत विश्वसनीय तथा वफादार होंगी और सामान्यतः सभी मामलों में आपका उनसे बहुत नजदीकी संबंध होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें भाव का स्वामी नैसर्गिक शुभ ग्रह बृहस्पति के साथ स्थित है। जबकि बृहस्पति किसी त्रिक भाव (छठें या आठवें या बारहवें) का स्वामी नहीं है। अतः यह अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। वह आपके प्रति बहुत विश्वसनीय तथा वफादार होंगी और सामान्यतः सभी मामलों में आपका उनसे बहुत घनिष्ठ लगाव होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, सातवें भाव का स्वामी लग्न से केन्द्र भाव में स्थित है। इसके अतिरिक्त यह एक

नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ जुड़ा हुआ है तथा यह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के आधिपत्य वाले नवांश राशि में भी स्थित है। अतः यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कोई प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में बहुत भाग्यशाली होंगे। वह पवित्र और समर्पित महिला होंगी तथा आपके दाम्पत्य जीवन को परमसुखमय और आनन्दमय बनाने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ेंगी। वह सदैव आपके लिए गर्व व आनन्द का स्रोत बनी रहेंगी।

आपकी कुण्डली में शुक्र जिस राशि में स्थित है उसका स्वामी वक्री है। यह एक अनुकूल योग है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपका अपने जीवनसाथी के साथ घनिष्ठ व आत्मीय संबंध होगा, जैसाकि आप अपने जीवनसाथी के साथ एकांत में व्यवधानरहित समय बिताकर आनन्द प्राप्त करने के बहुत शौकीन होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में विवाह का नैसर्गिक कारक ग्रह शुक्र छठवें भाव के स्वामी के साथ स्थित है। अतः यह एक अनुकूल योग नहीं है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आप अपने जीवनसाथी के संदर्भ में अधिक भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं। वह रोगी, मनमौजी तथा तुनकमिजाज प्रकृति की हो सकती हैं, जिससे आपके वैवाहिक जीवन में सुख–शांति का अभाव हो सकता है। आपके वैवाहिक जीवन की अवधि भी बहुत लम्बी नहीं हो सकती है।

यात्रा, भ्रमण और विदेश यात्रा

आपकी जन्मकुण्डली में, चंद्रमा नौवें भाव में उपस्थित है। आपके भाग्य में दूरस्थ स्थानों की अनेक यात्राएं करने का योग है। या फिर आपको अपने व्यवसाय के कारण दूरस्थ स्थानों की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, भले ही वह समय के अनुसार कभी–कभी ही हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, बुध नौवें भाव में उपस्थित है। आपके भाग्य में दूरस्थ स्थानों की अनेक यात्राएं करने का योग है। या फिर आपको अपने व्यवसाय के कारण दूरस्थ स्थानों की यात्राएं करनी पड़ सकती हैं, भले ही वह समय के अनुसार कभी–कभी ही हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, बहुत सारे ग्रह (चार या चार से अधिक) किसी उभय–राशि में स्थित हैं। अतः यह दर्शाता है कि आप अत्यधिक यात्राएं करेंगे, जिनमे अनेक कम दूरी वाली व अनेक लम्बी दूरी वाली यात्राएं होंगी। यदि कई सारे ग्रह चरार्द्ध या चर राशियों के आधे समीप में स्थित हैं तो यह प्रवृति और भी अधिक निश्चित हो जाएगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश उभय–राशि के उत्तरार्द्ध (चरार्द्ध या चर राशियों से आधी नजदीकी) में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप अनेक परिवर्तन करेंगे एवं प्रायः समीपस्थ स्थानों की यात्राएं करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश उभय–राशि के उत्तरार्द्ध (चरार्द्ध या चर राशियों से आधी नजदीकी) में स्थित है। यह दर्शाता है कि आप अनेक परिवर्तन करेंगे एवं प्रायः समीपस्थ स्थानों की यात्राएं करेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, अष्टमेश चौथे भाव में उपस्थित है अथवा उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है और अष्टमेश ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक प्रतिकूल योग है जो कि आकस्मिक स्थानान्तरण की संभावना को दर्शाता है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको कई बार अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है और आप लम्बे समय तक एक स्थान पर नहीं रह सकते हैं। या फिर, ऐसी भी संभावना है कि आपका व्यवसाय/नौकरी स्थानन्तरणीय हो अथवा कई बार आप अपने व्यवसाय/नौकरी में परिवर्तन कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आपको अपना निवासस्थान बदलना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, एकादशेश चौथे भाव में उपस्थित है अथवा उसकी इस पर दृष्टि पड़ रही है और एकादशेश ना तो उच्चस्थ है और ना ही अपने भाव या अपने नक्षत्र में स्थित है। अतः यह एक प्रतिकूल योग है जो कि आकस्मिक स्थानान्तरण की संभावना को दर्शाता है। यदि आपकी कुण्डली में प्रतिकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो आपको कई बार अपना निवास स्थान बदलना पड़ सकता है और आप लम्बे समय तक एक स्थान पर नहीं रह सकते हैं। या फिर, ऐसी भी संभावना है कि आपका व्यवसाय/नौकरी स्थानन्तरणीय हो अथवा कई बार

आप अपने व्यवसाय/नौकरी में परिवर्तन कर सकते हैं, जिसके परिणामस्वरूप आपको अपना निवासस्थान बदलना पड़ सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 60 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह आपके किसी निकट स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप समृद्ध होंगे एवं काफी लम्बे समय तक रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 120 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप समृद्ध होंगे एवं काफी लम्बे समय तक रहेंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 90 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह किसी आकस्मिक और अप्रत्याशित घटनाक्रम के कारण आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो आपके व्यवसाय में किसी संभावित कारण से आघात लग सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, 150 डिग्री की दृष्टि में शामिल है। यह किसी आकस्मिक व अप्रत्याशित घटनाक्रम के कारण आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो संभावित कारण परिस्थितियों में आकस्मिक परिवर्तन, दुर्घटना या अशुभ घटनाएं आदि हो सकती है।

आपकी जन्मकुण्डली में, तीव्र गति से चलने वाला ग्रह (जो वक्री नहीं है) एक दूसरे मंद चलने वाले ग्रह के साथ, जिस पर दृष्टि निर्माण के लिए आवश्यक स्थिति की यथार्थ डिग्री को इसने अभी प्राप्त नहीं किया है, विपरीत दृष्टि में शामिल है। यह परिस्थितियों में कुछ परिवर्तन होने के कारण आपके किसी दूरस्थ स्थान (आपके जन्म स्थान या मूल–निवास स्थान से) पर स्थानान्तरित होने की संभावना को व्यक्त करता है, जहां आप काफी लम्बे समय तक रह सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो ऐसा आपके विवाह का निश्चित निर्णय हो जाने के कारण, साझेदारी या सहयोग में अपना नया व्यवसाय स्थापित करने के कारण

अथवा किसी दूरस्थ स्थान (या विदेश) में किसी महत्वपूर्ण दूतकार्य/उद्देश्य के कारण हो सकता है।

शुभ दिशा का चुनाव ? यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं तो आपके लिए अनुकूल दिशा दक्षिण–पश्चिम होगी।

कुण्डली में लागू होने वाले ग्रह योग (ग्रहयुति)

कुण्डली में लागू होने वाले महत्वपूर्ण योग

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश, लग्नेश की राशि का स्वामी, पूर्व कथित राशि के स्वामी की राशि का स्वामी और इसी राशि के स्वामी की नवांश राशि का स्वामी– सभी उच्चस्थ हैं या केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित हैं। समग्र रूप से इस अत्यंत अनुकूल योग को कल्पद्रुम योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, यद्यपि आप बहुत मजबूत और शक्तिशाली होंगे, तो भी आप एक धार्मिक और सदाचारी व्यक्ति होंगे। आप विरोध या संघर्ष की स्थिति में बिल्कुल भी भयभीत नहीं होंगे और इस प्रकार के विस्तार की स्थिति में, आप आगे आकर इसे समाप्त करने के लिए मुकाबला करेंगे, फिर भी आप दयालु और क्षमाशील प्रकृति के होंगे। आप असीमित धन एवं प्रभाव का आनन्द लेंगे तथा आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और चंद्रमा में से कोई भी उच्च राशि या अपनी राशि में स्थित नहीं है तथा चंद्रमा लग्न से केन्द्रीय भाव में स्थित नहीं है। इसके अतिरिक्त, वे परस्पर प्रतिकूल भावों (छठें–आठवें) में स्थित हैं, जहां कोई भी अन्य नैसर्गिक शुभ ग्रह (शुक्र या बुध) इन तीनों भावों (छठें, सातवें और आठवें) में से किसी भी भाव में स्थित नहीं है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे शकट योग कहा जाता है। यद्यपि, यह समान नाम के नभश योग से एक भिन्न योग है (जबकि यह भी प्रतिकूल योग है, तथा इसके परिणाम भी काफी समान हैं)। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप बहुत भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं तथा आर्थिक रूप से आप बहुत सुविधाजनक परिस्थितियों में नहीं हो सकते हैं। आप निम्न स्तर के वाहन– तिपहिया वाहन, रिक्शा या ठेलागाड़ी तक चलाकर अपनी आजीविका कमा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और चंद्रमा में से कोई भी उच्च राशि या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है, इसके अतिरिक्त, वे परस्पर प्रतिकूल भावों (छठें–आठवें) में स्थित हैं, जहां कोई भी अन्य नैसर्गिक शुभ ग्रह (शुक्र या बुध) इन तीनों भावों (छठें, सातवें और आठवें) में से किसी भी भाव में स्थित नहीं है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे शकट योग कहा जाता है। यद्यपि, यह समान नाम के नभश योग से एक भिन्न योग है (जबकि यह भी प्रतिकूल योग है, तथा इसके परिणाम भी काफी समान हैं)। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आप बहुत भाग्यशाली नहीं हो सकते हैं तथा आर्थिक रूप से आप बहुत सुविधाजनक परिस्थितियों में नहीं हो सकते हैं। आप निम्न स्तर के वाहन– तिपहिया वाहन, रिक्शा या ठेलागाड़ी तक चलाकर अपनी आजीविका कमा सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश तीसरे, छठें, आठवें और बारहवें भाव के अलावा अन्य किसी भाव में स्थित है, चतुर्थेश का राशिपति चौथे भाव में स्थित है। इस बहुत अनुकूल परिवर्तन योग को महा योग कहा जाता है।

आपकी कुण्डली में इस शुभ योग की उपस्थिति के कारण, धन की देवी आप पर कृपा बरसाएंगी और आप अधिकारियों व राज्य से सम्मान तथा लाभ प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतान, संबंधी और मित्रों के साथ आरामदायक व आधुनिकतापूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। समाज में आप बहुत सम्मानित होंगे और आपकी विश्वसनीयता, सम्मान, यश व प्रतिष्ठा में हमेशा वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, नवमेश तीसरे, छठें, आठवें और बारहवें भाव के अलावा अन्य किसी भाव में स्थित है, नवमेश का राशिपति नौवें भाव में स्थित है। इस बहुत अनुकूल परिवर्तन योग को महा योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस शुभ योग की उपस्थिति के कारण, धन की देवी आप पर कृपा बरसाएंगी और आप अधिकारियों व राज्य से सम्मान तथा लाभ प्राप्त करेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतान, संबंधी और मित्रों के साथ आरामदायक व आधुनिकतापूर्ण जीवन व्यतीत करेंगे। समाज में आप बहुत सम्मानित होंगे और आपकी विश्वसनीयता, सम्मान, यश व प्रतिष्ठा में हमेशा वृद्धि होगी।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश नीच का है या एक शत्रु की राशि में स्थित है अथवा एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है या एक बुरे षष्ठीआंश में स्थित है। यह योग काफी प्रतिकूल है, इसे बन्धुभिसत्याक्त योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुंछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो इस योग के होने के कारण आपके संबंधियों और मित्रों द्वारा जीवन में कभी आपका परित्याग किया जा सकता है– भले ही आपकी कोई छोटी गलती हो या वास्तव में कोई गलती ना हो।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ युति है, तथा इसके साथ कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो संबद्ध है और ना ही इस पर दृष्टि है। इसके अतिरिक्त, लग्न में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही लग्न पर उसकी दृष्टि है। यह समग्र योग अपेक्षाकृत प्रतिकूल योग है, जिसे देह–कष्ट योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं है, तो आप आर्थिक रूप से सम्पन्न नहीं हो सकते हैं और/या परिस्थितिवश शारीरिक सुख–सुविधाओं से वंचित हो सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह– जो कि उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं है– आपके दूसरे भाव में स्थित है। द्वितीयेश या इसका नवांश–राशिपति एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है अथवा नीच या अस्त या ग्रसित होने के कारण कमजोर है अथवा लग्न कुण्डली या नवांश कुण्डली में एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह के साथ संबद्ध है। इस प्रतिकूल योग को दुर्मुख योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपका व्यक्तित्व आकर्षक नहीं हो सकता है। या फिर अथवा साथ ही, आपका स्वभाव चिड़चिड़ा हो सकता है, बहुत जल्दी क्रोधित होने की प्रवृति हो सकती है और कठोर व अपशब्दों का प्रयोग कर सकते हैं– जिसके लिए आपके अपने लोग तक आपको बहुत नापसन्द कर सकते हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्न मिथुन है और बुध आपका लग्नेश तथा चतुर्थेश भी है। कुण्डली में बुध की नैसर्गिक

अशुभ ग्रह के साथ युति (या बुध पर उसकी दृष्टि) है। यह एक अनुकूल योग नहीं है, इसे मातृ शत्रुत्व योग कहा जाता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो प्रबल संभावना है, कि किसी कारणवश (या बिना किसी प्रत्यक्ष कारण के) आप अपनी माता (या इसी प्रकार के अन्य किसी रिश्ते) के प्रति शत्रुतापूर्ण भाव रख सकते हैं और/या वह भी आपसे समान रूप से शत्रुता का भाव रख सकती हैं।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की चतुर्थेश के साथ युति है या उसपर इसकी दृष्टि है, जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह अस्त या ग्रसित नहीं है। यह एक अनुकूल योग है, इसे मातृ मूलत धन योग कहा जाता है। इस योग के होने के कारण, आपको अपनी माता से आर्थिक लाभ प्राप्त होगा।

आपकी जन्मकुण्डली में, तृतीयेश एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की नवांश–राशि में स्थित है और मंगल एक नैसर्गिक शुभ ग्रह की राशि में स्थित है। इसके अतिरिक्त, तृतीयेश की एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ युति है या उस पर इसकी दृष्टि है। समग्र रूप से यह एक अनुकूल योग है, इसे पराक्रम योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग के उपस्थित होने के कारण, आप साहस, दृढ़ संकल्प और इच्छाशक्ति से सम्पन्न होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है और इसका नवांश–राशिपति भी एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है। द्वितीयेश उच्चस्थ या अपनी राशि या अपने नक्षत्र में स्थित नहीं है। इसके अतिरिक्त, दूसरे भाव में कोई नैसर्गिक शुभ ग्रह ना तो स्थित है और ना ही दृष्टि डाल रहा है। यह एक बहुत प्रतिकूल ग्रह स्थिति है, इसे वाक्चलन योग कहते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो उच्चारण की दृष्टि से आपके बोलने में कुछ कमी हो सकती है– हकलाने या तुतलाने के कारण।

आपकी जन्मकुण्डली में, द्वितीयेश की एक नैसर्गिक शुभ ग्रह के साथ युति है तथा यह एक केन्द्र या त्रिकोण भाव में स्थित है। यह समग्र योग बहुत अनुकूल है, इसे युक्ति समन्वित वाग्मि योग कहा जाता है। आप वाक्पटुता की प्रतिभा से सम्पन्न होंगे तथा अपनी अकाट्य तर्कशक्ति और भाषण दक्षता के कारण सुविख्यात होंगे। अत्यधिक संभावना है कि आप सभाओं में अपनी चमक बिखेर सकते हैं और ख्याति अर्जित कर सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले अरिष्ट योग

आपकी जन्मकुण्डली में, बृहस्पति और शनि आपके चौथे भाव में स्थित हैं– जबकि बृहस्पति उच्चस्थ या अपने भाव में स्थित नहीं है। यह एक प्रतिकूल योग है– इसे अरिष्ट योग कहते हैं। आपके किसी एक संतान को अपने जीवनकाल में किसी समय कष्ट सहन करना पड़ सकता है तथा उसका स्वास्थ्य व सुख आपके पारिवारिक सदस्यों के लिए गंभीर चिन्ता का कारण बन सकता है। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपके किसी एक संतान की मानसिक स्थिति उसके जीवनकाल में किसी समय कुछ–कुछ बिगड़ सकती है।

कुण्डली में लागू होने वाले चन्द्र योग

जैसाकि एक ग्रह (सूर्य के अलावा) चंद्रमा से दूसरे भाव में उपस्थित है। यह सुनफा नामक ग्रह योग का निर्माण करता है। इस योग की उपस्थिति के कारण, आप अत्यंत बुद्धिमान होंगे, आपकी आय बहुत उत्तम होगी तथा बहुत धनवान होंगे। अपने संबंधियों और मित्रों के साथ आप आरामपूर्ण और आधुनिक जीवन का आनन्द लेंगे।

कुण्डली में लागू होने वाले रवि योग

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से बारहवें भाव में उपस्थित है। यह वोसि योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न कर रहा है। जैसा कि संबंधित ग्रह एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है, अतः यह एक शुभ योग है। इस समग्र योग को शुभ–वोसि योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आप स्थायी भाग्य, शक्ति, ज्ञान और यश से सम्पन्न होंगे। आप अत्यंत बुद्धिमान, चालाक और युक्तिपूर्ण होंगे। आप जो भी करेंगे, उसमें बहुत कुशल और दक्ष भी होंगे। आप विस्तारवादी विचार, आशावादी दृष्टिकोण, प्रसन्नचित्त प्रकृति और उदार प्रवृत्ति वाले व्यक्ति होंगे।जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में एक ग्रह (चंद्रमा के अलावा) सूर्य से बारहवें भाव में उपस्थित है। यह वोसि योग नामक ग्रह स्थिति उत्पन्न कर रहा है। जैसा कि संबंधित ग्रह एक नैसर्गिक अशुभ ग्रह है, अतः यह एक शुभ योग नहीं है। इस समग्र योग को पाप–वोसि योग कहा जाता है। आपकी कुण्डली में इस योग की उपस्थिति के कारण, आपका स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो सकता है और नेत्र–रोग से पीड़ित हो सकते हैं। आप बहुत सक्रिय या उर्जावान नहीं हो सकते हैं– जिसकी वजह से आप कुछ उत्तम अवसरों को गवां सकते हैं। आपका अपने वरिष्ठों या अधिकारियों से कुछ परेशानियां हो सकती हैं तथा संबंधित अधिकारियों की पूर्व सहमति या आवश्यक अनुमति के बिना कुछ गैर बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य करने से आपको जब्ती या आप पर जुर्माना लगाने के कारण कुछ हानियां हो सकती हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले नभश योग

आपकी कुण्डली में शूल योग नामक एक नभश योग मौजूद है। यह एक बहुत सराहनीय योग नहीं है और आप कई मामलों में बहुत सुखी नहीं हो सकते हैं। आप साहसी होंगे, खतरों में निडर होंगे तथा कठोर प्रवृत्ति अपना सकते हैं। आन्तरिक रूप से आप अति–महात्वाकांक्षी हो सकते हैं तथा कुछ हद तक स्वार्थी अथवा लाभ–उन्मुख भी हो सकते हैं। आप झगड़ालु प्रकृति तथा बहुत क्रोधी स्वभाव के हो सकते हैं एवं सीधी लड़ाई अथवा मुकद्मे लड़ने का आपको विशेष शौक हो सकता है। आपके अपने व्यवहार से, आप अपने ही लोगों के द्वारा अपमानित या तिरस्कृत किये जा सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रबल संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं, तो आपके साथ हिंसा अथवा दुखद अंत होने की संभावना है।

कुण्डली में लागू होने वाले धन योग

आपकी जन्मकुण्डली में, एक अत्यंत शुभ योग मौजूद है। अपने स्वयं के प्रयत्नों को निर्देशित करके तथा अपनी इच्छाशक्ति के वास्तविक शक्ति के आधार पर आप अपने समकालीनों से बहुत आगे निकल जाएंगे। आपकी सभी महात्वाकांक्षाएं फलीभूत होंगी और आपकी अभिलाषित इच्छाएं पूर्ण होंगी। आपके आस–पास के लोग आपको एक अनुकरणीय व्यक्ति तथा एक प्रेरणादायक स्रोत के रूप में मानेंगे। आप अपने जीवनसाथी, संतानों, संबंधियों और मित्रों के साथ समृद्धिपूर्ण और खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे।जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की बृहस्पति के साथ युति है– जो कि एक अनुकूल स्थिति में है। एक शुभ योग का निर्माण हो रहा है। आप धन संबंधी मामलों में भाग्यशाली होंगे, अत्युत्तम आय होगी तथा निश्चित रूप से बहुत धनवान होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में, चतुर्थेश द्वितीयेश के साथ संबद्ध है (या इस पर उसकी दृष्टि है)– जबकि इन दोनों ग्रहों में से कोई भी ग्रह किसी प्रकार से पीड़ित नहीं है। आप अपनी माता के संबंध में भाग्यशाली होंगे तथा उनसे आपको धन–सम्पदा की प्राप्ति होगी। आपको अपने संबंधियों तथा कृषि से भी लाभ मिलेगा।जैसाकि आपके ग्यारहवें भाव में एक अग्नि तत्व की राशि स्थित है। आपको अपने पैतृक/जन्म स्थान से पूर्व दिशा में स्थित स्थानों पर/से उत्तम लाभ प्राप्त हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, लग्नेश की बुध के साथ युति है– जबकि शुभ ग्रह बृहस्पति और बुध केन्द्र भाव/भावों में स्थित हैं। यह एक प्रशंसनीय धन योग है तथा आप बहुत धनी होंगे। आपको जीवन की सभी सुख–सुविधाएं प्राप्त होंगी एवं आप आरामपूर्ण और आधुनिक जीवन व्यतीत करेंगे।

कुण्डली में लागू होने वाले पंच–महापुरुष योग

आपकी जन्मकुण्डली में, शुक्र आपके लग्न से केन्द्रीय राशि/भाव में स्थित है और यह स्पष्ट रूप से शक्तिशाली है, जैसाकि यह उच्च–राशि (या अपनी राशि) में स्थित है। इस योग को मालव्य योग कहा जाता है, जो पंच–महापुरुष नामक योगों में से एक है। यद्यपि इस वर्ग के योगों का प्रजातिगत नाम स्पष्ट रूप से कुछ भ्रामक है, तब भी यह एक उत्तम योग है। यह भौतिक सम्पत्ति में वृद्धि का संकेत करता है और सामान्य समृद्धि को सुनिश्चित करता है। आप दृढ़ निश्चयी, पुष्ट शारीरिक संरचना से सम्पन्न और संतुलित दिमाग वाले व्यक्ति होंगे। जैसाकि आपकी कुण्डली में शुक्र अस्त (या ग्रसित या वक्री) है, इस योग के लाभकारी प्रभाव बहुत महत्वपूर्ण नहीं हो सकते हैं।

कुण्डली में लागू होने वाले वित्तहानि योग

जैसाकि आपकी जन्मकुण्डली में, एक घोर अशुभ ग्रह आपके आठवें भाव में स्थित है– जो कि किसी शुभ ग्रह से प्रभावित नहीं है। यद्यपि आप काफी सम्पन्न होंगे, तो भी आपको बहुत सावधान और सतर्क रहना चाहिए एवं अनावश्यक रूप से अत्यधिक जोखिम नहीं उठाना चाहिए। आपको गम्भीर प्रकार की अशुभ घटना का सामना करना पड़ सकता है। इस बात की भी संभावना है, कि आप किसी अन्य व्यक्ति/व्यक्तियों को गंभीर चोट पहुंचा

सकते हैं– जिसके लिए आपकी पेशी हो सकती है या दंडित तक किया जा सकता है।

ग्रहों के डिग्री में स्थिति का फल

आपकी कुण्डली में लग्न की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप अत्यंत महात्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे, आप निर्भिक प्रकृति एवं नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न होंगे। आप जल्दी समझने वाले, मेधावी एवं भाषण कला में निपुण होंगे, जिसकी वजह से आप लोगों के दिमाग में अमिट छाप छोड़कर उन्हें प्रभावित कर सकते हैं। आप अपने दायरे में बहुत सारे लोगों का भरोसा और हार्दिक समर्थन प्राप्त करेंगे।

आपकी कुण्डली में सूर्य की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप बहुत सक्रिय व्यक्ति होंगे, और आपका मस्तिष्क सदैव संलग्न और व्यस्त रहेगा। आप बहुत संवेदनशील प्रकृति के हो सकते हैं, और अपने आस–पास के वातावरण से काफी आसानी से प्रभावित हो सकते हैं। दूसरों को विश्वास दिलाने के उद्देश्य से अपने विचारों को परिष्कृत रूप से अभिव्यक्त करने की आदत आपमें हो सकती है, किन्तु लोग आपको बातुनी समझ सकते हैं।

आपकी कुण्डली में चन्द्रमा की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप वास्तव में अच्छे, शांतिप्रिय, खुशमिजाज और निश्चित रूप से कई मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपमें माटी को छूकर सोना बनाने का गुण विद्यमान होगा और आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे। आप बुद्धिमत्ता, विवेकशीलता, दूरदृष्टि और दूरदर्शिता से सम्पन्न होंगे। लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

आपकी कुण्डली में मंगल की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप बहुत सक्रिय व्यक्ति होंगे, और आपका मस्तिष्क सदैव संलग्न और व्यस्त रहेगा। आप बहुत संवेदनशील प्रकृति के हो सकते हैं, और अपने आस–पास के वातावरण से काफी आसानी से प्रभावित हो सकते हैं। दूसरों को विश्वास दिलाने के उद्देश्य से अपने विचारों को परिष्कृत रूप से अभिव्यक्त करने की आदत आपमें हो सकती है, किन्तु लोग आपको बातुनी समझ सकते हैं।

आपकी कुण्डली में बुध की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप कुछ हद तक भावनात्मक किस्म के हो सकते हैं, तथा आपकी प्रकृति आध्यात्मिक हो सकती है। किन्तु मूलभूत रूप से आप एक परार्थवादी व्यक्ति होंगे तथा जन्मजात आशावादी के रूप में जीवन व्यतीत करेंगे। आप साथी व संगति के शौकीन होंगे तथा सदैव दूसरों के लाभ व सहायता के लिए तत्पर रहेंगे। आपकी कथनी और करनी में अनुरूपता होने से, आप दूसरों के मन पर अमिट छाप छोड़ने में सक्षम होंगे।

आपकी कुण्डली में गुरू की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप बहुत ही निष्ठावान, ईमानदार और न्यायी व्यक्ति होंगे। आपमें कुछ असाधारण योग्यताएं होंगी, जिसके कारण लोग आपको बहुत प्रेम करेंगे। आपके मित्रों व परिचितों का दायरा बहुत बड़ा होगा। अपनी बुद्धिमत्ता व विवेक के गुण के कारण आप सुविख्यात होंगे। आप कुछ प्रशंसनीय कार्यों के लिए सम्मान प्राप्त करेंगे।

आपकी कुण्डली में शुक्र की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप बहुत सक्रिय व्यक्ति होंगे, और आपका मस्तिष्क सदैव

संलग्न और व्यस्त रहेगा। आप बहुत संवेदनशील प्रकृति के हो सकते हैं, और अपने आस–पास के वातावरण से काफी आसानी से प्रभावित हो सकते हैं। दूसरों को विश्वास दिलाने के उद्देश्य से अपने विचारों को परिष्कृत रूप से अभिव्यक्त करने की आदत आपमें हो सकती है, किन्तु लोग आपको बातुनी समझ सकते हैं।

आपकी कुण्डली में शनि की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप अपनी विचारशीलता और दूरदर्शिता के लिए जाने जाएंगे तथा सदैव ईमानदारी से सही चीज करने की इच्छा आपमें होगी। आपका धार्मिक रूझान उत्कृष्ट होगा और आपमें अपने सहकर्मियों के प्रति सच्चा लगाव होगा। आप किसी उद्देश्य के लिए कार्य कर सकते हैं और लोकोपकारी व मानवतावादी गतिविधियों में भाग ले सकते हैं।

आपकी कुण्डली में राहु की स्थिति यह दर्शाती है कि, आप बहुत सद्भावनापूर्ण व शांतिपूर्ण प्रकृति तथा सौम्य स्वभाव के होंगे। आप अपने व्यवहार में बहुत उदार व सहानुभूतिपूर्ण होंगे। यदि एक नैसर्गिक शुभ ग्रह अपके लग्न को प्रभावित करता है, तो आप बहुत दयालु, दूसरों का ध्यान रखने वाले और संवेदनशील होंगे। किन्तु यदि कोई नैसर्गिक अशुभ ग्रह इसे प्रभावित करता है, तो आप कुछ–कुछ स्वार्थी हो सकते हैं।

आपकी कुण्डली में केतु की स्थिति यह दर्शाती है कि, यदि आपकी कुण्डली में कुछ प्रतिकारी योग उपस्थित नहीं हैं, तो आपमें कुछ अवांछित विशेषताएं हो सकती हैं, जिसकी वजह से आप धीरे–धीरे अपनी लोकप्रियता खो सकते हैं। आप कट्टर प्रवृत्ति एवं संदिग्ध स्वभाव के हो सकते हैं। यदि विरोध होता है, तो आप आक्रामक रुख अपना सकते हैं– जिसकी कोई अपेक्षा नहीं कर सकता है।

विंशोत्तरी दशाफल से भविष्यफल

राहू दशा

(02:04:1981 - 30:05:1990)

वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चल रही है और राहु आपकी कुण्डली में दूसरे भाव में स्थित है। दूसरे भाव में राहु की सामान्य दशा आपके लिए जरा भी अनुकूल नहीं हो सकती है। आपको धन और सम्पत्ति का भारी नुकसान हो सकता है। आपकी आँखें कमजोर हो सकती हैं। आपका पारिवारिक जीवन उत्तम नहीं हो सकता है। आपके चरित्र पर जीवनसाथी को शक हो सकता है, जिससे आपके बीच कलह उत्पन्न हो सकती है।

वर्तमान समय में आपकी राहु की महादशा चल रही है और राहु आपकी कुण्डली में कर्क राशि में स्थित है। राहु की अपनी दशा के दौरान, यदि राहु की इस भाव में शुभ दृष्टि है, तो आप कई सफल खोज करेंगे तथा धनोपार्जन करेंगे। यदि दशा बचपन में चलती है, तो आपको तपेदिक, पीलिया और पीत बुखार हो सकता है। आपकी माता को भी कष्ट हो सकता है। बचपन में मुश्किलें आ सकती हैं। यदि राहु की दशा मध्यायु के दौरान आती है, तो आप अपने सभी उपक्रमों में सफल होंगे। चिकित्सकों के लिए यह दशा बहुत उत्तम होगी। बहुत से तंत्रिका विशेषज्ञों की जन्मकुण्डली में कर्क राशि में राहु होता है।

बुध अन्तर्दशा

(02:04:1981 - 28:11:1982)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। आपको संतानों से सुख और खुशियों प्राप्त होंगी। संबंधियों से आपके उत्तम संबंध बनेंगे। संतान की प्राप्ति हो सकती है। मित्रों के साथ आपके संबंध आनन्दायक और फलदायी होंगे। हालांकि, आपमें हीनता की भावना आ सकती है। आपके विचारों में स्पष्टता होगी। आपकी कुण्डली में बुध कमजोर है, आपके लिए कैद में बन्द रहने जैसी परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं, आपको भद्दे और असामाजिक शब्द सुनने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपके मित्र आपसे घृणा कर सकते हैं और आपकी सोचने की क्षमता का ह्रास को सकता है।

केतु अन्तर्दशा

(28:11:1982 - 16:12:1983)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आप सिरदर्द, बुखार और शरीर में कंपकपी से ग्रस्त हो सकते हैं। आग और हथियारों से आपको खतरा हो सकता है। आपके शरीर में जहरीले फोड़े हो सकते हैं। आप और आपका परिवार दुखी हो सकता है। घर और व्यावसायिक क्षेत्र में आपको झगड़ों का सामना करना पड़ सकता है। हालांकि, ऐसा देखने में आया है, कि यदि राहु की अन्तर्दशा अपनी महादशा में उत्तम नहीं है, तो केतु की अन्तर्दशा उत्तम फल देगी। आपको महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

शुक्र अन्तर्दशा
(16:12:1983 - 16:12:1986)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान आपके विवाह की संभावना है। स्त्रियों के द्वारा आपको बहुत आनन्द प्राप्त होगा। आपको घरेलू सामान और आभूषणों की प्राप्ति होगी। आपको संगीत और नृत्य में रूचि उत्पन्न होगी। आप धन लाभ और जीवनसाथी से आनन्द प्राप्त करेंगे, लेकिन किसी प्रियजन के खोन की संभावना हो सकती है। आपकी कुण्डली में यदि शुक्र कमजोर है तो आपका जीवनसाथी से अलगाव हो सकता है। आपको धन की हानि हो सकती है। आपको देवी दुर्गा और लक्ष्मी की आराधना करनी चाहिए।

रवि अन्तर्दशा
(16:12:1986 - 10:11:1987)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आपको अधिकारियों से धमकी मिल सकती है। शत्रु आपके लिए बहुत परेशानी पैदा कर सकते हैं। आप नेत्र रोग से पीड़ित हो सकते हैं। आपको जहरीले प्रभाव, हथियारों से चोट और उपचार में भारी खर्चों का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको सूर्य मंत्र का जाप और सूर्य नमस्कार (उगते और डूबते सूर्य के सामने साष्टांग दण्डवत) तथा अपने सामर्थ्य के अनुसार वस्तुओं का दान करना चाहिए।

चंद्र अन्तर्दशा
(10:11:1987 - 11:05:1989)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा मिश्रित परिणामों को दर्शायेगी। एक तरफ आपको अपने जीवनसाथी से कुछ निश्चित समय पर सुख मिलेगा और दूसरी तरफ आप अपने जीवनसाथी के साथ बेतुके मामलों में प्रायः झगड़ा करने को बाध्य हो सकते हैं। प्रेम और नफरत का साथ–साथ अनुभव होगा। आय की प्राप्ति होगी, लेकिन खर्च भी बढ़ सकते हैं। आपको मानसिक शांति का अभाव हो सकता है। अपने लोगों के साथ झगड़े के कारण आपको बहुत दुख का अनुभव हो सकता है। माता का स्वास्थ्य आपको परेशान कर सकता है। आपको मवेशियों और कृषि भूमि की हानि हो सकती है। आपको पानी से बहुत सावधान रहना चाहिए। आपको देवी दुर्गा को सफेद पुष्प अर्पित करने चाहिए।

मंगल अन्तर्दशा
(11:05:1989 - 30:05:1990)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में राहु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। शत्रुओं, आग, हथियारों आदि के कारण आपको खतरा हो सकता है। सरकारी अधिकारी और चोर आपको मानसिक तनाव दे सकते हैं। आप विभिन्न रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में मंगल पीड़ित है, आपका स्वास्थ्य किसी अज्ञात रोग के कारण बहुत खराब हो सकता है।

गुरु दशा

(30:05:1990 - 30:05:2006)

वर्तमान समय में आपकी बृहस्पति की महादशा चल रही है और बृहस्पति आपकी कुण्डली में चौथे भाव में स्थित है। बृहस्पति की दशा के दौरान, आप सामान्यतः भाग्यशाली रहेंगे। आप कृषि, भूमि और दुग्ध उत्पादों से आय प्राप्त करेंगे। आपको माता–पिता से मदद और सहयोग मिलता रहेगा। आप भूमि संबंधी सम्पत्ति क्रय करेंगे। व्यापार और पेशे से आपको लाभ होगा। आपको उत्तम जीवनसाथी, उत्तम भोजन, घर और वाहन का सुख प्राप्त होगा। संतानहीन लोगों से भी आप धन और सम्पत्ति की प्राप्ति की आशा कर सकते हैं। आपकी कुण्डली में बृहस्पति पीड़ित है, आपको विरासत में प्राप्त सम्पत्ति की भी हानि हो सकती है। माता–पिता भी आपके शत्रु बन सकते हैं। आप अपनी माता के साथ दुर्व्यवहार कर सकते हैं, विशेषकर अपने विवाह के बाद। आपकी कुण्डली में मंगल पीड़ित है, आपको अग्नि से खतरा है। आपकी कुण्डली में सूर्य या चंद्रमा पीड़ित हैं, आपको हृदयाघात हो सकता है। बुध की कुदृष्टि आपको मुकद्मों में उलझा सकती है और सम्पत्ति के सौदे में हानि हो सकती है।

वर्तमान समय में आपकी बृहस्पति की महादशा चल रही है और बृहस्पति आपकी कुण्डली में कन्या राशि में स्थित है। बृहस्पति की अपनी दशा के दौरान, आपको सामान्यतः शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। आपको धन, सरकार से समर्थन या धन, जीवनसाथी, संतानों से सुख और आराम प्राप्त होगा। आपका निम्न स्तर के लोगों से निरन्तर झगड़ा हो सकता है।

गुरु अन्तर्दशा

(30:05:1990 - 17:07:1992)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम साबित होगी। आपको उचित कोटि का उत्तम भाग्य, भारी सम्मान और विकसित उत्कृष्ट गुण प्राप्त होंगे। आपको एक पुत्र की प्राप्ति हो सकती है। आपको सरकार की तरफ से पहचान मिल सकती है। विद्वान, उपदेशकों और दूसरे धर्मपरायण लोगों से आपको मिलने के अवसर प्राप्त होंगे। आपके उत्साह और शारीरिक जीवनशक्ति में निरन्तर बढ़ोत्तरी होगी। आपके शरीर और दिमाग दोनों में एक विशिष्ट प्रकार की शांति और सौम्यता विद्यमान होगी। आपके परिवार में कई वैवाहिक समारोह आयोजित होंगे। आपको पत्नी सुख और संतानों– विशेषकर पुत्रों– से खुशियां मिलेंगी। आपके सभी कार्य बहुत सहजता के साथ पूर्ण होंगे। आपकी आय में बढ़ोत्तरी होगी और कोष धन से पूर्ण रहेंगे। यदि बृहस्पति कमजोर भी है, तो भी आप इस अन्तर्दशा के दौरान कुछ लाभकारी परिणामों का आनन्द अवश्य ही उठायेंगे।

शनि अन्तर्दशा

(17:07:1992 - 28:01:1995)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। मलिन/चरित्रहीन औरतों के साथ संबंध रखने के कारण आपको विभिन्न प्रकार के यौन रोग हो सकते हैं। आपको नशे की लत लग सकती है। आपके परिवार के सदस्यों के बीच संबंध मधुर नहीं हो सकते हैं। हालांकि, उत्तम कार्यों के कारण

आपको नाम और यश प्राप्त होगा। आपकी आय व्यय से कम होगी। आपके दिमाग में किसी प्रकार का भय व्याप्त हो सकता है। आप संतानों की असुरक्षा की भावना से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में शनि की अनुकूल या प्रतिकूल चाहे जो भी प्रकृति हो, वह केवल अपने अन्तर्निहित गुण को ही प्रदर्शित करेगा। हालांकि, उसके किसी भी अशुभ प्रभाव को दशा का स्वामी बृहस्पति नियंत्रित करेगा।

बुध अन्तर्दशा
(28:01:1995 - 05:05:1997)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। आपको ईश्वरीय कृपा प्राप्त होगी। आप अपने उपक्रमों में आसानी से सफलता प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिताओं में अगर भाग ले रहे हैं, तो आप उनमें अपनी सफलता का परचम लहरायेंगे। समग्र रूप से यह अन्तर्दशा आपके जीवनसाथी और संतान के लिए उत्तम होगी। मित्र आपकी मदद के लिए आगे आयेंगे। यदि आप हिन्दु हैं, तो आपको अपने कुटुम्ब के भगवान और अग्नि देवता की पूजा करनी चाहिए। आप उत्तम कार्यों को करने में रूचि लेंगे। आप सम्पन्न होंगे तथा आपको वाहनों का लाभ प्राप्त होगा। आप निरन्तर विदेशों की यात्रा करेंगे। आपको पानी से सावधान रहना चाहिए। आप सिर से संबंधित किसी रोग से पीड़ित हो सकते हैं।

केतु अन्तर्दशा
(05:05:1997 - 11:04:1998)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आपको हथियारों से खतरा हो सकता है। आप शरीर में फोड़ों की समस्या से ग्रसित हो सकते हैं। आपको नौकरों के साथ गलतफहमी का शिकार होने और मानसिक रूप से व्यथित होने की संभावना है। आपके जीवनसाथी और संतानों को किसी तरह का कष्ट हो सकता है। कुण्डली में मौजूद अन्य प्रभाव के अनुसार आपका स्वास्थ्य खराब या बड़ों व मित्रों से अलगाव हो सकता है। आप दूरस्थ स्थानों की यात्रायें कर सकते हैं और आपको भारी तथा अपरिहार्य खर्चों का सामना करना पड़ सकता है। आपको केतु के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

शुक्र अन्तर्दशा
(11:04:1998 - 10:12:2000)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप धन संग्रह करेंगे तथा जीवनसाथी, संतान, संबंधियों और मित्रों से सुख एवं खुशियों प्राप्त करेंगे। आपके मवेशियों की संख्या, अनाज के भंडार और सामान्य संपन्नता में वृद्धि होगी। आप धार्मिक मामलों में गहरी रूचि लेंगे। आप ईश्वर के संबंध में जानने के उत्सुक होंगे तथा इसके लिए धर्मपरायण एवं साधुजनों पर निर्भर रहेंगे। कुछ हद तक आप अपने उद्देश्य में सफल होंगे, अर्थात आप कुछ वास्तविक उपदेशकों के सम्पर्क में आयेंगे, जिनसे आप और अधिक ज्ञान प्राप्त करने में सफल होंगे। हालांकि, दैवीय उपदेशक के छद्म वेश में छिपे हुए लोगों से आपको धोखा भी हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है और बिना किसी कारण के

प्रायः झगड़े हो सकते हैं। आपको महिलाओं के कारण अपमान का सामना करना पड़ सकता है।

रवि अन्तर्दशा
(10:12:2000 - 28:09:2001)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान शत्रु पीछे हटेंगे। वे या तो अपनी गलती मानकर क्षमा मांग सकते हैं या हार कर भाग जायेंगे। आपकी शक्ति और अधिकार में बढ़ोत्तरी होगी और आपको सरकारी सम्मान प्राप्त होगा। आपको शाही समारोहों का आमंत्रण प्राप्त होगा। आपमें आत्मविश्वास की भावना का विकास होगा तथा आप साहसिक कार्यों को करके सफलता प्राप्त करेंगे। आप निरन्तर छोटी यात्रायें करेंगे एवं ज्ञान के कई नये क्षेत्रों को देखने और समझने के आपको अवसर मिलेंगे। आप अपने पहनावे में विशेष रूचि लेंगे, ताकि आप अधिक आकर्षक दिख सकें और अपने आस–पास के लोगों को आकर्षित कर सकें। हालांकि, आप अचानक अवनति का सामना कर सकते हैं और सरकारी अधिकारियों के द्वारा दंडित किये जा सकते हैं। यह भी हो सकता है कि आप कस्बे में जाकर बस जायें और सुख तथा विलास का आनन्द प्राप्त करें। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आपको सरकार और शत्रुओं के कारण परेशानियां उठानी पड़ सकती है और आप अक्खड़ व असभ्य व्यवहार के कारण भारी धन हानि का सामना कर सकते हैं। अतः आपको सूर्य मंत्र का जाप और सूर्य नमस्कार (उगते और डूबते सूर्य के सामने साष्टांग दण्डवत) करना चाहिए।

चंद्र अन्तर्दशा
(28:09:2001 - 28:01:2003)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यह मुख्यतः आपके लिए आनन्द का समय है। आपको विभिन्न महिलाओं के साथ यौन सुख की प्राप्ति होगी या यदि आप शर्मीली प्रकृति के हैं, तो हो सकता है कि आप शारीरिक सुख ना प्राप्त कर सकें, लेकिन आपका रूझान ऐसे कार्यों की तरफ हो सकता है। कुछ मामलों में ऐसा देखने में आया है कि अत्यधिक शर्मीले प्रकृति के लोग, जो स्वयं पहल नहीं कर सकते हैं, विपरीत लिंग के लोग जानबूझकर यौन सुख का आनन्द लेने वाली परिस्थितियां तैयार कर देते हैं।

शत्रु फिलहाल पीछे हट सकते हैं या आपके मित्र बन सकते हैं। यदि आप सरकारी नौकरी कर रहे हैं, तो आपको पदोन्नति के साथ कोई महत्वपूर्ण पद या विभाग मिल सकता है। आपके ज्ञान में वृद्धि होगी। विपरीत लिंग के लोगों के प्रति आपके झुकाव के बावजूद आप अपने जीवनसाथी तथा संतान से प्रेम करेंगे एवं उनका ख्याल रखेंगे। आप सदा उनके साथ रहना चाहेंगे। यदि चंद्रमा आपकी कुण्डली में कमजोर भी है, तो भी आप इस अन्तर्दशा के दौरान कुछ लाभकारी परिणामों का आनन्द उठायेंगे।

मंगल अन्तर्दशा
(28:01:2003 - 04:01:2004)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम साबित होगी। आप ना केवल मित्रों और संबंधियों से धन प्राप्त करेंगे, बल्कि शत्रुओं से भी धन प्राप्त करने में सक्षम होंगे। यदि आप सैन्य सेवा में हैं, तो कुछ मिशनों को सफलतापूर्वक पूरा करने के लिए पदोन्नति प्राप्त करेंगे। यदि किसी और क्षेत्र में नौकरी कर रहे हैं, तो भी आपको पदोन्नति, अधिकार और शक्ति प्राप्त हो सकती है। आप भूमि और भवन या कुछ भौतिक सम्पत्तियां प्राप्त करेंगे। विपरीत लिंग के लोगों के साथ मौज–मस्ती करने के तमाम अवसर आपको मिल सकते हैं। आपको धन लाभ होगा। आपको अपनी आँखों की उचित देखभाल करनी चाहिए– जैसाकि आपकी आँखों में चोट लगने की संभावना है। आपको तीव्र सिरदर्द, बवासीर या गुदा के आस–पास खुजली आदि की भी शिकायत होने की संभावना है। यह अन्तर्दशा आपके परिवार के बड़ों के लिए कुछ उत्तम नहीं हो सकती है। यदि मंगल पीड़ित है, तो उसके अशुभ प्रभाव को मंद करने के लिए और यदि शुभ है तो लाभकारी परिणामों में वृद्धि करने के लिए आपको भगवान कार्तिकेय की प्रशंसा में मंत्रों का जाप करना चाहिए।

राहू अन्तर्दशा
(04:01:2004 - 30:05:2006)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बृहस्पति की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। यह दशा आपके लिए मिश्रित परिणाम देने वाली होगी। जहां एक तरफ आपको अपने संबंधियों के कारण गंभीर मानसिक तनाव का सामना करना पड़ सकता है, वहीं दूसरी तरफ आपके रोजगार, व्यावसायिक भविष्य या व्यापार में भी सुधार होगा। आपको अचानक उतार–चढ़ाव का सामना करना पड़ सकता है। अतः इस अन्तर्दशा को सबसे घुमावदार कहा जा सकता है। आपकी बहनों और परिवार के अन्य महिला सदस्यों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है।

आप अपना निवास स्थान बदल सकते हैं। आपके जीवनसाथी और संतान के लिए यह दशा उत्तम नहीं है। शत्रु आपसे बदला लेने के लिए अवसर की तलाश में हो सकते हैं। आपकी वस्तुएं चोरी हो सकती हैं। आपके प्रियजन आपसे दूरी बना सकते हैं। संभावित रोग जैसे चर्म रोग और पेट दर्द की शुरूआत हो सकती है या वह गंभीर रूप ले सकती है। यदि राहु बली भी है, तो भी आपको केवल मिश्रित फल प्राप्त होंगे।

शनि दशा
(30:05:2006 - 30:05:2025)

वर्तमान समय में आपकी शनि की महादशा चल रही है और शनि आपकी कुण्डली में चौथे भाव में स्थित है। सामान्य ज्योतिष कहावत के अनुसार, चौथे भाव में शनि की दशा बहुत खराब होती है। यदि दशा किशोरावस्था के पहले या दौरान आती है, तो आप कई रोगों और छोटी दुर्घटनाओं का सामना कर सकते हैं। कोई भी पैतृक सम्पत्ति आपके भाग्य में नहीं हो सकती है। आपके पास बड़े राजसी भवन और भारी मात्रा में धन होने पर भी आप उनका सुख नहीं उठा सकते हैं।

वर्तमान समय में आपकी शनि की महादशा चल रही है और शनि आपकी कुण्डली में कन्या राशि में स्थित है। शनि की अपनी दशा के दौरान, आपको धन लाभ होगा। तैराकी और अन्य जलीय खेल, वृक्षों व पर्वतीय कामों जैसे पर्वतारोहण आदि से आपको खुशियां प्राप्त होंगी।

शनि अन्तर्दशा
(30:05:2006 - 02:06:2009)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान आप मानसिक वेदना, परिवार को कष्ट, विभिन्न रोगों, आपके द्वारा पोषित चौपाया जानवरों को जहरीले प्रभाव का खतरों का सामना करना पड़ सकता है, जिससे आपको धन की हानि हो सकती है। आपको महिला समुदाय से कष्ट हो सकता है और आप अपने आपको ऐसी स्थिति में पा सकते हैं, जहां पर आप कोई निर्णय करने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। आपको वात या कफ, आतों में दर्द, लकवा आदि रोगों का सामना करना पड़ सकता है। संबंधी भी आपके लिए परेशानी पैदा कर सकते हैं। आपको अनावश्यक रूप से यात्रायें करनी पड़ सकती हैं। परिस्थितियां कुछ ऐसी बन सकती हैं, कि आपको निचले स्तर के लोगों के बिना अधिकार के और अप्रत्याशित दुर्वचनों का सामना करना पड़ सकता है और ऐसे लोग आपको चोट भी पहुँचा सकते हैं। हालांकि आपको महिलाओं से सावधान रहना चाहिए, जैसाकि आपकी उनके साथ संबंध बनाने की लालसा आपको अपमान और ब्लैकमेल का शिकार बना सकती है। मवेशियों की संख्या और कृषि से आपकी आय में वृद्धि होगी। आप कई लोगों को रोजगार देंगे और उनसे आय प्राप्त करेंगे।

बुध अन्तर्दशा
(02:06:2009 - 09:02:2012)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको अपने सभी कार्यों में सफलता मिलेगी। यदि आप व्यापारी हैं, तो पिछली अन्तर्दशा अर्थात शनि–शनि के दौरान आपको गंभीर आघात का सामना करना पड़ा होगा। लेकिन अब समय आपको वह सब वापस करेगा, जो आपने खो दिया था। आप बिना किसी संशय के निवेश करके व्यापार को बढ़ा सकते हैं। आपको पूर्ण खुशी और आनन्द प्राप्त होगा। आप या तो नयी भूमि प्राप्त करेंगे या पैतृक सम्पत्ति और भूमि प्राप्त करेंगे। आपका दिमाग स्थिर रहेगा। मित्रों से आपको लाभ होगा। आपको जीवनसाथी और संतान का पूर्ण सुख मिलेगा। आपको विभिन्न समारोहों में शामिल होने के आमंत्रण मिलेंगे तथा सरकार का सहयोग एवं धन का लाभ मिलेगा। आप अपना खाली समय ज्ञानी लोगों की संगति में व्यतीत करेंगे। आपकी जन्मकुण्डली में बुध पीड़ित है, आपका स्वास्थ्य बहुत बिगड़ सकता है। आपको विष्णु सहस्त्रनाम (भगवान विष्णु के 1000 नाम) का जप करना चाहिए।

केतु अन्तर्दशा
(09:02:2012 - 21:03:2013)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा

आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अर्जित धन की हानि हो सकती है। आपको अपनी सम्पत्ति को एक के बाद एक बेचना पड़ सकता है। रात में बहुत सारे सपने देखने के कारण आपकी नींद खराब हो सकती है और आपको नींद में चलने की आदत हो सकती है। वायु या आग के कारण आपकी सम्पत्ति नष्ट हो सकती है। रक्तविकार के कारण आपको रोग हो सकते हैं और आप गठिया से ग्रसित हो सकते हैं। आपको भगवान श्रीकृष्ण की अराधना करने की सलाह दी जाती है।

शुक्र अन्तर्दशा
(21:03:2013 - 20:05:2016)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्य रूप से यह एक शुभ दशा होगी। आपको विभिन्न तरीकों से लाभ मिलेगा। आपको नये अवसरों का लाभ उठाना होगा। आपको अपने जीवनसाथी से आर्थिक सहायता मिलेगी। आप नये घर का निर्माण करेंगे। आपकी कुण्डली में शुक्र कमजोर है, आप दुष्ट महिलाओं के माध्यम से अपना जोश और जीवनशक्ति खो देंगे तथा अफवाहों का शिकार बन जायेंगे। शुभ परिणामों में सुधार के लिए और अशुभ परिणामों को समाप्त करने के लिए, यदि कोई हो, तो देवी दुर्गा का स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।

रवि अन्तर्दशा
(20:05:2016 - 02:05:2017)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपके जीवनसाथी और संतान को कष्ट हो सकता है। आपको पेट और आंतों से संबंधित रोग हो सकते हैं। आपकी व्यावसायिक और व्यापारिक प्रगति में विभिन्न प्रकार की बाधायें आ सकती हैं। आपको धन की हानि हो सकती है और अपने अस्तित्वहीन होने का अहसास हो सकता है। आपके शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। प्रायः यात्रायें कर सकते हैं।

चंद्र अन्तर्दशा
(02:05:2017 - 01:12:2018)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको मृत्युतुल्य कष्ट, धन हानि, वायु विकार तथा आपके जीवनसाथी एवं माता–पिता को खतरा हो सकता है। कार्य या कामना पूर्ण होने को हो सकती है, मगर अचानक बाधायें आकर अवसरों को नष्ट कर सकती हैं। आपको किसी नये व्यापार का प्रारम्भ नहीं करना चाहिए या अपने वर्तमान व्यवसाय को बदलने का प्रयास नहीं करना चाहिए। आपको इस अन्तर्दशा के दौरान देवी दुर्गा के मंत्रों का जाप करना चाहिए।

मंगल अन्तर्दशा
(01:12:2018 - 10:01:2020)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह

अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको विदेश यात्रा पर जाने का शौक हो सकता है, जहां पर आप विभिन्न समस्याओं का सामना कर सकते हैं। अतः आपको विदेश में स्थानांतरण या रोजगार या किसी व्यापारिक दौरे को स्वीकार नहीं करना चाहिए। आपको बुखार, हार्निया और आँखों के रोग हो सकते हैं। आपको हर समय मृत्यु का भय बना रह सकता है। आग और धातु के साथ काम करते समय आपको सावधान रहना चाहिए। आपको कुछ शारीरिक चोट या अक्षमता हो सकती है। आप भारी धन हानि का सामना भी कर सकते हैं। आपके जीवनसाथी और घर की महिलाओं को कष्ट हो सकता है। आपको अपमान का भी सामना करना पड़ सकता है। आप अपने पद और स्थिति को खो सकते हैं। भगवान श्रीकृष्ण के मंत्रों का जाप आपके लिए लाभकारी साबित होगा।

राहू अन्तर्दशा
(10:01:2020 - 16:11:2022)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको ऊँचाई से गिरने या किसी कुएं अथवा सुरंग में गिरने के कारण चोट लग सकती है। आप बुखार, फोड़ों, सुजाक, प्लीहा के आकार में भारी वृद्धि, चर्म रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपको भारी धन हानि हो सकती है। आपका सभी के साथ झगड़ा हो सकता है और आप शत्रुता को आमंत्रण दे सकते हैं। आप किसी की भी सलाह को नहीं मान सकते हैं, जिससे आप हमेशा गंभीर समस्याओं में फँस सकते हैं। आपका व्यवहार बहुत असहिष्णु हो सकता है। आपको इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए।

गुरु अन्तर्दशा
(16:11:2022 - 30:05:2025)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शनि की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम होगी, जिसका आप एक लम्बे बुरे दौर के बाद अनुभव करेंगे। आपका विश्वास पुनः लौटेगा। आपमें जीने की चाह बढ़ेगी और आपको जीवन का अर्थ पूरी तरह समझ में आयेगा। आप अपने जीवनसाथी, संतान और मित्रों की संगति का पूर्ण आनन्द प्राप्त करेंगे। आपको अपने हर काम में सफलता मिलेगी और आप विभिन्न शुभ कार्यों को पूरा करेंगे। ईश्वर के अस्तित्व का आपको पूर्ण अहसास होगा और आप उसकी अराधना करेंगे। आपको भूमि लाभ होगा। विभिन्न कलाओं में आप गहरी रूचि लेंगे। इस अन्तर्दशा के दौरान आपका व्यवहार सौम्य होगा।

बुध दशा
(30:05:2025 - 30:05:2042)

वर्तमान समय में आपकी बुध की महादशा चल रही है और बुध आपकी कुण्डली में नौवें भाव में स्थित है। बुध की इस भाव में दशा अति उत्तम है। आप कई धार्मिक कार्यों में संलग्न होंगे, आप वेदों और तंत्र विद्या को सीखने में रूचि लेंगे। आप प्रायः पवित्र स्थानों की यात्रा करेंगे तथा साधुजनों की संगति करेंगे। आपका विवाह हो सकता है

और/या संतानों की प्राप्ति हो सकती है। यदि बुध भयानक रूप से पीड़ित भी है, तो परिणाम अधिक विषम नहीं हो सकते हैं। अन्तर केवला इतना है, कि आप बाहरी रूप से बहुत धार्मिक प्रतीत नहीं हो सकते हैं, लेकिन आपका अन्तर्मन ईश्वर की खोज में हमेशा लगा रहेगा। आप जीवन के छुपे रहस्यों को प्रकट करेंगे और आपकी रूचि तत्व विज्ञान में होगी। 39वें वर्ष की आयु से अचानक सकारात्मक परिर्वतन होगा। इस आयु के बाद आपके अपने अधिकतर उद्देश्यों और अभिलाषाओं की पूर्ति होगी। इस आयु के बाद का समय आप शोध, प्रयोगों और परीक्षणों में व्यतीत करेंगे।

वर्तमान समय में आपकी बुध की महादशा चल रही है और बुध आपकी कुण्डली में कुम्भ राशि में स्थित है। बुध की अपनी दशा के दौरान, आप कई तरह से परेशन हो सकते हैं। आप सार्वजनिक रूप से बदनाम हो सकते हैं। संबंधियों के कारण आपको सबसे अधिक परेशानी हो सकती है। विदेशों की यात्रा के दौरान आपको कई मुश्किलें हो सकती हैं। आपके मित्र आपको धोखा दे सकते हैं।

बुध अन्तर्दशा
(30:05:2025 - 26:10:2027)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपके विभिन्न विद्वान लोगों से संबंध बनेंगे और आप ऐसे संबंधों से धन प्राप्त करेंगे। आप अपने ज्ञान और विद्वता के द्वारा बहुत यश प्राप्त करेंगे। आप उत्तम और शुभ सद्कृत्यों को करने में संलग्न रहेंगे तथा आपका दिमाग तीक्ष्ण और पक्षपात रहित होगा। आपको परिवार के बड़े लोगों से मदद मिलेगी। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर है, तो आपको किसी क्षेत्र में काम करने में रूचि और उत्साह नहीं हो सकता है और आप एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं।

केतु अन्तर्दशा
(26:10:2027 - 22:10:2028)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, अनिश्चितता बनी रहेगी। आपको एक कष्टकारी और दुखी जीवन का सामना करना पड़ सकता है। आप अपने हर काम में विवादों और झगड़ों में फँस सकते हैं। आपका पूरी तरह से भ्रमित और शंकाग्रस्त दिमाग काफी हद तक उथल–पुथल मचा सकता है। आप गैरमैत्रीपूर्ण और बुरे दिमाग वाले लोगों से घिरे रह सकते हैं। आप जुए की लत में पड़कर धन गवाँ सकते हैं, जिससे आपको उन लोगों, जिनसे आपने धन उधार लिया है, के चंगुल से अपने को बचाने के लिए अपनी भूमि, सम्पत्ति और अन्य सामान बेचना पड़ सकता है, फिर भी आप ऋणमुक्त नहीं हो सकते हैं। आप एक गुलाम की तरह जीवन जीने पर मजबूर हो सकते हैं। अन्ततः आप मिर्गी या पागलपन का शिकार हो सकते हैं। इस अन्तर्दशा के दौरान किसी अनुकूल परिणाम की आप आशा नहीं कर सकते हैं। केतु के अशुभ प्रभाव से बचने के लिए आपको भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

शुक्र अन्तर्दशा
(22:10:2028 - 23:08:2031)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप आध्यात्मिक मार्ग का अनुसरण करेंगे और अधिकतर समय भगवान की आराधना में रत रहेंगे। आप ऐसे उपदेशकों से सम्पर्क बनाने की कोशिश करेंगे जो आपको ईश्वरीय मार्ग के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए आपका मार्गदर्शन कर सके। आपकी आय का एक बड़ा भाग इस कार्य में खर्च हो सकता है। इस दशा के दौरान नास्तिक भी आस्तिक बन जाता है, यद्यपि वह दावा कर सकता है, कि उसे भगवान के अस्तित्व में विश्वास नहीं है। ऐसे नास्तिक लोग छिपकर भगवान की पूजा करते हैं। आप स्वादिष्ट भोजन, उत्तम कपड़ों और आभूषणों का आनन्द प्राप्त करेंगे। मित्र और संबंधी आपकी मदद को आगे आयेंगे। आप किसी धर्मपरायण स्त्री के साथ अतिरिक्त वैवाहिक संबंध बना सकते हैं। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बली नहीं है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत विषम परिणाम प्राप्त नहीं होंगे।

रवि अन्तर्दशा
(23:08:2031 - 28:06:2032)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपके घर पर संपन्नता में निरन्तर वृद्धि होगी। आपको सोना, मूंगा, वाहन और उत्तम घर प्राप्त होगा। आप स्वादिष्ट भोजन और पेय पदार्थों का आनन्द प्राप्त करेंगे। सरकार से आपको समर्थन मिलेगा तथा आपकी क्षमताओं को पहचान मिलेगी। यदि आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, तो शुभ परिणामों में कमी हो सकती है।

चंद्र अन्तर्दशा
(28:06:2032 - 28:11:2033)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा में आपको शारीरिक व्याधियां हो सकती हैं। आप सिरदर्द, आँखों में फोड़े, कुष्ठ रोग, दाद, गर्दन में दर्द आदि से ग्रस्त हो सकते हैं। आपकी गर्दन या सिर में चोट लग सकती है। आपकी माता का स्वास्थ्य खराब हो सकता है। आपके सगे भाई–बहन आपके शत्रु हो सकते हैं। आपको अपने सहोदरों की जिम्मेदारी उठानी पड़ सकती है– विशेषकर यदि आपकी बहनें हैं, तो उनकी। इस अन्तर्दशा के दौरान आपकी या आपके भाई/बहन की शादी हो सकती है।

मंगल अन्तर्दशा
(28:11:2033 - 25:11:2034)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको व्यवसाय और समाज में कई प्रकार की समस्यायें हो सकती हैं। शत्रुओं से भी आपको कष्ट हो सकता है। आपको आग या बिजली से काम करते समय सावधानी बरतनी चाहिए– जैसाकि आपके जलने की संभावना है। आपको नेत्र और वायु विकार भी हो सकते हैं।

राहू अन्तर्दशा
(25:11:2034 - 14:06:2037)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आपको उन लोगों से खतरा हो सकता है, जिन पर आप आश्रित होंगे या जिसने आपकी बुरे दौर में मदद की हो। आपको संचित धन की हानि हो सकती है। आपका पद और सम्मान दाँव पर लग सकता है। आप जहर और गैस, सिरदर्द, नेत्रों में फोड़ा या पेट में कष्ट से ग्रसित हो सकते हैं। सामान्यतः आप इस अन्तर्दशा के दौरान मानसिक वेदना के शिकार हो सकते हैं और आपको सभी योजनाओं में असफलता मिल सकती है। यदि राहु आपकी कुण्डली में शुभ भी है, तो भी वह शुभ परिणाम देने में शिथिलता बरतेगा।

गुरु अन्तर्दशा
(14:06:2037 - 19:09:2039)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप रोग मुक्त रहेंगे और आपको पूर्ण मानसिक और शारीरिक शांति मिलेगी। आपको अपने व्यवसाय के साथ–साथ समाज में उत्तम कार्य करने के लिए प्रशंसा प्राप्त होगी। आप निडर होंगे। हालांकि, आप अपने हर काम में दुविधाग्रस्त रह सकते हैं। चूंकि, इस दशा में आपको दैवीय कृपा प्राप्त होगी, अतः आप संशयग्रस्त हो सकते हैं, कि कहीं अनजाने में आपने पाप तो नहीं कर दिया। अतः आपको रोज पूजा करनी चाहिए, ताकि आपका दिमाग स्थिर हो सके। आपके सन्यासी होने की संभावना हो सकती है। आपको शांतिपूर्ण घरेलू जीवन का आनन्द प्राप्त होगा, रोजगार में प्रगति होगी और व्यापार समृद्ध होगा। भूमि और सम्पत्ति में निवेश के लिए यह दशा बहुत उत्तम होगी।

शनि अन्तर्दशा
(19:09:2039 - 30:05:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में बुध की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको सभी योजनाओं में असफलता और भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप निराशा, कफ और लकवा के शिकार हो सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। आपमें उचित सोच का अभाव हो सकता है। यदि आपकी कुण्डली में शनि शुभ भी है, तो भी आपको शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं। इस अशुभ प्रभाव से बचने के लिए आपको भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

केतु दशा
(30:05:2042 - 30:05:2049)

वर्तमान समय में आपकी केतु की महादशा चल रही है और केतु आपकी कुण्डली में आठवें भाव में स्थित है। केतु की आठवें भाव में स्थिति खेल से जुड़े लोगों के लिए उत्तम है। यदि केतु की दशा आपकी किशोरावस्था में आती है, तो आप खेल के क्षेत्र में नाम और यश दोनों प्राप्त कर सकते हैं। इससे आपको बहुत आय होगी। आपके संभाषण में कुछ समस्या हो सकती है। आठवें भाव में केतु के होने पर आपके दांत बाहर निकले हो सकते हैं। आपको गुप्त रोग भी हो सकता है। राहु की केतु की मुख्य दशा में अन्तर्दशा होने के दौरान बवासीर या भकन्दर का रोग उग्र या प्रारम्भ हो सकता है। सवारी के दौरान जानवर की पीठ से गिरने या वाहन चलाते समय

दुर्घटनाग्रस्त होने से आप चोटिल हो सकते हैं, विशेषकर रीढ़ की हड्डी या मेरूदंड में। सामान्यतः केतु की मुख्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा होने के दौरान ऐसा हो सकता है।

वर्तमान समय में आपकी केतु की महादशा चल रही है और केतु आपकी कुण्डली में मकर राशि में स्थित है। केतु की अपनी दशा के दौरान, आपको दो भिन्न प्रकार के परिणाम प्राप्त होंगे। यदि केतु बली और शुभ होगा, तो आप अपने सभी उपक्रमों में सफलता प्राप्त करेंगे। लेकिन आपको गुप्त शत्रुओं से सावधान रहना चाहिए, वे आपकी प्रगति को खतरे में डाल सकते हैं। आपको अक्खड़पन और शेखी बघारने की प्रवृत्ति पर काबू पाना होगा, अन्यथा आपकी सभी योजनायें बाधित हो सकती हैं। आपकी माता लम्बी बीमार से ग्रस्त हो सकती हैं और आपको उनके इलाज पर खर्चा करना पड़ सकता है। यदि केतु अशुभ और कमजोर है, तो दशा तनाव से भरी हो सकती है और सभी प्रकार की विपदायें आ सकती हैं। आपमें आत्महत्या की प्रवृत्ति भी पैदा हो सकती है।

केतु अन्तर्दशा
(30:05:2042 - 26:10:2042)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अपनी योजनाओं में असफलता और भारी परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आप निराश हो सकते हैं तथा कफ एवं लकवा के शिकार हो सकते हैं। आपको धन हानि हो सकती है। आप उचित सोच से वंचित हो सकते हैं। यदि आपकी जन्मकुण्डली में शनि शुभ है, तो आपको शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। इस अशुभ दशा पर विजय पाने के लिए आपको भगवान शिव और देवी पार्वती की अराधना करनी चाहिए।

शुक्र अन्तर्दशा
(26:10:2042 - 25:12:2043)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, परिस्थितियां ऐसी बन सकती हैं, कि आपको अपने मोहल्ले में रहने वाले किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति की अप्रसन्नता का सामना करना पड़ सकता है और आप साधुजनों एवं उपदेशकों के शाप से प्रभावित हो सकते हैं। जीवनसाथी की बेतुकी बातों पर झगड़ा करने के कारण आप जीवनसाथी के सुख से वंचित हो सकते हैं। हालांकि, आंतरिक यौन संबंधों के बनने के कारण वैवाहिक संबंध नहीं टूटेगा और वे आपको बार–बार आपस में बांधने में मदद करेंगी। संबंधी भी आपसे अलग नहीं होंगे। वे आपके घरेलू मामलों में दखल दे सकते हैं और आपके जीवन को कष्टमय तथा वेदनापूर्ण बना सकते हैं। आपको पुत्री की प्राप्ति हो सकती है। अन्तर्दशा के मध्य में कुछ शुभ परिणाम प्राप्त हो सकते हैं। यदि शुक्र बली है, तो अशुभ प्रभावों से थोड़ी राहत मिल सकती है।

रवि अन्तर्दशा
(25:12:2043 - 01:05:2044)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपमें अपने परिवार और संबंधियों के लिए अरूचि उत्पन्न हो सकती है। आपका उपदेशकों के साथ बहुधा विवाद

हो सकता है। सरकारी अधिकारियों से आपको परेशानी हो सकती है। आप बुखार, जलने या कफ की समस्या से ग्रसित हो सकते हैं। आपके परिवार में किसी का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। यह आपका कोई भाई/बहन या उपदेशक या पिता हो सकता है। हालांकि, विभिन्न स्रोतों से आपको आय हो सकती है। विदेश यात्रा से भी आपको लाभ होने के संकेत हैं।

चंद्र अन्तर्दशा
(01:05:2044 - 01:12:2044)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको धन आसानी से प्राप्त होगा, लेकिन यह जिस प्रकार से आयेगा, उसी प्रकार से खर्च हो सकता है। संतानों के कारण आप चिन्तित रह सकते हैं। नवजात पुत्र के कारण आपको अधिक परेशानी हो सकती है। आपके जीवनसाथी और नौकर को आपसे कुछ सहानुभूति होगी। यदि आप अविवाहित हैं, तो आपका विवाह हो सकता है। यदि आपकी माता इस दशा के दौरान किसी संतान को जन्म देती हैं, तो प्रसव समय आपकी माता को बहुत कष्ट हो सकता है। संक्षेप में, आप सुख और दुख समान अनुपात में अनुभव करेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति औसत स्तर की हो सकती है। यदि चंद्रमा बली है, तो आपको अधिक लाभकारी परिणाम प्राप्त होंगे।

मंगल अन्तर्दशा
(01:12:2044 - 29:04:2045)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपके परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य बहुत खराब हो सकता है। साँप काटने या आग से जलन आदि की भी संभावना है। शत्रु आपको नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर सकते हैं, लेकिन वे सफल नहीं होंगे। हालांकि, आप तनावग्रस्त रह सकते हैं। आपकी बहुमूल्य वस्तुओं की चोरी हो सकती है।

राहू अन्तर्दशा
(29:04:2045 - 17:05:2046)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको कोई ऐसा काम करना पड़ सकता है, जिसे आप करना पसन्द नहीं करेंगे। आपको किसी मामले में प्रायः सरकार की तरफ से चेतावनी या धमकी मिल सकती है। आपकी शत्रुओं और धूर्त लोगों से अनावश्यक बहस हो सकती है और आप न सिर्फ स्वयं के लिए, अपितु अपने परिवार के सदस्यों के लिए परेशानियों को निमंत्रण दे सकते हैं। आपके शरीर के किसी भाग को चोरों या शत्रुओं के कारण चोट पहुँच सकती है।

गुरु अन्तर्दशा
(17:05:2046 - 23:04:2047)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपकी संतानों की पढ़ाई और व्यवसाय में सफलता आपको संतुष्ट बनायेगी। आपका धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान होगा। धर्मपरायण तथा साधुजनों के सम्पर्क में आने के लिए आपको बहुत सारे अवसर प्राप्त होंगे

तथा आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। आप सरकार से समर्थन की आशा कर सकते हैं। आपको भूमि और भवन का सुख प्राप्त होगा। भूमि और सट्टों जैसे लॉटरी, शेयर आदि से आपको आय प्राप्त होगी। यदि आप संतानोत्पत्ति में सक्षम हैं तथा संतान की आशा कर रहे हैं, तो आपको भाग्यशाली पुत्र की प्राप्ति होगी।

शनि अन्तर्दशा
(23:04:2047 - 01:06:2048)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अप्रत्याशित दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपका विरोधियों के साथ अनावश्यक विवाद हो सकता है और आपके शरीर पर चोट लग सकती है। शत्रुओं से संघर्ष के कारण उत्पन्न क्रोध के कारण बाद में उससे होने वाली दुर्घटना से भी आपको चोट लग सकती है। नौकर भी आपके लिए समस्यायें पैदा कर सकते हैं। उनकी सेवाओं की घोर आवश्यकताओं के समय में वे आपको और आपके परिवार को छोड़कर जा सकते हैं। आपकी आय बाधित हो सकती है। विदेशियों से व्यवहार करते समय भी आपको गंभीर परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपके स्तर और स्थिति में उतार–चढ़ाव हो सकता है। आपको कफ और शरीर के अंगों में कमजोरी, जैसे लकवा आदि की समस्या हो सकती है। पूरे शरीर में तीव्र पीड़ा हो सकती है।

बुध अन्तर्दशा
(01:06:2048 - 30:05:2049)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में केतु की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम होगी। आपको योग्य संतानों की प्राप्ति हो सकती है। आपको उनसे सुख और खुशियां मिलेंगी। आपको भूमि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा उत्तम मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त होगा। आपकी आय भी बढ़ेगी। आपका दिमाग स्थिर होगा और विभिन्न प्रकार से आप आनन्द प्राप्त करेंगे। हालांकि, आपको मवेशियों और कृषि के नुकसान का सामना करना पड़ सकता है। अतः आपको कोई भी मवेशी जानवर या कृषि भूमि नहीं रखनी चाहिए। इस अन्तर्दशा के समाप्त होने तक आपको उससे दूर रहना चाहिए। आप भवन रख सकते हैं और उनको किराये पर देकर बिना किसी परेशानी के उनसे उत्तम आय प्राप्त कर सकते हैं। यदि आप नौकरी कर रहे हैं, तो आपके वरिष्ठ अधिकारी आपके उत्तम काम की प्रशंसा करेंगे और आपको समय से पहले पदोन्नति मिल सकती है।

शुक्र दशा
(30:05:2049 - 30:05:2069)

वर्तमान समय में आपकी शुक्र की महादशा चल रही है और शुक्र आपकी कुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। यदि दसवां भाव वृष, तुला या मीन राशि का है, तो यह दशा अति उत्तम होगी। आपको कई विषयों में महारत हासिल होगी और आपको विस्तृत पहचान मिलेगी। आपको एक महत्वपूर्ण पद प्राप्त होगा। शुक्र की दशा के दौरान आपको कई रत्न और कीमती पत्थर प्राप्त होंगे, आपके अन्तर्मन की बौद्धिक क्षमता बढ़ेगी, आप बहुत सुखी होंगे एवं लोगों की प्रशंसा प्राप्त करेंगे।

वर्तमान समय में आपकी शुक्र की महादशा चल रही है और शुक्र आपकी कुण्डली में मीन राशि में स्थित है। शुक्र की अपनी दशा के दौरान, यदि यह बिल्कुल उच्चस्थ स्थिति में है और आप राजनीति में हैं, तो आपको एक मंत्री के बराबर उत्तम पद प्राप्त होगा या यदि आप नौकरी में हैं, तो आपको ऊँचे अधिकारी की श्रेणी का पद मिलेगा। आपको प्रचूर धन, खुशियां, कृषि में लाभ, भूमि, वाहन की प्राप्ति और कई नौकरों की सेवा प्राप्त होगी।

शुक्र अन्तर्दशा
(30:05:2049 - 28:09:2052)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अपने जीवनसाथी से भूरपूर सहयोग और खुशियों के साथ–साथ दूसरी स्त्रियों से भी सुख और आनन्द मिलेगा। पिछली अन्तर्दशा की तुलना में आप साफ कपड़े पहनने में विशेष रूचि लेंगे। आपको विभिन्न लोगों से भी वस्त्र और आभूषण उपहार के रूप में मिल सकते हैं। आप विभिन्न लोगों के सहयोग से धन अर्जित कर सकते हैं। दवाओं से आप आय प्राप्त करेंगे। सामान्यतः आपको विभिन्न स्रोतों से धन प्राप्त होगा। लेकिन आय का एक बड़ा हिस्सा मौज मस्ती और मनोरंजन में खर्च हो सकता है। आप वाहन भी प्राप्त कर सकते हैं।

रवि अन्तर्दशा
(28:09:2052 - 28:09:2053)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, संबंधियों के कारण आपको भारी धन हानि हो सकती है। संबंधियों पर अंधविश्वास आपकी परेशानी का कारण हो सकता है। आपको उनके कपट का ज्ञान तब होगा, जब आप लगभग हर चीज खो चुके होंगे। अतः आपको इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान उन पर भरोसा करते समय बहुत अधिक सावधान रहना चाहिए। वे आपकी हर वस्तु को, जो उनको मिलेगी, हड़प सकते हैं। आप गले, नाक या सीने और उदर के रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपकी आँखों में संक्रमण हो सकता है। बड़े और विशिष्ट लोग आपकी कार्य शैली को नापसन्द कर सकते हैं। सहकर्मी आपसे ईर्ष्या कर सकते हैं। आपके नये शत्रु बन सकते हैं। यदि आप व्यापार कर रहे हैं, तो आपको विभिन्न क्षेत्रों में कड़ी स्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है।

चंद्र अन्तर्दशा
(28:09:2053 - 30:05:2055)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप सिर, दाँत, नाखून, उदर या लिवर के रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। नाखूनों में किसी प्रकार की विकृति हो सकती है। कीटाणुओं के संक्रमण या किसी दुर्घटना के कारण आपके नाखूनों को हानि पहुँच सकती है या उनके संक्रमण के कारण पेट में कीड़े पड़ सकते हैं। आपको पीलिया भी हो सकता है। आपको कुत्ता, बन्दर या कोई जंगली जानवर जैसे बाघ, बिल्ली आदि के काटने का भय हो सकता है। आपके व्यय आय से अधिक हो सकते हैं। आपको प्रचूर धन प्राप्त होगा, लेकिन व्यय हो जायेगा और आप ऋणी हो सकते हैं। वाहनों

और महिलाओं के द्वारा आपको धन प्राप्त हो सकता है। आप स्त्रियों के सम्पर्क में आ सकते हैं, जिन्हें व्यापारिक या आर्थिक सलाह आदि के रूप में आपकी मदद की आवश्यकता हो सकती है। इस मदद के दौरान आपके साथ–साथ उनको भी लाभ होगा। इस दौरान आपके उनसे संबंध भी बन सकते हैं। परिणामस्वरूप आप और आपके जीवनसाथी या परिवार के सदस्यों के बीच में कलह हो सकती है। आपमें ईश्वर के प्रति गहरी भक्ति भावना विकसित होगी और आप भगवान की आराधना करेंगे। आप कई धार्मिक कार्यों जैसे हवन, यज्ञ और अन्य सात्विक कार्य करेंगे। यदि आप युद्ध में संलग्न हैं, तो आपको सफलता मिलेगी और शत्रु को परास्त कर आप लाभ प्राप्त करेंगे।

मंगल अन्तर्दशा
(30:05:2055 - 29:07:2056)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप सोने और उससे बने आभूषण तथा तांबे की वस्तुओं में गहरी रूचि ले सकते हैं। आप स्वर्ण, ताम्र या लौह भस्म से बनी औषधियों का सेवन कर सकते हैं या उनका वितरण कर सकते हैं या आप धातुओं से संबंधित कोई शोध कार्य कर सकते हैं। लेकिन आपको सफलता अगली आने वाली राहु की अन्तर्दशा में मिलेगी। आप भूमि और सम्पत्तियां प्राप्त कर सकते हैं या उनको बेच कर लाभ अर्जित कर सकते हैं। चंद्रमा के अन्तर्दशा के दौरान आपको उन स्त्रियों से कोई गलतफहमी हो सकती है, जिनके साथ आपको अतिरिक्त लगाव है। आपको स्त्री समुदाय से एक प्रकार की नफरत हो सकती है– विशेषकर ऐसी महिलाओं के प्रति संशय के अहसास के कारण। आपको सम्मान प्राप्त होगा तथा विभिन्न स्रोतों से आप आनन्द प्राप्त करेंगे। आप दूसरों की गलतियां ढूंढ सकते हैं, जिसके कारण प्रायः आपका उनसे तनाव हो सकता है। आप गतिविधियों के प्रत्येक क्षेत्र में दक्षता हासिल करना चाहेंगे और निराश हो सकते हैं। आप रक्त चाप, बवासीर या कफ और दिमाग से संबंधित रोगों से ग्रस्त हो सकते हैं। रक्त की अशुद्धता के कारण भी समस्यायें हो सकती हैं। आपकी कुण्डली में मंगल और शुक्र दसवें भाव में स्थित होकर बली हैं, आपको इस अन्तर्दशा के दौरान अनैतिक तरीकों, जैसे सोने और चांदी की तस्करी, लॉटरी, शेयरों और अन्य सट्टों से प्रचूर धन प्राप्त हो सकता है।

राहू अन्तर्दशा
(29:07:2056 - 29:07:2059)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको अप्रत्याशित धन का लाभ हो सकता है। आपको अपनी खोई हुई सम्पत्ति वापस प्राप्त करने के अवसर मिलेंगे। संतान की अध्ययन और रोजगार में सफलता आपको प्रसन्नता प्रदान करेगी। आपको सबसे सम्मान मिलेगा। शत्रुओं को आप परास्त करेंगे। यदि अब तक कोई अनिर्णित सम्पत्ति विवाद है, तो इस अन्तर्दशा के अन्त तक वह सुलझ जायेगा। हालांकि, आपको उस सम्पत्ति का सुख अगली अन्तर्दशा जो कि बृहस्पति की होगी, उसके दौरान मिलेगा। आपको चोट लगने का तथा आग से खतरा हो सकता है। चोर आपके लिए परेशानी का कारण बन सकते हैं। यह खतरा आपको आर्थिक सौदों में हो सकता है। आपको किसी प्रकार की असुरक्षा और दंड का भय हो सकता है। हालांकि, परिणाम बहुत विषम नहीं होंगे। आपको राहु मंत्र का जाप और गरीबों को

खाना खिलान चाहिए। साथ ही, आपको सांपों को अण्डा और दूध अर्पित करना चाहिए।

गुरु अन्तर्दशा
(29:07:2059 - 30:03:2062)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। आपको भिक्षा देने और धार्मिक कार्यों को करने के कई सारे अवसर मिलेंगे। आप स्वयं या पुजारियों से पूजा और हवन करेंगे या करवायेंगे। भोजन की प्रचूरता होगी। आपको भूमि, सम्पत्ति और आभूषण तथा संतान की प्राप्ति होगी। आप खुशियों और सुखों के सागर में गोते लगायेंगे। अपने पद और अधिकर से आप विभिन्न प्रकार के आनन्द प्राप्त करेंगे।

शनि अन्तर्दशा
(30:03:2062 - 30:05:2065)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको समाज और सरकार में ऊँचे पदों वाले लोगों का सहयोग मिलेगा। आप विख्यात होंगे। आप समाज के नेतृत्वकर्ता या किसी ऊँचे राजनीतिक पद पर आसीन हो सकते हैं। आपको कुलीन बड़ी महिलाओं के साथ सम्पर्क बनाने के अवसर मिलेंगे। आपकी आय व्यय से अधिक होगी, लेकिन आपको खर्च में सावधानी बरतनी चाहिए। आप धन, वस्तुओं और आभूषणों का संग्रह करेंगे तथा इस पूरी अन्तर्दशा के दौरान आनन्द प्राप्त करेंगे। आपके संबंधी भी संपन्न होंगे। गांवों, कस्बों और शहर पर आपका अधिकार होगा।

बुध अन्तर्दशा
(30:05:2065 - 29:03:2068)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप नाम, यश और धन प्राप्त करेंगे। आप अपने प्रियजनों और संतानों से स्नेह एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। आपके शत्रु परास्त होंगे। पेड़ों, फलों और मवेशियों से आप लाभ प्राप्त कर सकते हैं। सरकार या भूमि से धन प्राप्त होगा। इस अन्तर्दशा के दौरान आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी। आपको जहरीले जानवरों को काटने से कोई रोग हो सकता है।

केतु अन्तर्दशा
(29:03:2068 - 30:05:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में शुक्र की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आपको कई दुखों का सामना करना पड़ सकता है। आपके जीवनसाथी और संतान भी पीड़ित हो सकते हैं। ईश्वर भी आपसे मुख मोड़ सकते हैं। आपको परित्यक्त और वर्जित स्त्रियों के साथ आनन्द प्राप्त करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। संबंधियों और शत्रुओं से आपके बहुधा झगड़े हो सकते हैं। हालांकि, शत्रु आपको किसी तरह की हानि नहीं पहुँचा पायेंगे। आपके शरीर के किसी अवयव को हानि नहीं पहुँच सकती है।

रवि दशा

(30:05:2069 - 30:05:2075)

वर्तमान समय में आपकी सूर्य की महादशा चल रही है और सूर्य आपकी कुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। सूर्य की दशा के दौरान, आपकी सभी अभिलाषायें पूरी होंगी, आप एक राजा की तरह होंगे। आपकी प्रगति में कोई बाधा नहीं आएगी। लेकिन आपकी माता को विभिन्न प्रकार की परेशानियां और रोग हो सकते हैं। अपने मित्रों और जीवनसाथी से विरह के कारण आपको उदासी हो सकती है। हालाँकि, आपको पिता से सारे सुख और उनकी सम्पत्ति प्राप्त होगी, यदि सूर्य की दशा युवावस्था में पड़ती है। इस दशा में आप प्राचीन ग्रन्थों का ज्ञान, भूमि और सम्पत्ति, पैतृक धन व सम्पत्ति, नाम व यश प्राप्त करेंगे। आपको उत्तम संतानों का सुख प्राप्त होगा। आप उत्तम लोगों के लिए अपनी यथाशक्ति हर काम करेंगे। आप किसी के अधीन होकर नहीं रहेंगे। आप किसी को हानि नहीं पहुंचायेंगे। अपनी 18वर्ष की आयु में सूर्य की दशा होने पर आपको ऊँची शिक्षा प्राप्त होगी। आप कुएं खुदवायेंगे, सराय या अनाथालय बनावयेंगे या अनाथों की मदद करेंगे। आपकी कुण्डली में दसवां भाव वृष, मिथुन, कन्या, मकर या मीन का है, सूर्य की दशा में आप गवर्नर, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति भी बन सकते हैं।

वर्तमान समय में आपकी सूर्य की महादशा चल रही है और सूर्य आपकी कुण्डली में मीन राशि में स्थित है। सूर्य की अपनी दशा के दौरान, आपको जीवनसाथी और संतानों से आराम मिलेगा। इस दशा के दौरान आपके विवाह के अलावा भी संबंध हो सकते हैं। मित्र आपकी मदद करेंगे। आप अपने ससुराल के लोगों से उत्तम मदद की आशा कर सकते हैं। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी। आप भगवान की अराधना में पूरी तरह से रत होंगे। इस दशा के दौरान आपको पीलिया, रक्त विकार, हृदय की समस्यायें आदि होने की संभावनायें हैं। आपकी कुण्डली में यह दसवां भाव है, आप जल, खातों, पत्रकारिता या पुस्तक लेखन से संबंधित कार्यों से आय प्राप्त करेंगे या यदि आप किशोर हैं, तो सूर्य की दशा के प्रारम्भ होने पर आप नौसेना में जा सकते हैं।

रवि अन्तर्दशा

(30:05:2069 - 16:09:2069)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आपको सरकार से सम्मान प्राप्त होगा और आप अपनी विशेषज्ञता के क्षेत्र में नाम और यश प्राप्त करेंगे। आपको किसी सुदूर और अलग स्थान पर रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आप उत्तम मात्रा में धन अर्जित करेंगे। आप सरकार या शासित वर्ग से समर्थन/आय प्राप्त कर सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आप सिरदर्द और उदर पीड़ा, कान में दर्द, गुर्दे की समस्या, बुखार और कफ से पीड़ित हो सकते हैं। अपने पिता से आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपके संबंधी आपको बहुत परेशान कर सकते हैं। आपकी आय कम और व्यय अधिक हो सकता है। आप राजसी दिखावा करने में भारी व्यय कर सकते हैं और जिसके परिणामस्वरूप आप कर्जदार हो सकते हैं। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य उच्चस्थ या केन्द्र या त्रिकोण या ग्यारहवें भाव में स्थित है, सूर्य की इस अन्तर्दशा में आप जो भी काम करेंगे, उसमें भारी लाभ प्राप्त होगा, सरकार से आपको समर्थन मिलेगा, आपकी अधिकतर कामनायें पूरी होंगी और आपका विवाह भी हो सकता है।

चंद्र अन्तर्दशा
(16:09:2069 - 18:03:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में चंद्रमा लग्न से केन्द्रीय अथवा त्रिकोण भाव में है, चंद्रमा की यह अन्तर्दशा अति उत्तम होगी। आपका विवाह हो सकता है, धन की वृद्धि होगी, आप क्रय या विरासत के माध्यम से भूमि और भवन प्राप्त करेंगे, आपको विभिन्न स्रोतों से आय तथा वाहन और सुख प्राप्त होंगे। आपको संतान की प्राप्ति होगी। आपका सदाचारी लोगों से सम्पर्क बढ़ेगा, स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, या यदि पहले से आप किसी रोग से पीड़ित हैं, तो आपको उससे मुक्ति मिलेगी। आपका अपने शत्रुओं और विरोधियों से समझौता होगा और अनुकूल समय आने पर आप उन्हें परास्त करेंगे।

मंगल अन्तर्दशा
(18:03:2070 - 23:07:2070)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी कुण्डली में मंगल उच्चस्थ या अपने भाव या लग्न से ग्यारहवें भाव या केन्द्रीय भाव में है, इस दौरान कई शुभ परिणामों को प्राप्त करेंगे– अर्थात आपको भूमि और भवनों का लाभ, अपने सहोदरों से सुख और खुशियां, रत्नों और स्वर्ण से लाभ या प्राप्ति, व्यवसाय या नौकरी में लाभ, झगड़ों में विजय आदि प्राप्त होंगे। आपकी कुण्डली में मंगल नवमेश या एकादशेश के साथ स्थित है, आपको उत्तम लाभ, यदि सैन्य सेवा में हैं, तो अधिकारपूर्ण ऊँचे पद की प्राप्ति, मानसिक शांति, संबंधियों से मदद और सुख, सहोदरों को सम्पन्नता प्राप्त होगी। आपको अपने सगे भाई–बहनों से मदद मिलेगी। आपकी कुण्डली में मंगल सूर्य से द्वितीयेश या सप्तमेश है, आपको विभिन्न प्रकार के शारीरिक और मानसिक विकार हो सकते हैं– जो आपको पागल भी कर सकते हैं। आप भगवान कार्तिकेय की आराधना करके और एक बैल दान देकर इन अशुभ परिणामों को एक सीमा तक कम कर सकते हैं। कुछ विद्वान ज्योतिषियों के अनुसार, यदि आपकी जन्मकुण्डली में मंगल उत्तम स्थिति में है या उस पर मित्र या शुभ ग्रह की दृष्टि है, तो भी सूर्य की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा के दौरान आपको शुभ परिणाम मिलने की संभावना कम हो सकती है।

राहू अन्तर्दशा
(23:07:2070 - 17:06:2071)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के पहले दो मास में आपको भारी धन हानि, अनावश्यक भय, रक्त की अशुद्धता, सर्पदंश या सांपो से भय या सर्पों का स्वप्न, शरीर में फोड़े, जीवनसाथी और संतान के कारण दुख (जीवनसाथी और संतान की बीमारी या उनका आपके प्रति नकारात्मक रवैया या जीवनसाथी से अलगाव/तलाक या उसके द्वारा अनैतिक जीवनशैली अपनाये जाने के कारण) का सामना करना पड़ सकता है। उसके बाद आप उत्तम परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे। अतः आपके लिए बेहतर यही होगा कि आप इस अवधि के दौरान कोई ऐसा काम ना करें, जिससे आपको बाद में पछताना पड़े। आप दूरस्थ स्थानों की यात्रा पर जा सकते हैं, ताकि ऐसी स्थिति से आप बच सकें। आपको

भगवान शंकर के मंत्रों का जाप और उनकी आराधना करनी चाहिए। आपकी कुण्डली में राहु दूसरे या सातवें भाव में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ स्थित है, आपको सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है। इस अशुभ प्रभाव से बचने के लिए आपको सांपों को दूध और अंडे अर्पित करना चाहिए तथा राहु मंत्र का जाप करना चाहिए। आपका रवैया हर मामले में शंकालु हो सकता है। कुछ ज्योतिषियों के अनुसार, यदि आपकी जन्मकुण्डली में राहु किसी उत्तम भाव में स्थित है, तो भी सूर्य की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान यह कोई शुभ परिणाम नहीं दे सकता है। (हालांकि, इस तथ्य पर सहमत नहीं हुआ जा सकता है, क्योंकि कई लोगों को अति उत्तम परिणाम प्राप्त होते देखा गया है।) आपको तीव्र सिर दर्द और आँखों में फोड़ा हो सकता है। आपका धन चोरी हो सकता है या आपको धन की हानि हो सकती है। आपको जहर से खतरा हो सकता है। आपमें शारीरिक सुख प्राप्त करने की कामना विकसित हो सकती है और आपके नये शत्रु बन सकते हैं।

गुरु अन्तर्दशा
(17:06:2071 - 04:04:2072)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। बृहस्पति आपकी कुण्डली में केन्द्र या त्रिकोण भाव में या उच्चस्थ या मित्र भाव में है, आप उत्तम बृहस्पति के सभी शुभ परिणामों का आनन्द प्राप्त करेंगे, जैसे सम्मान में बढ़ोत्तरी, अन्न के भंडार में वृद्धि, संतान का जन्म, कामनाओं की पूर्ति, उत्तम कपड़ों और आभूषणों की प्राप्ति, सरकार से भारी धन की प्राप्ति आदि। मंत्रणाओं में आपको उत्तम पद प्राप्त होगा। आप संतानों से भी धन प्राप्त करेंगे। आप सद्कृत्यों और उत्तम परम्परागत अनुपालनों को पूरा करेंगे। आपकी कुण्डली में बृहस्पति सूर्य से छठे या आठवें भाव में है या नीचस्थ है, आप सूर्य की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के दौरान सरकार के कारण परेशानियों, संतान के कारण दुखों, विभिन्न रोगों जैसे फोड़े और मधुमेह आदि का सामना कर सकते हैं। आपको धन की हानि हो सकती है और व्यय बढ़ सकता है, योजनायें असफल हो सकती हैं, मानसिक पीड़ा हो सकती है तथा आप अपने पद को खो सकते हैं। इससे बचने का सबसे उत्तम उपाय भगवान नारायण (भगवान विष्णु–हिन्दु धर्म के त्रिमूर्ति में से एक) की उपासना है। बृहस्पति सूर्य की महादशा में अपनी अन्तर्दशा के दौरान बहुत अशुभ परिणाम नहीं देगा। विभिन्न स्रोतों से धनागमन, ईश्वर की आराधना, साधुजनों, बड़े संबंधियों से आनन्द, कान और फेफड़ों के विकार, शत्रुओं का नाश होगा।

शनि अन्तर्दशा
(04:04:2072 - 18:03:2073)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में शनि केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में स्थित है, शनि की इस अन्तर्दशा में आप अपने शत्रुओं का नाश करेंगे और शुभ समारोहों में भाग लेंगे। हालांकि, आपकी आय सीमित होगी और सुख कम हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में, सूर्य और शनि के परस्पर शत्रु होने के कारण अन्तर्दशा के बहुत अशुभ होने की धारणा के बिल्कुल विपरीत, केन्द्र अथवा त्रिकोण भाव में स्थित शनि की अन्तर्दशा बहुत महत्वपूर्ण नहीं हो सकती है अर्थात जीवन सामान्य तरीके से चलेगा। आपकी जन्मकुण्डली में शनि सूर्य से दूसरे या सातवें भाव में स्थित है, आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता

है। इन अशुभ प्रभावों से बचने के लिए आपको एक काली गाय या भैंस या बकरी दान करनी चाहिए और महामृत्युंजय मंत्र का जाप करना चाहिए। आपको आय में बाधाओं, संतान से अलगाव, जीवनसाथी के खराब स्वास्थ्य, अनावश्यक खर्चों, परिवार से अलग रहने की बाध्यता, परिवार के किसी बड़े सदस्य का वियोग, भूमि की हानि जैसे अशुभ परिणामों का सामना करना पड़ सकता है। शनि की अन्तर्दशा के आरम्भ में आपको, आपके मित्रों और संबंधियों को अशुभताओं का सामना करना पड़ सकता है।

बुध अन्तर्दशा
(18:03:2073 - 22:01:2074)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी कुण्डली में बुध उच्चस्थ या अपने भाव या लग्न से केन्द्रीय भाव अथवा त्रिकोण भाव में है, इस दौरान आपको भूमि और सम्पत्ति का लाभ, अधिकार और शक्ति की प्राप्ति, विभिन्न कार्यों में उत्साह, वाहनों और उत्तम परिधानों का लाभ, जीवनसाथी और संतान से खुशियां प्राप्त होंगी। सूर्य की महादशा में बुध की अन्तर्दशा और उसमें बुध की ही प्रत्यंतर दशा के दौरान आपको मानसिक स्थिरता प्राप्त होगी और आपकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी। आपमें गलत और सही का फर्क करने की क्षमता होगी, अतः आपके द्वारा लिये गये आर्थिक निर्णय सही होंगे। मौजूदा व्यापार या रोजगार में लाभ होगा। इस दशा के दौरान व्यापार का विस्तार और रोजगार या किसी अन्य क्षेत्र में सुधार सभी कुछ संभव होगा। आप सोना, रत्न और आभूषण खरीदेंगे। आपका जीवन बहुत सहज होगा।

केतु अन्तर्दशा
(22:01:2074 - 30:05:2074)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए उत्तम नहीं हो सकती है। आप विभिन्न कारणों से भारी दुखों का सामना कर सकते हैं, आपको विभिन्न रोग और धन की हानि हो सकती हैं। सरकारी अधिकारी और संबंधी आपके कष्ट के कारण हो सकते हैं।

शुक्र अन्तर्दशा
(30:05:2074 - 30:05:2075)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में सूर्य की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आपकी जन्मकुण्डली में शुक्र अपने या उच्चस्थ या केन्द्र या त्रिकोण या अपने मित्र के भाव में स्थित है, शुक्र की इस अन्तर्दशा में आप अपनी प्रियतम स्त्रियों के साथ आनन्द प्राप्त करेंगे, आपको धन का लाभ, विदेश यात्रा के अवसर, कुछ क्षेत्रों में सिद्धि प्राप्त होगी। आपका दृष्टिकोण आध्यात्मिक हो सकता है, आपकी वीरता और जीवनशक्ति में वृद्धि होगी, आप किसी काम को शुरू करने के उत्साहित रहेंगे, आपको बड़े समारोहों में शामिल होने के निमंत्रण प्राप्त होंगे। आप उत्तम परिधान और आभूषण प्राप्त करेंगे। दूसरे शब्दों में यह दशा आपके लिए अति उत्तम होगी। अन्तर्दशा के तीन भागों में से पहले भाग में आपको वाहनों की प्राप्ति होगी, दूसरे भाग में आप सभी प्रकार की खुशियां और सुख प्राप्त करेंगे तथा तीसरे भाग में आप अपने परिश्रम से अर्जित नाम और यश खो सकते हैं, मित्रों और

संबंधियों के साथ आपका विवाद हो सकता है, आप गले की बीमारी, लकवा, शारीरिक पीड़ा का शिकार हो सकते हैं।

चंद्र दशा

(30:05:2075 - 30:05:2085)

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में नौवें भाव में स्थित है। आपको संतानों की प्राप्ति हो सकती है। आप गुणी होंगे और चंद्रमा की दशा के दौरान अपने सभी उपक्रम में आपको सफलता मिलेगी।

वर्तमान समय में आपकी चंद्रमा की महादशा चल रही है और चंद्रमा आपकी कुण्डली में कुम्भ राशि में स्थित है। चंद्रमा की अपनी दशा के दौरान, आप दवा से आय प्राप्त करेंगे। आप पहले जीवनसाथी के रहते दूसरा विवाह कर सकते हैं। यदि चंद्रमा की दशा 28वें वर्ष की आयु में पड़ती है, तो आप एक हठी एवं दुस्साहसी व्यक्ति हो सकते हैं। आपको वाहनों से सावधान रहना चाहिए, जैसाकि आपको या तो वाहनों या फिर शत्रुओं या चोरों से चोट लगने का भय हो सकता है। आपको जुए से दूर रहना चाहिए, क्योंकि इससे आपको भारी हानि का खतरा है। आप अपनी आय का एक बड़ा भाग नशे और दूसरे सुखों के लिए खर्च कर सकते हैं।

चंद्र अन्तर्दशा

(30:05:2075 - 29:03:2076)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। यदि यह अन्तर्दशा विवाह की अवस्था के दौरान चलती है, और आप अविवाहित हैं, तो आपके विवाह की संभावना है। यदि पहले से विवाहित हैं, तो एक पुत्री का जन्म हो सकता है। आप किसी प्रियजन के विवाह समारोह में शामिल हो सकते हैं। दूसरे शब्दों में आपके भाई–बहनों का विवाह हो सकता है– यदि वे विवाह योग्य हैं। आपको नये परिधान प्राप्त होंगे। आपको बहुत ज्ञानी और संस्कारित लोगों के सम्पर्क में आने के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। आपको जीवनसाथी और संतानों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। आप अपनी माता की अभिलाषाओं को पूरा करेंगे तथा साथ ही उनका पूर्ण प्रेम, स्नेह और ध्यान आपको मिलेगा। आपको संबंधियों और मित्रों से अवसरीय मदद मिलेगी। आपको चहुंमुखी संपन्नता तथा उत्तम नींद प्राप्त होगी।

मंगल अन्तर्दशा

(29:03:2076 - 28:10:2076)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। आपको पैतृक सम्पत्ति और धन की हानि हो सकती है। रक्त की अशुद्धता, व्यग्रता, कफ, आग, विद्युत और अन्य गर्म चीजों के कारण होने वाले विकारों से आप ग्रस्त हो सकते हैं। आप चोरों और शत्रुओं के कारण अपना धन गवाँ सकते हैं। आपमें धैर्य की कमी हो सकती है और आप हर स्तर पर चिड़चिड़े हो सकते हैं। एक समय पर आप सबसे संतुष्ट व्यक्ति होंगे, जिसे सांसारिक सुखों की आवश्यकता नहीं होगी, लेकिन अचानक आपका दिमाग पलट सकता है

और आप अपने कार्य क्षेत्र में असफल हो सकते हैं। आपक स्थानान्तराण हो सकता है या दंड अथवा गबन के आरोप के कारण आप पूर्व प्राप्त पद से हाथ धो सकते हैं।

राहू अन्तर्दशा
(28:10:2076 - 29:04:2078)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। आप अनजाने में कई बुरे और गलत काम कर सकते हैं तथा बाद में उसके लिये पछतावा होगा। लेकिन तब तक बहुत देर हो सकती है और सबको अपना शत्रु बना सकते हैं। हालांकि, चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा जो आगे आने वाली है, के दौरान विभिन्न चीजों के लिए आपके रवैये और व्यवहार में वास्तविक बदलाव आयेगा। आपके संबंधियों को समस्यायें हो सकती हैं और आपको उन पर धन खर्च करने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। आपको जलीय पदार्थों से विषाक्तता होने की संभावना हो सकती है। आप बुखार, अपच या गठिया रोग से ग्रसित हो सकते हैं। आपको आंधी, तूफान और तड़ित से खतरा हो सकता है। आपको मदिरा से सर्वथा दूर रहना चाहिए– जैसाकि यह एक जलीय पदार्थ है। चूंकि आपकी आय से व्यय अधिक हो सकता है, अतः आपको धन व्यय करते समय सावधानी बरतनी चाहिए।

गुरु अन्तर्दशा
(29:04:2078 - 29:08:2079)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा शुभ और उत्कृष्ट होगी। यदि बृहस्पति आपकी कुण्डली में शुभ नहीं भी है, तो भी आपको विषम परिणाम नहीं प्राप्त होंगे। आपमें राहु की अन्तर्दशा– जो पहले आयेगी– के दौरान सहिष्णुता की भावना का विकास होगा और आपको प्राप्त सीख बृहस्पति की अन्तर्दशा के दौरान पूरी तरह से आपको एक नया इंसान बनायेगी। आप धार्मिक सिद्धान्तों का पालन करेंगे और भिक्षा देंगे। आपकी सोच में परिपक्वता होगी और गलत–सही की पहचान करने की क्षमता होगी।

आपको उत्तम कपड़ों और आभूषड़ों को पहनने में अधिक रूचि होगी। आप उत्तम मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त करेंगे। अधिकतर लोग आपको पसन्द करेंगे। आपको सरकार से समर्थन मिलेगा। विभिन्न स्रोतों से आप आय प्राप्त करेंगे और संतानों के मामले में आप बहुत सुखी होंगे। आपकी संतानें भी आपको खुशियां प्रदान करेंगी। आपमें वाहन प्राप्त करने की चाह होगी, जो इस अन्तर्दशा के अन्त तक पूरी होगी।

शनि अन्तर्दशा
(29:08:2079 - 30:03:2081)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा आपके लिए बहुत उत्तम नहीं हो सकती है। आपको अकथित परेशानयिों का सामना करना पड़ सकता है। आप संबंधियों के कारण दुख और खतरों का सामना कर सकते हैं। आप, आपका जीवनसाथी, संतानें,

माता–पिता एक साथ कई रोगों से ग्रसित हो सकते हैं। आपका चिकित्सकीय खर्चा बढ़ सकता है। आप उपचार के विभिन्न तरीके अपना सकते हैं और धन बर्बाद कर सकते हैं। हालांकि, अन्तर्दशा के अन्त में आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल सकता है जो कुछ उपचार के तरीके बतायेगा और आप उनका प्रयोग आखिरी उपाय के रूप में करके परिणाम प्राप्त करेंगे।

बिना उपायों के प्रयोग के अगली बुध की अन्तर्दशा में सुधार होना तय है– जो कि सबसे उत्तम दशा होगी। परिस्थितियों के कारण आपको खुशियां प्राप्त होने में कठिनाई आ सकती है। आपको अपनी माता के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए– जैसाकि यह अन्तर्दशा माता के लिए संकटकरी हो सकती है। आपको अपने परिवार के बड़ों या पारिवारिक देवता का शाप लग सकता है। आपका शरीर कमजोर हो सकता है और आपको अपने स्वास्थ्य में सुधार करने में बहुत परेशानी हो सकती है। डॉक्टर रोग का पता लगाने में असफल हो सकते हैं। अन्ततः आपको पता चल सकता है कि कोई अदृश्य ताकत आपके शरीर के अन्दर है। आपको सरकारी अधिकारी के क्रोध का सामना करना पड़ सकता है।

बुध अन्तर्दशा
(30:03:2081 - 29:08:2082)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः धन प्राप्त करने के लिए यह सबसे उत्तम दशा है। आपको निरन्तर धन प्राप्त होगा। हालांकि, मात्रा आपके परिवार की पृष्ठभूमि और आपको प्राप्त पद के स्तर के अनुसार होगी। आपको सुन्दर परिधान, आभूषण तथा नये मवेशी प्राप्त होंगे। आप अपने सभी उपक्रमों में सफलता और विभिन्न तरीकों से लाभ की आशा कर सकते हैं। आपके नाम और यश में वृद्धि होगी तथा आपको समाज में उचित स्थान प्राप्त होगा। नये प्राप्त ज्ञान और शिक्षा से आप संपन्नता प्राप्त करेंगे। यदि आपकी कुण्डली में बुध कमजोर भी है, तो भी इस अन्तर्दशा के दौरान आपको बहुत परेशानी नहीं होगी।

केतु अन्तर्दशा
(29:08:2082 - 30:03:2083)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। आप मानसिक तनाव से गुजर सकते हैं। आपके प्रियजनों को निराशा का सामना करना पड़ सकता है। आपको धन हानि हो सकती है। प्रतिकूल परिस्थितियों और वातावरण के साथ आपमें दूसरों को धोखा देने की प्रवृत्ति हो सकती है। पानी और जलीय चीजों से आपको खतरा हो सकता है। अतः आपको पानी से संबंधित गतिविधियों जैसे तैराकी, नदी, सागर या तालाब में स्नान आदि से दूर रहना चाहिए। द्रव रसायनों से संबंधित किसी व्यापार में आपको संलग्न नहीं होना चाहिए। हालांकि, आपको इसमें लाभ हो सकता है, लेकिन विस्फोट होने या जहर फैलने का इसमें खतरा हो सकता है।

शुक्र अन्तर्दशा
(30:03:2083 - 28:11:2084)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। आप नावों या जहाजों से यात्रायें करेंगे और सोना, पानी, रत्नों, महिलाओं और कृषि से संबंधित सामानों के व्यापार में संलग्न रहेंगे। आप महिलाओं के साथ घनिष्ठ संबंध बनाने में गहरी रूचि लेंगे। संतान, मित्र और मवेशी प्राप्त करने के लिए यह अनुकूल दशा है। यदि आपकी कुण्डली में शुक्र बहुत बली नहीं है, तो भी विषम परिणाम नहीं मिलेंगे।

रवि अन्तर्दशा
(28:11:2084 - 30:05:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में चंद्रमा की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। आप सरकारी अधिकारियों से समर्थन प्राप्त करने की आशा कर सकते हैं। आप अत्यधिक साहस और वीरता का प्रदर्शन करेंगे। समाज में आपको सम्मान मिलेगा। रोगों से मुक्ति मिलेगी। हालांकि, कभी–कभी आपको पित्त रस और वायु विकार हो सकते हैं। आपको दुर्घटना के कारण चोट लग सकती है। एक तरफ आपको उत्तम मात्रा में धन मिलेगा, लेकिन आप चोरी आदि के कारण उसको खो भी सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य अनुकूल नहीं है, आपको उष्ण रोग हो सकते हैं, शत्रुओं से परेशानी हो सकती है और आपको भारी दुख का सामना करना पड़ सकता है।

मंगल दशा
(30:05:2085 - 29:05:2092)

वर्तमान समय में आपकी मंगल की महादशा चल रही है और मंगल आपकी कुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। मंगल की इस भाव में स्थिति स्वतः ही वरदान स्वरूप है। कम प्रयास से ही आपको सफलता प्राप्त होगी। आपके पास कई नौकर होंगे। यदि आप गरीब परिवार में भी जन्म लेते हैं, तो भी आपको बहुत सफलता मिलेगी। आपका जीवन एक राजा की तरह होगा या आप जनता के एक नामी और अपराजित नेता होंगे। यदि मंगल की दशा दसवें भाव में होने पर 20 से 60 वर्ष की आयु के दौरान पड़ती है तो आपको और शुभ परिणाम प्राप्त होंगे। दसवें भाव में नीच का मंगल भी उत्कृष्ट परिणाम देता है।

वर्तमान समय में आपकी मंगल की महादशा चल रही है और मंगल आपकी कुण्डली में मीन राशि में स्थित है। मंगल की अपनी दशा के दौरान, आपको जीवनसाथी और संतानों के कारण चिन्ता हो सकती है तथा आप मानसिक हताशा के शिकार हो सकते हैं। आपका साहसी कार्यों में अधिक व्यय हो सकता है। आपको विदेश में रहने के लिए बाध्य होना पड़ सकता है। इस दशा के दौरान उदारता की भावना विकसित होने के कारण आप अपनी जमा पूंजी को दूसरों में बांट सकते हैं। आग, डूबने, जहर आदि के कारण आपको खतरा हो सकता है। प्रेम प्रसंगों में भी आपको निराशा हाथ लग सकती है। आपकी अपनी गैरजिम्मेदारीपूर्ण बातों और कार्यों के कारण समस्यायें उत्पन्न हो सकती है।

मंगल अन्तर्दशा
(30:05:2085 - 26:10:2085)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में मंगल की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपकी कुण्डली में मंगल बली नहीं है, आप विभिन्न रोगों और रक्त की अशुद्धि से ग्रस्त हो सकते हैं। आपको किसी हथियार से चोट लग सकती है। बहुधा आपका अपने सगे भाई–बहनों और संबंधियों के साथ विवाद हो सकता है। आप पराई स्त्रियों में रूचि ले सकते हैं। इस दशा के दौरान, आपका अपने भाइयों से अलगाव हो सकता है। आपका शत्रुओं के साथ झगड़ा हो सकता है। आप आपराधिक गतिविधियों में पड़ सकते हैं और भूमि एवं सम्पत्ति की हानि हो सकती है। आप प्रायः चोरों और सरकारी अधिकारियों के कारण मुश्किलों का सामना कर सकते हैं।

राहू अन्तर्दशा
(26:10:2085 - 13:11:2086)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में राहु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको हथियारों, शत्रुओं, चोरों और सरकारी अधिकारियों से खतरा हो सकता है। आपका अपने शत्रुओं के साथ अप्रत्याशित झगड़ा हो सकता है, जो आपको जीवन के हर क्षेत्र में नुकसान पहुँचाने की कोशिश कर सकते हैं। वे आपको विभिन्न आपराधिक गतिविधियों में फँसा सकते हैं। साथ ही पेट, नेत्र और सिर के रोग भी हो सकते हैं। इस अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य बहुत अधिक खराब हो सकता है। यदि जन्मकुण्डली में राहु अनुकूल भी है, तो भी दशा के दौरान बहुत शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं। आर्थिक क्षेत्र में सुधार होगा, लेकिन आपको अन्य विभिन्न समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपके सगे भाई–बहन आपके कट्टर शत्रु बन सकते हैं।

गुरु अन्तर्दशा
(13:11:2086 - 19:10:2087)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा चल रही है। सामान्यतः यह अन्तर्दशा मंगल की महादशा में सबसे उत्तम होगी। आपमें स्वयं बलिष्ठ होने का अहसास होगा। आपका दिमाग शांत होगा। सभी प्रक्रियाएं सहज होंगी, कहीं किसी तरह की कोई बाधा या परेशानी नहीं होगी। आप हमेशा व्यस्त रहेंगे। आपको ज्ञानी और साधुजनों के साथ जुड़ने के अवसर मिलेंगे। आप तीर्थयात्रायें करेंगे और उत्तम कार्यों को करेंगे। विभिन्न स्रोतों से आपको आय प्राप्त होगी। सरकारी अधिकारियों के साथ आपके उत्तम संबंध बनेंगे और आप उनसे लाभ प्राप्त करेंगे। आपको जीवनसाथी, संतानों और मित्रों की संगति का आनन्द प्राप्त होगा। आपको कान और कफ की समस्यायें हो सकती हैं।

शनि अन्तर्दशा
(19:10:2087 - 28:11:2088)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपकी जीवनसाथी और संतानें आपको पसन्द नहीं कर सकती हैं। आपका अपने मित्रों और संबंधियों के साथ झगड़ा हो सकता है। आपकी जीवनसाथी और संतानें पीड़ित हो सकती हैं। आप जुए में धन बर्बाद कर

सकते हैं, जिससे आप दुख और निर्धनता की कगार पर पहुँच सकते हैं। आप कई गलत काम करने के लिए प्रेरित हो सकते हैं, यदि आप ऐसा नहीं करना चाहेंगे, तो भी। आपको भयंकर रोग हो सकते हैं। अपने वर्तमान निवास स्थान को छोड़ने के लिए आपको बाध्य होना पड़ सकता है। यदि जन्मकुण्डली में शनि बली भी है, तो भी इस दशा के दौरान बहुत शुभ परिणाम नहीं मिल सकते हैं।

बुध अन्तर्दशा
(28:11:2088 - 25:11:2089)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में बुध की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आप शत्रुओं के कारण मुश्किलों का सामना कर सकते हैं। परिस्थितियां आपको अपने अधीनस्थों के साथ झगड़ा करने को बाध्य कर सकती है। गलत बातें बोलने के कारण आपको अशुभ घटनाओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको चोट लग सकती है या आप आग से जल सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी और संतानों से अलग होना पड़ सकता है। आप खुशियों से वंचित हो सकते हैं। आपको मवेशियों और धन की हानि हो सकती है।

केतु अन्तर्दशा
(25:11:2089 - 23:04:2090)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में केतु की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको विद्युत या अग्नि या हथियारों से कटने का खतरा हो सकता है। आप नौकरी में स्थानान्तरण या व्यापारिक यात्रा या तलाक या जीवनसाथी की मृत्यु के कारण जीवनसाथी से अलग हो सकते हैं। आपको अपने जीवनसाथी को इस दशा के दौरान उसके माता–पिता के घर या किसी लम्बी यात्रा पर भेजने की सलाह दी जाती है। इसके पीछे तर्क यह है कि जीवनसाथी से अलग होना आपकी नियति में है और आप उपर दी गई सलाह मानकर प्रभाव को मंद कर सकते हैं, अन्यथा तलाक या मृत्यु के रूप में यह गंभीर परिणाम के रूप में सामने आ सकता है। आपकी आय में बाधा आ सकती है और धन की हानि हो सकती है। आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए। यदि केतु बली है, तो समय–समय पर आपको कुछ शुभ परिणाम मिल सकते हैं, लेकिन इस अन्तर्दशा के पूर्ण होने से पहले जो भी आपने प्राप्त किया है, वह सब समाप्त हो जायेगा।

शुक्र अन्तर्दशा
(23:04:2090 - 23:06:2091)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में शुक्र की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपके दिमाग में बिना विचारे काम करने का एक प्रकार का डर घर कर सकता है। आप विदेश यात्रा पर जा सकते हैं। यह दशा आपके परिवार के लिए उत्तम नहीं हो सकती है। हालांकि, यदि कोई मुकदमा चल रहा है, तो उसका निर्णय अन्तर्दशा के दौरान होने पर आपको उसमें सफलता मिलेगी। आपको अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए– विशेषकर बांयी आँख का। आपको धन और सम्पत्ति की चोरी का खतरा हो सकता है। हालांकि, आपको जीवनसाथी से पूर्ण सुख मिलेगा, धन का लाभ होगा और पदोन्नति होगी।

रवि अन्तर्दशा

(23:06:2091 - 29:10:2091)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में सूर्य की अन्तर्दशा चल रही है। राजनीति से संबंध रखने वाले लोगों के लिए यह अन्तर्दशा सबसे उत्तम है। यदि आप इस अन्तर्दशा के दौरान चुनाव लड़ते हैं, तो आपको सफलता अवश्य मिलेगी। हालांकि, विरोधियों के साथ झगड़ा होने के कारण आपको चोट लगने की संभावना है। आप दूसरे की जमीन और सम्पत्ति हड़प सकते हैं। आपको आनन्द प्राप्त करने के बहुत सारे अवसर मिलेंगे। आपको शक्ति और अधिकार प्राप्त होंगे। वाहनों का सुख भी आपको प्राप्त होगा। बाद में आपको एक के बाद एक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको किलों, जंगलों और पर्वतीय क्षेत्रों में घूमने का शौक होगा। पिता और अन्य संबंधियों के साथ आपके संबंध आत्मीय नहीं हो सकते हैं। आपकी कुण्डली में सूर्य कमजोर है, आपकी मानसिक शांति भंग हो सकती है। आपको ऐसा प्रतीत हो सकता है कि हर चीज आपके खिलाफ है।

चंद्र अन्तर्दशा

(29:10:2091 - 29:05:2092)

वर्तमान समय में आपकी कुण्डली में मंगल की महादशा में चंद्रमा की अन्तर्दशा चल रही है। इस अन्तर्दशा के दौरान, आपको घरेलू वस्तुओं और आभूषणों की प्राप्ति होगी। आप मित्रों और संबंधियों से उत्तम सहयोग प्राप्त करेंगे तथा ऊँचे पदों पर आसीन होंगे। यह अन्र्दशा मध्यम रूप से उत्तम होगी।

ज्योतिष सारिणी

	SAMPLE	ज्योतिष सारिणी
जन्म दिनाकं	02:04:1981	02:04:2017
दिन	वृहस्पतिवार	रविवार
ज्योतिषिय वार	वृहस्पतिवार	रविवार
जन्म समय	11:45:00	17:13:52
जन्म स्थान	new delhi	new delhi
अक्षांश	028:36:00N	028:36:00N
रेखांश	077:12:00E	077:12:00E
यु./ग्रीष्म समय संस्कार	-00:00	-00:00
जी. एम. टी. समय	006:15:00	011:43:51
स्थानीय समय संस्कार	-000:21:12 hrs	-000:21:11 hrs
स्थानीय समय	011:23:48 hrs	016:52:40 hrs
सांपातिक काल	024:05:49 hrs	005:36:42 hrs
सूर्योदय	06:13:10AM	06:12:51AM
सूर्यास्त	06:36:57PM	06:37:06PM

लग्न	मिथुन	कन्या
लग्नाधिपति	बुध	बुध
राशि (चन्द्रमा)	कुंभ	मिथुन
राशिपति	शनि	बुध
नक्षत्र	शतभिशा	मृगशिरा
नक्षत्रपति	राहू	मंगल
नक्षत्र चरण	2	3
पाया	रजत	ताम्र
ऋतु	बसन्त	बसन्त
मास	चैत्र कृष्ण	चैत्र शुक्ल
पक्ष	कृष्ण	शुक्ल
तिथि	योदशी	सप्तमी
तिथि श्रेणी	जया	भद्रा
तिथि पति	गुरु	शनि
करण	गरिज	गरिज
करण श्रेणी	चर	चर
करणपति	वासुदेव	वासुदेव
सूर्य सिद्धान्त योग	शुभ	सौभाग्य
तत्व	आकाश	पृथ्वी
तत्वाधिपति	गुरु	बुध
विहग	मयुर	भारधंक
वेध	हस्ता	धनिष्ठा

ग्रह स्थिती वर्षफल

Varhphal Years: 36 (2017-2018) Varhphal Date: 02:04:2017, Time: 17:13Hrs

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	विशेष
लग्न	मिथुन	19:55	अरिद्रा(4)	
सूर्य	मीन	18:49	रेवती (1)	शत्रु राशि
चन्द्रमा	कुम्भ	13:12	शतभिषा (2)	सम राशि
मंगल(अ.)	मीन	18:54	रेवती (1)	मित्र राशि
बुध	कुम्भ	26:30	पूर्वाभाद (2)	सम राशि
बृहस्पति(व.)	कन्या	10:59	हस्ता (1)	शत्रु राशि
शुक्र(अ.)	मीन	17:30	रेवती (1)	उच्च राशि
शनि(व.)	कन्या	12:22	हस्ता (1)	मित्र राशि
राहु(व.)	कक्र	14:05	पुष्य (4)	शत्रु राशि
केतु(व.)	मकर	14:05	श्रवण (2)	शत्रु राशि
हर्षल(व.)	वृश्चिक	06:10	अनुराधा (1)	.....
नेपच्यून(व.)	धनु	01:15	मूला (1)	.....
प्लूटो(व.)	कन्या	29:40	चित्रा (2)	.....

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	विशेष
लग्न	कन्या	00:46	अरिद्रा(2)	
सूर्य	मीन	18:49	रेवती (1)	शत्रु राशि
चन्द्रमा	मिथुन	01:54	मृगशिर (3)	मित्र राशि
मंगल	मेष	22:39	भरणी (3)	स्व राशि
बुध	मेष	07:34	अश्विनी (3)	सम राशि
बृहस्पति(व.)	कन्या	24:51	चित्रा (1)	शत्रु राशि
शुक्र(व.)	मीन	06:09	उत्तरभाद्र (1)	उच्च राशि
शनि	धनु	03:41	मूला (2)	सम राशि
राहु(व.)	सिंह	07:17	मघा (3)	शत्रु राशि
केतु(व.)	कुंभ	07:17	शतभिषा (1)	शत्रु राशि
हर्षल	मीन	29:41	रेवती (4)	....
नेपच्यून	कुंभ	18:45	शतभिषा (4)	....
प्लूटो	धनु	25:13	पूर्वाषाढ़ (4)	....

लग्न कुण्डली

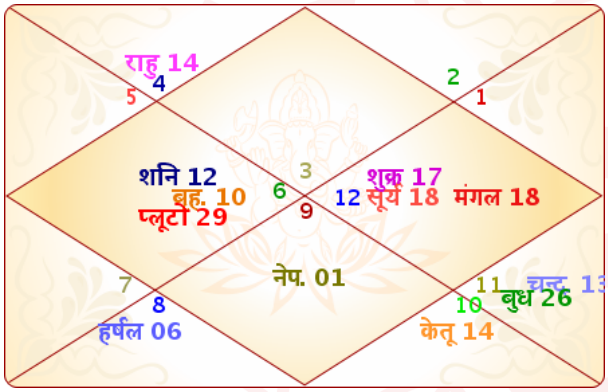

चन्द्र कुण्डली

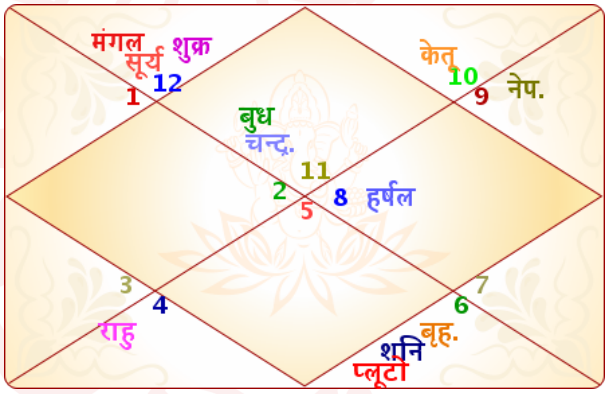

लग्न कुण्डली (वर्षफल)

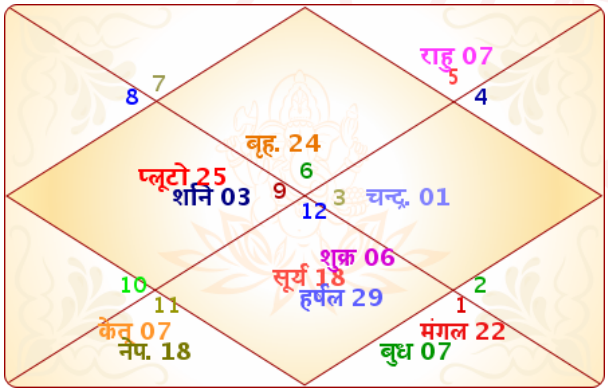

चन्द्र कुण्डली (वर्षफल)

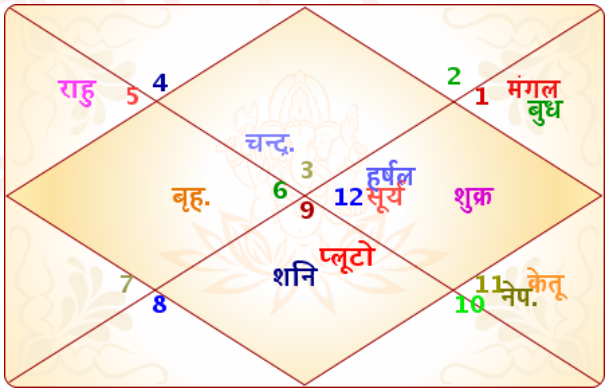

द्वादश वर्ग कुण्डली

लग्न कुण्डली

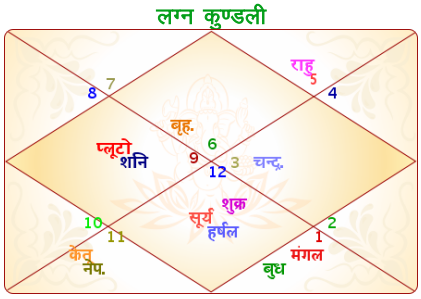

होरा कुण्डली

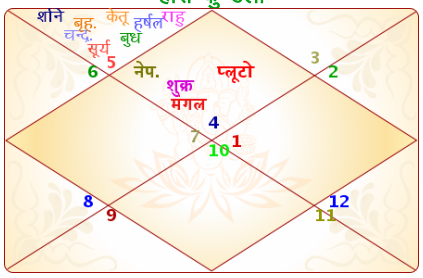

द्रेष्काण कुण्डली

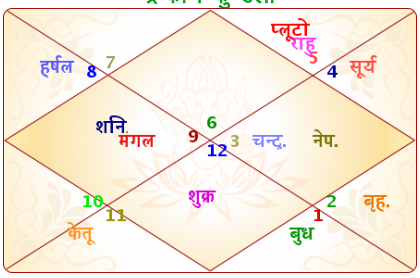

चतुर्थांश कुण्डली

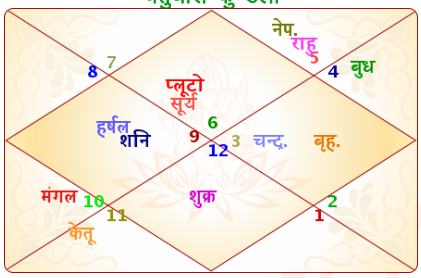

पंचमांश कुण्डली

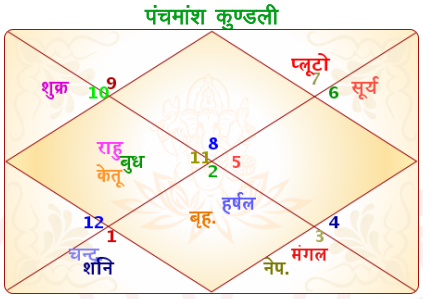

षष्टमांश कुण्डली

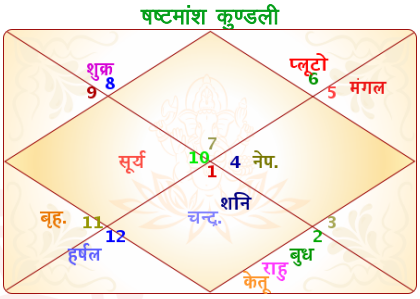

सप्तमांश कुण्डली

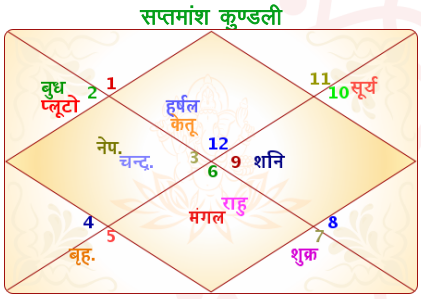

अष्टमांश कुण्डली

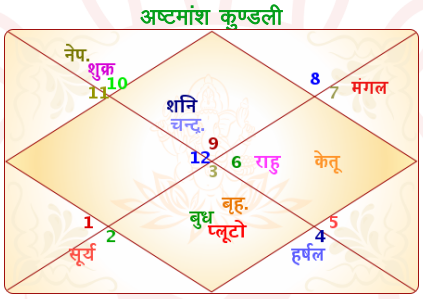

नवांश कुण्डली

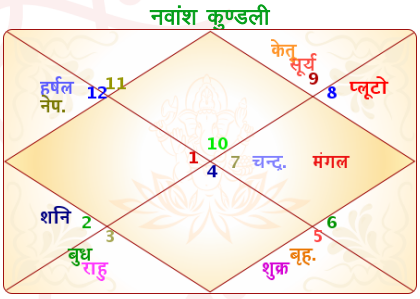

चर्तुविशांश कुण्डली

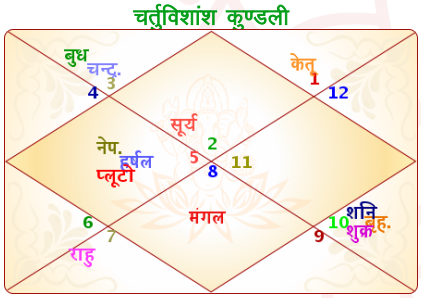

एकादशांश कुण्डली

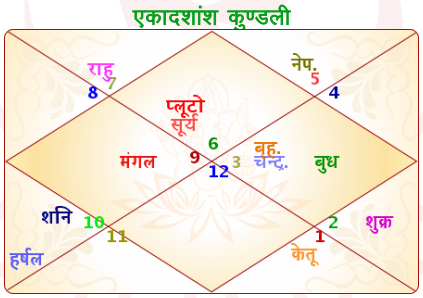

द्वादशांश कुण्डली

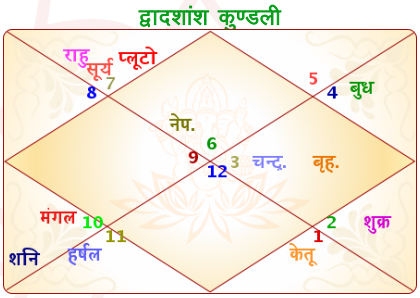

वर्षफल कुण्डली में ग्रहों की दृष्टि

	रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहू	केतु
रवि	....	गु.शत्रु	सम	सम	प्र.शत्रु	प्र.शत्रु	गु.शत्रु	सम	सम
चंद्र	गु.शत्रु	....	गु.प्रेम	गु.प्रेम	गु.शत्रु	गु.शत्रु	प्र.शत्रु	गु.प्रेम	प्र.प्रेम
मंगळ	सम	गु.प्रेम	....	प्र.शत्रु	सम	सम	प्र.प्रेम	प्र.प्रेम	गु.प्रेम
बुध	सम	गु.प्रेम	प्र.शत्रु	....	सम	सम	प्र.प्रेम	प्र.प्रेम	गु.प्रेम
गुरु	प्र.शत्रु	गु.शत्रु	सम	सम	....	प्र.शत्रु	गु.शत्रु	सम	सम
शुक्र	प्र.शत्रु	गु.शत्रु	सम	सम	प्र.शत्रु	....	गु.शत्रु	सम	सम
शनि	गु.शत्रु	प्र.शत्रु	प्र.प्रेम	प्र.प्रेम	गु.शत्रु	गु.शत्रु	....	प्र.प्रेम	गु.प्रेम
राहू	सम	गु.प्रेम	प्र.प्रेम	प्र.प्रेम	सम	सम	प्र.प्रेम	....	प्र.शत्रु
केतु	सम	प्र.प्रेम	गु.प्रेम	गु.प्रेम	सम	सम	गु.प्रेम	प्र.शत्रु	....

प्र.प्रेमः–प्रकट प्रेम दृष्टि ,गु.प्रेमः–गुप्त प्रेम दृष्टि ,प्र.शत्रुः–प्रकट शत्रु दृष्टि ,गु.शत्रुः–गुप्त शत्रु दृष्टि ,समः–सम दृष्टि ,

वर्षफल कुण्डली में ग्रहों का बल

Varhphal Years: 36 (2017-2018) Varhphal Date: 02:04:2017, Time: 17:13Hrs

पंचवर्गीय बल

क्र0स0	बल	रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	क्षेत्र बल	7.5	22.5	30.0	7.5	15.0	7.5	7.5
2	उच्च बल	17.65	16.79	10.59	2.51	11.13	17.68	15.15
3	हद्दा बल	7.5	11.25	15.0	7.5	7.5	15.0	3.75
4	द्रेक्कन बल	2.5	2.5	5.0	2.5	5.0	2.5	7.5
5	नवांश बल	1.25	1.25	2.5	5.0	1.25	1.25	1.25
	योग	9.1	13.57	15.77	6.25	9.97	10.98	8.79
	तुलनात्मक बल	साधारण	बलशाली	पूर्णबली	साधारण	साधारण	बलशाली	साधारण

द्वादश वर्गीय बल

क्र0स0	बल	रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	राशि बल	0	-1	+2	0	0	0	0
2	होरा बल	+2	0	-1	0	0	0	0
3	द्रेक्कन बल	0	-1	0	0	0	0	0
4	चतुर्थांशं बल	0	-1	-1	-1	0	0	0
5	पंचमाशं बल	0	-1	0	-1	0	0	-1
6	षष्टाशं बल	0	-1	0	0	0	0	-1
7	सप्तमाशं बल	0	-1	0	0	0	+2	0
8	अष्टमाशं बल	0	0	0	+2	0	0	0
9	नवाशं बल	0	0	0	+2	0	0	0
10	दसाशं बल	0	-1	+2	+2	0	0	+2
11	एकादसाशं बल	0	-1	0	+2	0	+2	+2
12	द्ववादशाशं बल	0	-1	-1	-1	0	+2	+2
	योग	+2	-9	+1	+5	0	+6	+4
	तुलनात्मक बल	साधारण	निकृष्ट	साधारण	बहुत अच्छा	सम	बहुत अच्छा	अच्छा

हर्ष बल

क्र0स0	बल	रवि	चंद्र	मंगळ	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
1	स्थान बल	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0	0.0
2	क्षेत्र बल	0.0	0.0	5.0	0.0	0.0	5.0	0.0
3	ओज–युग्म बल	0.0	0.0	0.0	5.0	0.0	5.0	0.0
4	दिवा–रात्रि बल	5.0	0.0	5.0	0.0	5.0	0.0	0.0
	योग	5	0	10	5	5	10	0
	तुलनात्मक बल	अल्पबली	निर्बबली	मध्यबली	अल्पबली	अल्पबली	मध्यबली	निर्बबली

Varhphal Years: 36 (2017-2018) Varhphal Date: 02:04:2017, Time: 17:13Hrs

मुद्दा योगिनी दशा

दशा	अवधि	से
मंगला (चन्द्रमा)	0.0 y.0.0 m.10 d.	02:04:2017
पिगंला (सूर्य)	0.0 y.0.0 m.20 d.	12:04:2017
धान्य (वृहस्पति)	0.0 y.1.0 m.0 d.	03:05:2017
भ्रमरि (मंगल)	0.0 y.1.0 m.10 d.	02:06:2017
भभद्रिका (बुध)	0.0 y.1.0 m.21 d.	13:07:2017
उल्का (शनि)	0.0 y.2.0 m.0 d.	01:09:2017
सिद्धा (शुक्र)	0.0 y.2.0 m.11 d.	01:11:2017
संकटा (शनि)	0.0 y.2.0 m.20 d.	11:01:2018

मुद्दा षोडशोत्तरी दशा

दशा	अवधि	से
मंगल	0.0 y.1.0 m.8 d.	02:04:2017
गुरु	0.0 y.1.0 m.11 d.	10:05:2017
रवि	0.0 y.1.0 m.5 d.	20:06:2017
मंगल	0.0 y.1.0 m.8 d.	24:07:2017
गुरु	0.0 y.1.0 m.11 d.	31:08:2017
शनि	0.0 y.1.0 m.14 d.	11:10:2017
केतु	0.0 y.1.0 m.17 d.	24:11:2017
चंद्र	0.0 y.1.0 m.20 d.	10:01:2018

पत्ययनी दशा

क्र0स0	दशा	अवधि	से
1	लग्न	0.0 y.0.0 m.12 d.	02:04:2017
2	चंद्र	0.0 y.0.0 m.17 d.	14:04:2017
3	शनि	0.0 y.0.0 m.26 d.	30:04:2017
4	शुक्र	0.0 y.1.0 m.6 d.	26:05:2017
5	बुध	0.0 y.0.0 m.21 d.	02:07:2017
6	रवि	0.0 y.5.0 m.14 d.	22:07:2017
7	मंगल	0.0 y.1.0 m.26 d.	04:01:2018
8	गुरु	0.0 y.1.0 m.2 d.	01:03:2018

मुद्दा विंशोत्तरी दशा

क्र0स0	दशा	अवधि	से
1	राहू	0.0 y.1.0 m.24 d.	02:04:2017
2	गुरु	0.0 y.1.0 m.19 d.	27:05:2017
3	शनि	0.0 y.1.0 m.27 d.	15:07:2017
4	बुध	0.0 y.1.0 m.21 d.	10:09:2017
5	केतु	0.0 y.0.0 m.21 d.	01:11:2017
6	शुक्र	0.0 y.2.0 m.0 d.	22:11:2017
7	रवि	0.0 y.0.0 m.19 d.	22:01:2018
8	चंद्र	0.0 y.1.0 m.0 d.	10:02:2018
9	मंगल	0.0 y.0.0 m.21 d.	12:03:2018

वर्ष जैमिनी चर दशा

क्र0स0	दशा	अवधि	से
1	कन्या	0.0 y.0.0 m.26 d.	02:04:2017
2	वृष	0.0 y.1.0 m.21 d.	28:04:2017
3	मकर	0.0 y.0.0 m.6 d.	18:06:2017
4	सिंह	0.0 y.1.0 m.6 d.	23:06:2017
5	मेष	0.0 y.2.0 m.1 d.	29:07:2017
6	धनु	0.0 y.1.0 m.16 d.	29:09:2017
7	कर्क	0.0 y.0.0 m.6 d.	14:11:2017
8	मीन	0.0 y.1.0 m.21 d.	19:11:2017
9	वृश्चिक	0.0 y.1.0 m.6 d.	10:01:2018
10	मिथुन	0.0 y.0.0 m.11 d.	15:02:2018
11	कुंभ	0.0 y.0.0 m.11 d.	25:02:2018
12	तुला	0.0 y.0.0 m.26 d.	07:03:2018

वर्षफल सहम

Varhphal Years: 36 (2017-2018) Varhphal Date: 02:04:2017, Time: 17:13Hrs

क्र0स0	सहम का नाम	राशि	अंश	सहम अधिपति	11 भाव पति	8 भाव पति
1	पुण्य सहम (भाग्य)	धनु	013:51:30	बृहस्पति	शुक्र	...
2	विद्या सहम	मिथुन	017:40:58	बुध	मंगल	...
3	यश सहम	मिथुन	011:45:46	बुध	मंगल	...
4	मित्र सहम (मित्र)	धनु	017:09:18	बृहस्पति	शुक्र	...
5	महात्य सहम (महानता)	मेष	021:58:08	मंगल	शनि	...
6	आशा सहम (इच्छा)	मेष	011:47:53	मंगल	शनि	...
7	समर्थ सहम (पुरूषार्थ)	तुला	015:51:30	शुक्र	सूर्य	...
8	भ्रात्रि सहम (भाई)	मिथुन	021:56:01	बुध	मंगल	...
9	गौरव सहम (सम्मान)	कक्र	011:45:46	चन्द्रमा	शुक्र	...
10	पितृ सहम (पिता)	वृष	015:37:49	शुक्र	बृहस्पति	...
11	राजा सहम (अधिकार)	वृष	015:37:49	शुक्र	बृहस्पति	...
12	मात्रि सहम (माता)	धनु	026:31:25	बृहस्पति	शुक्र	...
13	अपत्य सहम (संतान)	धनु	023:42:19	बृहस्पति	शुक्र	...
14	जीव सहम (जीवन)	धनु	009:36:27	बृहस्पति	शुक्र	...
15	कर्म सहम (कार्रवाई)	तुला	015:51:30	शुक्र	सूर्य	...
16	रोग सहम	वृश्चिक	029:37:31	मंगल	...	बुध
17	काली सहम (कलह, संघर्ष)	कुम्भ	002:57:40	शनि	...	बुध
18	शास्त्र सहम (उच्च शिक्षा)	मकर	028:44:07	शनि	मंगल	...
19	बन्धु सहम (रिश्तेदार)	कक्र	006:25:37	चन्द्रमा	शुक्र	...
20	निधन सहम	मिथुन	029:33:15	बुध	...	शनि
21	परदेश सहम (विदेश)	वृश्चिक	025:14:10	मंगल	बुध	...
22	धन सहम (धन)	मीन	025:18:26	बृहस्पति	शनि	...
23	प्रदर सहम (परस्त्रीगमन)	सिहं	018:06:19	सूर्य	बुध	...
24	वनिज सहम (धंधा)	वृश्चिक	025:06:51	मंगल	बुध	...
25	कार्यसिद्धि सहम (सफलता)	मिथुन	009:42:37	बुध	मंगल	...
26	विवाह सहम	मकर	003:14:45	शनि	मंगल	...
27	संताप सहम (दुःख)	सिहं	002:28:17	सूर्य	...	बृहस्पति
28	श्रद्धा सहम (भक्ति)	कक्र	014:16:24	चन्द्रमा	शुक्र	...
29	प्रिति सहम (प्यार)	वृश्चिक	015:38:51	मंगल	बुध	...
30	जाड्य सहम (स्थाई रोग)	कन्या	026:31:41	बुध	...	मंगल
31	ब्यापार सहम	कुम्भ	019:44:35	शनि	बृहस्पति	...
32	शत्रु सहम	कुम्भ	019:44:35	शनि	...	बुध
33	जलपत्तन सहम (विदेश यात्रा)	वृष	012:04:58	शुक्र	बृहस्पति	...
34	बंधन सहम (कारावास)	तुला	010:56:29	शुक्र	...	शुक्र
35	अपघात सहम (आकस्मिक दुर्घटना)	सिहं	008:48:36	सूर्य	...	बृहस्पति
36	वित्तहानि सहम	कुम्भ	012:38:31	शनि	...	बुध
37	त्रिक स्फूट (दुर्घटना)	धनु	015:10:33	बृहस्पति	...	चन्द्रमा
38	घात स्थान (अनहोनी)	कुम्भ	029:44:48	शनि	...	बुध

त्रिपताकी चक्र

Varhphal Years: 36 (2017-2018) Varhphal Date: 02:04:2017, Time: 17:13Hrs

क्र0स0	राशि	ग्रह
1	6	बृहस्पति, शनि
2	7	
3	8	
4	9	
5	10	केतु
6	11	चन्द्रमा, बुध
7	12	सूर्य, मंगल, शुक्र
8	1	
9	2	
10	3	
11	4	राहु
12	5	

त्रिपताकी चक्र में वेध

लग्न : सूर्य , मंग. , गुरू , शुक्र , शनि

सूर्य : सूर्य , मंग. , गुरू , शुक्र , शनि , मंग. , गुरू , शुक्र , शनि

चन्द्रमा : बुध , राहु , केतु

मंगल : सूर्य , गुरू , शुक्र , शनि

बुध : चन्द्र , राहु , केतु

बृहस्पति : सूर्य , मंग. , शुक्र , शनि

शुक्र : सूर्य , मंग. , गुरू , शनि

शनि : सूर्य , मंग. , गुरू , शुक्र

ग्रहों द्वारा चन्द्र वेध का फल

सूर्य :

आत्मविश्वास की कमी, बदनामी, वृथा अंहकार, दोषयुक्त आँखें, पिता को कठिनाई, मानसिक तनाव, चिड़चिड़ापन, उच्च ज्वर, पित्तजनित रोग तथा निराशायें।

मंगल :

शत्रुओं से भय, हथियार, रक्त अनियमितत, दुर्घटनायें, शरीर में दर्द और चोट, शीघ्र क्रोधित होना, लड़ाई–झगड़ा, संघर्ष, हिंसा, लेकिन साथ ही ज्ञान व धन की प्राप्ति भी।

बुध :

ज्ञान व बुद्धिमत्ता में वृद्धि, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छे लोगों की संगति और धन का लाभ। लेकिन यदि दूषित है, तो व्यक्ति उतावला व क्षुद्र दिमाग वाला होता है, परिवार की नाराजगी, तनाव और चिन्ताओं की प्राप्ति तथा शत्रुओं से भय।

बृहस्पति :

शांति और प्रसन्नता, सभ्य लोगों की संगति, तीर्थ यात्रा, धार्मिक कार्यों के प्रति रूझान, सामाजिक स्तर में उन्नति, धन का लाभ, उपक्रमों के सफलता, संतान का जन्म, और सामान्य समृद्धि।

शुक्र :

इच्छाओं की पूर्ति, इन्द्रिय सुख की प्राप्ति, धन–संपदा व शिक्षा की प्राप्ति, शत्रुओं पर विजय। लेकिन शारीरिक सुख के प्रति अत्यधिक लालसा होने के कारण मानसिक व्यग्रता, जल से भय और वातमय विकार।

शनि :

तुच्छ व निम्न स्तर के लोगों के साथ संगति, स्वार्थी, तानाशाही, गरीबी, वियोग, यौन विकृति, शारीरिक रोग, सर्दी व जुकाम के साथ–साथ वातमय विकार।

राहु :

गंभीर बीमारी/आशंका, मान–प्रतिष्ठा/धन की हानि, विदेशी स्रोतों से कठिनाईयां, उदासीन मन, डरपोक स्वभाव तथा अनेक प्रकार की कठिनाइयों से पीड़ित।

केतु :

अस्वस्थता, कमजोर पाचनशक्ति, अस्थिरता, आत्मिक व घुमन्तु प्रकृति, निराशा, चिन्तायें और दुख।

Varhphal Years: 36 (2017-2018) Varhphal Date: 02:04:2017, Time: 17:13Hrs

वर्ष पंचाधिकारी

स्वामित्व	ग्रह	बल
मुन्थेश	बुध	6.25
जन्म लग्नेश	बुध	6.25
वर्ष लग्नेश	बुध	6.25
त्रिराशिपति	चन्द्रमा	13.57
दिनरात्रिपति	बृहस्पति	9.97

वर्षेश्वर और मुन्था

वर्षेश	चन्द्रमा
मुन्था – राशि	मिथुन 019:55:00
मुन्था – भाव	10
मुन्थेश	बुध
मुन्थेश – भाव	8

वर्ष समुद्र चक्र

इस वर्ष समुद्र चक्र में, आपका जन्म नक्षत्र (शतभिषा 28 नक्षत्र गणना के आधार पर) पर्वत पर है। यह वर्ष आपके लिए भाग्यशाली सिद्ध होगा, आपको धन सम्पदा की प्राप्ति होगी।

वर्षफल कुण्डली से महत्वपूर्ण भविष्यफल

Varhphal Years: 36 (2017-2018) Varhphal Date: 02:04:2017, Time: 17:13Hrs

(अष्टक चक्र, द्रुढिंराजा पद्धति, वर्षेश्वर और मुन्था)

आपकी वर्षफल कुण्डली में, पूर्व भाग में शेष बचता है, जबकि उत्तर भाग में कोई शेष नहीं बचता है, अतः आपका आगामी समय प्रयासपूर्ण हो सकता है– विशेषकर वर्ष के उत्तरार्द्ध में। यदि आपकी कुण्डली में संशोधनकारी प्रभाव उपस्थित नहीं हैं तो संभवतः आप धन के अवरूद्ध हो जाने के कारण अथवा हानि होने के कारण असुविधाओं का सामना कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह शुक्र है। यह ग्रह पंचमेश है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप कोई नया लाभप्रद रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह शुक्र है। यह ग्रह चंद्र–राशि से दशमेश है, जो कि लग्न से दसवें भाव में स्थित है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप कोई नया लाभप्रद रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह शुक्र है। यह ग्रह चंद्र–राशि से दशमेश है, जो कि लग्न से दसवें भाव में स्थित है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप कोई नया लाभप्रद रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं।

आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्तमान वर्ष के लिए अष्टक चक्र सूचकांक ग्रह शुक्र है। यह ग्रह चंद्र–राशि से दशमेश है, जो कि लग्न से दसवें भाव में स्थित है। यदि आपकी वर्तमान आयु के लिए प्रासंगिक है तो इस वर्ष के दौरान आप कोई नया लाभप्रद रोजगार अथवा पदोन्नति प्राप्त करने की उम्मीद कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, चन्द्रमा वर्षेश्वर ग्रह है।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। परिणामस्वरूप आप भाग्यशाली होंगे। इस वर्ष के दौरान होने वाली घटनाएं बहुत सहज व सरल होंगी तथा आपको किसी अशुभ घटना अथवा अपने सामान्य मामलों में किसी आकस्मिक उतार–चढ़ाव का सामना नहीं करना पड़ेगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर एक नैसर्गिक शुभ ग्रह है। यह दसवें भाव में स्थित है एवं यह वक्री नहीं है। इसके अतिरिक्त यह ना तो नीचस्थ है और ना ही अस्त है। फलस्वरूप आप अपने सभी मामलों में

सामान्यतः भाग्यशाली होंगे तथा विशेषकर अपने व्यवसाय/व्यापार के संदर्भ में। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक प्रगति करेंगे एवं आपका नाम व यश दूर–दूर तक फैलेगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, वर्षेश्वर चंद्र है। अतः यह आपको आपके सभी मामलों में भाग्यशाली बनाएगा। आप अत्यंत लोकप्रिय होंगे तथा पद व अधिकार वाले व्यक्तियों से मित्रता स्थापित करेंगे। आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में सम्पन्न होंगे, आपकी आय व संचित धन में वृद्धि होगी एवं कुछ नई परिसम्पत्तियां प्राप्त करेंगे। आपका घरेलू जीवन सुखमय व शांतिपूर्ण होगा। विवाह होने से अथवा संतान का जन्म से आपके परिवार के सदस्यों की संख्या में वृद्धि होगी। आपका घर के प्रति आकर्षण और अधिक होगा, फिर भी आप लाभ व आनन्द के लिए वर्ष के दौरान किसी समय एक लम्बी यात्रा कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था दसवें में है। यह एक अत्यंत प्रशंसनीय व अत्यधिक पुरस्कृत स्थिति है, इसलिए आप अत्यंत भाग्यशाली होंगे। आपकी आशावादीता को बहुत बढ़ावा मिलेगा एवं आप अत्यंत उर्जावान बनेंगे। आपके सभी प्रयास पर्याप्त रूप से फलदायक होंगे एवं आपकी कोई लम्बे समय से अभिलाषित महात्वाकांक्षा सिद्ध होगी। आपको अपने वरिष्ठों से प्रत्यक्ष समर्थन प्राप्त होगा एवं सरकारी स्रोतों से अप्रत्यक्ष लाभ प्राप्त हो सकता है। जैसाकि यह स्थिति किसी को उच्चतम शिखर पर पहुंचाने में सक्षम कही जाती है, इसलिए आप अपने व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति की एक बड़ी छलांग लगाने की उचित अपेक्षा कर सकते हैं एवं अपने समकालिनों को बहुत पीछे छोड़ सकते हैं। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, मनोबल ऊँचा होगा, खुशमिजाज एवं सुखी रहेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि बुध की राशि में स्थित है। आगामी वर्ष आपके लिए अनुकूल है। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे एवं अपने वरिष्ठों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे। आपके व्यवसाय में प्रगति होगी एवं अनेक ज्ञानी लोगों के साथ सम्पक्र बनेंगे। यदि आप शैक्षिक अथवा बौद्धिक कार्यों में संलग्न हैं तो सार्थक प्रगति करेंगे। अपनी महत्वपूर्ण उपलब्धियों से आप अनेक लोगों को आकर्षित करने में सक्षम होंगे। आपकी लोकप्रियता में वृद्धि होगी एवं सामान्यतः लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, मुन्था–राशि का स्वामी वर्ष–लग्न से आठवें भाव में स्थित है एवं यह ग्रह उच्चस्थ अथवा अपनी राशि या अपने नक्षत्र में नहीं है। यह एक अनुकूल योग नहीं है। इस वर्ष के दौरान आप बीमारी से पीड़ित हो सकते हैं, भारी व व्यर्थ के खर्चे हो सकते हैं, आपको हानि होने का भी खतरा हो सकता है। व्यवसाय के क्षेत्र में आप अस्थाई आघात का सामना कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त आपकी विश्वसनीयता व सम्मान भी कुछ अजीब कारणों से दांव पर लग सकते हैं।

ताजिक योग और उनका फल

Varhphal Years: 36 (2017-2018) Varhphal Date: 02:04:2017, Time: 17:13Hrs

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली (निरयान वर्ष प्रवेश) में सभी ग्रह (सूर्य से शनि तक) केवल केन्द्र व पनफर भावों में स्थित हैं, जबकि कोई ऐसा ग्रह किसी अपोक्लिमा भाव में स्थित नहीं है। यह अत्यंत अनुकूल योग है, जिसे ताजिक पद्धति के अनुसार इश्कवल योग कहा जाता है। यदि आपकी जन्म–कुण्डली में कुछ सौम्य दिशात्मक प्रभाव क्रियाशील हैं तो यह वर्ष आपके लिए बहुत आनन्ददायक व घटनापूर्ण साबित होगा। आप अपने सभी प्रयासों में सफल होंगे, सम्पन्नता के मध्य जीवन व्यतीत करेंगे, धन संग्रह करेंगे एवं नए अधिग्रहण प्राप्त करेंगे। आप शेयर, सट्टा आदि जैसे अनुमानित निवेशों से एवं विरासत में बड़ी मात्रा में लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में एक ग्रह (जो कि लग्नेश नहीं है) किसी अन्य ग्रह के साथ निकट ताजिक दृष्टि में शामिल है। इन दोनों में से बाद वाला/उत्तरवर्ती ग्रह मंद गति का है एवं पहले वाला/पूर्ववर्ती ग्रह यर्थाथ ताजिक दृष्टि को प्राप्त करने की ओर अग्रसर है। यह अत्यंत अनुकूल योग है। ताजिक पद्धति के अनुसार इसे इथाशला योग कहा जाता है। यह इच्छाओं की पूर्ति एवं विचारों में उद्देश्यों की अनुभूति का संकेत करता है। जैसाकि लग्नेश इस योग में शामिल नहीं है, इसलिए प्राप्त लाभकारी परिणाम अधिक सारभूत या महत्वपूर्ण हो सकते हैं। आधिपत्य एवं इस योग में शामिल दोनों ग्रहों की नैसर्गिक सार्थकताओं से वर्ष के दौरान घटना की प्रकृति के मूर्तिमान/कार्यान्वित होने का संकेत मिलता है एवं घटना का समय इन दोनों में से किसी एक ग्रह की पत्यायिनी दशा के साथ में पड़ सकता है।

आपकी इस वर्ष की वर्षफल कुण्डली में, दो ग्रह कमजोर स्थिति (नीचस्थ या शत्रु की राशि में या इसी प्रकार व्यवस्थित है) में हैं, इनमें से कोई लग्नेश नहीं है। किन्तु इनमें से एक ने, एक अन्य ग्रह जो कि शक्तिशाली स्थिति (उच्चस्थ या अपनी राशि या इसी प्रकार व्यवस्थित है) में है, उसके साथ इथाशला योग में प्रवेश किया है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है, जैसाकि ताजिक–पद्धति के अनुसार यह दत्तोता योग का निर्माण कर रहा है। यह एक प्रभावशाली और लाभकारक व्यक्ति की सहायता से महात्वाकांक्षाओं की अनुभूति और अभिलाषाओं की पूर्ति का संकेत करता है। जैसाकि इस योग में लग्नेश शामिल नहीं है, इसलिए परिणामों की प्राप्ति कुछ विलम्ब से होगी एवं यद्यपि इसके लिए बहुत थोड़ा या बिल्कुल प्रयास नहीं करना पड़ेगा।

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, एक ग्रह (जो कि लग्नेश नहीं है) लग्न में स्थित है। इस पर केन्द्र या पनफर भाव में शक्तिशाली रूप में (उच्चस्थ या अपनी राशि में) स्थित एक ग्रह की ताजिक दृष्टि पड़ रही है। यह एक अत्यंत अनुकूल योग है। ताजिक–पद्धति के अनुसार इसे कुत्थ योग कहा जाता है। यह प्रभावशाली लोगों के सक्रिय सहयोग और/या सम्पूर्ण समर्थन के द्वारा अभिलाषाओं की पूर्ति और महात्वाकांक्षाओं की अनुभूति का संकेत करता है। जबकि आप स्वयं बहुत सहज होंगे, प्रबल संभावना है कि आपके रिश्तेदार या मित्र आपकी स्थिति में और सुधार लाने के लिए आगे आकर आपकी सहायता करेंगे। हालांकि इस योग में लग्नेश शामिल नहीं है इसलिए प्राप्त लाभ बहुत पर्याप्त नहीं हो सकते हैं।

वर्षफल सहम से भविष्यफल

Varhphal Years: 36 (2017-2018) Varhphal Date: 02:04:2017, Time: 17:13Hrs

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बन्धु–सहम एकादशेश के बहुत निकट स्थित है (अथवा एकादशेश की ताजिक दृष्टि पड़ रही है)। अध्ययन से दो तिथियों 01:12:2017 और 02:08:2017 का पता चलता है, जिनमें से किसी एक अथवा दोनों तिथियों के आस–पास किसी समय आपके साथ कुछ अनुकूल घटनाएं (इस विशेष सहम से संबंधित) हो सकती हैं।

पत्ययनी दशाफल

Varhphal Years: 36 (2017-2018) Varhphal Date: 02:04:2017, 17:13Hrs

लग्न दशा

02:04:2017-13:04:2017

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, लग्नेश उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में अथवा नीचस्थ नहीं है। किन्तु यह वक्री या अस्त या ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते हैं। अतः लग्न की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना या अवसर के होगी। हालांकि आपके कार्यस्थल की स्थिति कुछ हद तक बिगड़ सकती है। यद्यपि सामान्य लोग आपके साथ सम्मानपूर्ण व्यवहार करेंगे, फिर भी आपके वरिष्ठ/अधिकारी आपको दबाने का प्रयास कर सकते हैं एवं तक्रसंगत रूप से आपको मिलने वाला श्रेय किसी और को दे सकते हैं। या फिर आपको अन्यायपूर्वक बहुत छोटी अथवा बिना किसी गलती के दोषी ठहराया जा सकता है।

चंद्र दशा

14:04:2017-29:04:2017

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त भी नहीं है। अतः चंद्रमा की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/समारोह के होगी। हालांकि आप अपने घरेलू क्षेत्र में कुछ समस्याओं का सामना कर सकते हैं। आपके कुछ पारिवारिक–सदस्य क्रोधपूर्ण ढंग से बात व व्यवहार कर सकते हैं, जिसके कारण आप काफी चिड़चिड़े व अप्रसन्न हो सकते हैं।

शनि दशा

30:04:2017-25:05:2017

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शनि उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः शनि की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। संभवतः आप उद्योगों या खानों के लोगों के साथ संबंध स्थापित कर सकते हैं। आपका घरेलू जीवन आनन्दपूर्ण व सुखमय होगा।

शुक्र दशा

26:05:2017-01:07:2017

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, शुक्र उच्चस्थ अथवा अपनी राशि में स्थित है एवं यह अस्त या ग्रसित होने से दूषित नहीं है। शुक्र की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आपको अपने वरिष्ठों एवं अधिकारियों से लाभ व समर्थन प्राप्त होगा। आप उच्च पद वाले लोगों से मित्रता स्थापित करेंगे एवं आपके शत्रु पूर्णतः परास्त होंगे। आपको सभी प्रकार से संतुष्टि प्राप्त होगी एवं एक विपरीत लिंग का व्यक्ति आपके लिए विशेष प्रसन्नता का स्रोत हो सकता है। आपकी आय एवं बहुमूल्य अधिग्रहण में वृद्धि होगी एवं आपका घरेलू

जीवन बहुत आनन्दमय होगा। यदि आप व्यापारी हैं तो यह अवधि आपके लिए उपयोगी, सहजतापूर्ण व लाभदायक होगी।

बुध दशा

02:07:2017-21:07:2017

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, बुध उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः बुध की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों के साथ मिलने–जुलने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

रवि दशा

22:07:2017-03:01:2018

इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, सूर्य उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित नहीं है। समग्र रूप से यह एक उदासीन योग का निर्माण करता है। अतः सूर्य की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। हालांकि आपको अपने कार्यस्थल पर कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है एवं आप अपने किसी वरिष्ठ अथवा सहकर्मी के साथ मामूली असहमति अथवा गलतफहमी के कारण झुंझलाहट महसूस कर सकते हैं।

मंगल दशा

04:01:2018-28:02:2018

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में, मंगल उच्चस्थ या अपनी राशि में है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। मंगल की दशा के दौरान आप अनेक मामलों में भाग्यशाली होंगे। आप कुछ असाधारण उपलब्धि हासिल कर सकते हैं एवं आपको विशिष्टता प्राप्त हो सकती है। आ अपने वरिष्ठों से समर्थन व लाभ प्राप्त करेंगे एवं आपकी स्थिति में उन्नति हो सकती है। आप अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप उत्तम लाभ व नई स्रोत से आय प्राप्त करेंगे। यदि आपको किसी सहायता की जरूरत होती है तो आपके सगे व चचेरे भाई आपके लिए मददगार होंगे। आप अपने पेशे के संदर्भ में एक दूरस्थ स्थान की यात्रा कर सकते हैं। यदि आप पालतू जानवरों के शौकीन हैं तो आप एक कुत्ता या उसके जैसा सुन्दर पालतू जानवर प्राप्त कर सकते हैं।

गुरु दशा

01:03:2018-01:04:2018

श्श इस वर्ष की आपकी वर्षफल कुण्डली में, गुरु उच्चस्थ या नीचस्थ या अपनी राशि में स्थित नहीं है एवं यह ग्रसित या अस्त नहीं है। समग्र रूप से ये एक उदासीन योग का निर्माण करते है। अतः गुरु की दशा केवल साधारण होगी एवं बिना किसी महत्वपूर्ण घटना/अवसर के होगी। सामान्यतः आपके सभी मामलें भली भांति चलेंगे। आपके पेशे के क्षेत्र में चीजें बहुत सहजतापूर्ण ढंग से होंगी। अपने सगे–संबंधियों व मित्रों की संगति में बिताने के लिए आप कुछ खाली समय निकालने में सक्षम होंगे।

वर्षफल

Varhphal Years: 36 (2017-2018) Varhphal Date: 02:04:2017, Time: 17:13Hrs

वर्षेश और अन्य कारकों का फल

आपका वर्षेश चंद्रमा इस वर्ष सामान्य रूप से बली है। अतः यह वर्ष आपके लिए अधिक अनूकल नहीं रहेगा। आपके दाम्पत्य सुख में कमी आ सकती है। आपकी माता को भी कष्ट हो सकता है। आपको शारीरिक अस्वस्थता की अनुभूति हो सकती है। आपके अपने कार्यक्षेत्र में या राज पक्ष के उच्चाधिकारियों से संबंधों में तनाव उत्पन्न हो सकता है। इस वर्ष आपको धन के अत्यधिक व्यय के कारण हानि हो सकती है। भूमि भवन आदि की भी हानि होने की संभावनाएं हैं। आपका अपने मित्रों के साथ भी संबंधों में मतभेद उत्पन्न हो सकते हैं। आपका स्थानान्तरण होने की संभावना है।

इस वर्ष आपके वर्षेश चन्द्रमा की शनि के साथ युति है या इसकी उस पर दृष्टि पड़ रही है। अतः यह वर्ष आपके लिए प्रतिकूल साबित हो सकता है। इस वर्ष आपके शरीर के किसी भाग में कोई स्थाई विकार भी रह सकता है। रक्त अशुद्धि के कारण आपको दाद–खाज जैसे चर्म रोग भी हो सकते हैं। आपकी बुद्धि में विकार आने से आपकी आसक्ति दुर्व्यसनों में अधिक हो सकती है। आपकी आय व लाभ में कमी आ सकती है एवं आपके खर्चों में वृद्धि हो सकती है। आपको अपने कार्यक्षेत्र में या राज पक्ष से मतभेद व समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इस वर्ष आपका मन व्याकुल तथा भय व संशय से भरा हुआ हो सकता है। आपका अपने परिजनों से विवाद या वियोग हो सकता है। आपको पश्चिम दिशा से अशुभ समाचार प्राप्त हो सकता है।

इस वर्ष आपकी वर्षफल कुण्डली में वर्षेश दसवें भाव में उपस्थित है। अतः यह वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। इस वर्ष आपको राजसी सुखों की प्राप्ति होगी और ख्याति चारों ओर फैलेगी। आपका अपने मित्रों व संबंधियों के साथ सौहार्दपूर्ण संबंध रहेंगे, उनके मन में आपके प्रति सम्मान और प्रेम की भावना बनी रहेगी एवं आपको उनका पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आपके शारीरिक सौन्दर्य में वृद्धि होगी। आपके मन में सबके प्रति दया की भावना उत्पन्न होगी।

जन्म लग्न का फल

आपकी जन्मकुण्डली में लग्न की राशि आपकी वर्षकुण्डली में दसवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक है। आपको अपने कार्यों में सफलता मिलेगी, व्यापार में लाभ एवं आर्थिक रूप से संपन्नता प्राप्त होगी। आपको प्राप्त होने वाले सम्मान एवं पदोन्नति के अवसर को अपने हाथ से जाने नहीं देना चाहिए।

कुण्डली के भावों का उनके कारकत्व के अनुसार विश्लेषण

लग्न भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में बृहस्पति लग्न में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए बहुत शुभ फलप्रद होगा। आप

शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ्य एवं निरोग रहेंगे। आपको अपने जीवनसाथी एवं संतान का पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आपके मित्र भी आपके प्रति सहयोगपूर्ण होंगे। यदि आप नौकरी की तलाश में हैं, तो आपको अच्छी नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है, यहां तक कि आपकी योग्यतानुसार आपको सरकारी नौकरी भी प्राप्त हो सकती है। यदि नौकरी में पहले से ही हैं, तो वांछित पदोन्नति प्राप्त हो सकती है। इस वर्ष आपकी बौद्धिक क्षमता उत्तम रहेगी एवं आपको अपने सभी कार्यों में सफलता प्राप्त होगी। आपके व्यवसाय में उत्तम उन्नति होगी। आपको किसी बड़े कार्य में सफलता मिलेगी, जिससे आपको स्थाई लाभ प्राप्त होगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप शारीरिक रूप से रोगादि से पीड़ित रह सकते हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, जन्मलग्नपति, वर्षलग्नपति और मुन्थापति तीनों चौथे, छठे, आठवें या बारहवें भाव में एक ही राशि में स्थित हैं। इस वर्ष आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा, बुध, बृहस्पति या शुक्र में से कोई दो ग्रह केन्द्र में स्थित हैं, दोनों में से कोई नीचस्थ अथवा अस्त नहीं है। यह योग सभी प्रकार के अरिष्टों को अवश्य समाप्त करेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, केतु तीसरे, छठे या ग्यारहवें भाव में मकर या कुम्भ या मीन राशि में स्थित है। यह एक प्रबल अरिष्ट नाशक योग है।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश, अष्टमेश और मुन्थेश एक साथ चौथे, आठवें या बारहवें में स्थित है। इस वर्ष आपको मृत्युतुल्य कष्ट हो सकता है।

द्वितीय भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वितीयेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको जीवनसाथी के माध्यम से उत्तम धनोपार्जन करने की संभावना है। आपको अपने दैनिक रोजगार या व्यापार से भी लाभ की प्राप्ति होने के योग हैं।

तृतीय भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, तृतीयेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप रोगादि से ग्रसित होने के कारण शारीरिक रूप से पीड़ित रह सकते हैं।

चतुर्थ भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, शनि चौथे भाव (सुख–भाव)में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो

सकता है। आप अपने जीवनसाथी के कारण चिन्तित रह सकते हैं तथा आपकी माता को भी शारीरिक कष्ट हो सकते हैं। इस वर्ष आप विभिन्न परेशानियों के कारण मानसिक रूप से अशांत हो सकते हैं। आप संपत्ति संबंधी किसी परेशानी का सामना कर सकते हैं तथा वाहन के कारण भी कोई परेशानी हो सकती है। इस वर्ष आपके विरोधी आपको परेशान कर सकते हैं। आपको प्रवास भी करना पड़ सकता है। आपको चोर, ठगों, लुटेरों आदि जैसे असामाजिक तत्वों से भी सावधान रहना चाहिए, उनसे हानि होने का भय है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश लग्न में स्थित है। इस वर्ष हालांकि, आपका अपने स्वजनों से विरोध या वाद–विवाद हो सकता है, किन्तु आपको अपना स्वयं का घर बनवाने या खरीदने का शुभ अवसर प्राप्त होने का प्रबल योग है।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति और चंद्रमा केन्द्र में स्थित हैं अथवा बृहस्पति और शुक्र चौथे भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आपको बहुत कठिन परिश्रम के बाद गड़े हुए धन की प्राप्ति होने की संभावना है।

पंचम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, पंचमेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको संतान संबंधी सुख की प्राप्ति होगी। आप अपनी बौद्धिक क्षमता का प्रयोग करके धनोपार्जन करने में सफल होंगे।

आपकी जन्मकुण्डली में बृहस्पति जिस राशि में स्थित है, वह राशि आपकी वर्षकुण्डली में लग्न या पाँचवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको पुत्र की प्राप्ति होगी। (अगर आप उम्र के उस दौर में हैं तो अन्यथा आपको अपने पुत्र अथवा पुत्री के किसी कार्य से सम्मान मिलेगा)

आपकी जन्मकुण्डली में पाँचवें भाव का स्वामी, आपकी वर्षकुण्डली में क्रूर ग्रहों के साथ स्थित है। इस वर्ष आपको संतान से संबंधित दुख हो सकता है।

आपकी जन्मकुण्डली में, मंगल या शनि जिस राशि में स्थित है, वही राशि वर्षकुण्डली में लग्न या पाँचवें भाव में है। इस वर्ष आपके पुत्र को कष्ट होने की संभावना अत्यधिक है।

आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र तीसरे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको परीक्षा में सफलता मिलने की संभावना है।

षष्टम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, केतु छठवें भाव में स्थित है। अतः इस वर्ष आपको सुन्दर जीवनसाथी की प्राप्ति होगी एवं जीवनसाथी का सुख भी प्राप्त होगा। आप सुन्दर भवन में निवास करेंगे तथा आपकी वांछित अभिलाषायें पूरी होंगी। आपकी बौद्धिक क्षमता में वृद्धि होगी एवं विरोधी आपके सामने टिक नहीं पाएंगे व आपकी विजय होगी। इसके लिए आपको सम्मानित भी किया जा सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, षष्ठेश चौथे भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको कृषि संबंधी कार्यों से कम लाभ होने की संभावना है। जबकि आपको वाहन का सुख प्राप्त होने के प्रबल योग हैं।

आपकी वर्षकुण्डली में, शनि की जन्म–राशि लग्न में स्थित है तथा इस पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपको मृत्युतुल्य कष्ट अथवा अतिशय शारीरिक कष्ट हो सकता है।

सप्तम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली मे सूर्य सातवें भाव में स्थित है। इसलिए इस वर्ष आपके जीवनसाथी को किसी प्रकार का कष्ट होने की संभावना है तथा आप भी शारीरिक रूप से अस्वस्थ रह सकते हैं। आपको नेत्र, सिर, वस्थि प्रदेश से संबंधित रोग हो सकते हैं। इस वर्ष आपको यात्रा में कष्ट एवं हानि होने की संभावना है, इसलिए सावधानी अपेक्षित है। किन्तु वाहन का सुख प्राप्त करने की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल है। आप अपनी स्थिति के अनुसार वाहन खरीद सकते हैं एवं उसका सुख प्राप्त कर सकते हैं।आपकी वर्षकुण्डली में, शुक्र सातवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल होगा। इस वर्ष आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपको अपने जीवनसाथी एवं संतान का भरपूर सुख प्राप्त होगा। आपके घर–परिवार में उत्सव व प्रसन्नता का वातावरण रहेगा। आपके सुख–सुविधा एवं विलासिता की वस्तुओं में वृद्धि होगी। आपको वाहन का सुख प्राप्त होने की संभावना है, अतः आप कोई नया वाहन खरीद सकते हैं। आपको मान–सम्मान की प्राप्ति होगी। आपके व्यवसाय की स्थिति उत्तम होगी एवं आपको उत्तम धन–लाभ की प्राप्ति होगी। आपको अपने कार्यक्षेत्र में भी सफलता एवं पर्याप्त धन लाभ मिलेगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश लग्न में स्थित है। इस वर्ष आपकी धन–संपदा मे वृद्धि होगी, धनार्जन के उत्तम साधन प्राप्त होंगे। आपका अपने जीवनसाथी के साथ मधुर संबंध रहेंगे एवं उनसे भरपूर सुख प्राप्त होगा।

आपकी वर्षकुण्डली में, सप्तमेश लग्न में स्थित है। आपकी पत्नी इस वर्ष आपकी आज्ञा के अनुसार व्यवहार करेंगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश और सप्तमेश पर पापी ग्रहों की दृष्टि नहीं पड़ रही है। इस वर्ष आपकी कोई वस्तु खोएगी नहीं, बल्कि आप उसे कहीं रखकर भूल सकते हैं, जो पुनः आपको वापस मिल जायेगी।

अष्टम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है। इस वर्ष आपके जीवनसाथी और संतान को कुछ कष्ट हो सकता है। आप भी रक्त जनित या पित्त जनित रोगों से पीड़ित हो सकते हैं, इसके अतिरिक्त चोट या घाव आदि से भी कष्ट संभव है। आपके शत्रु आपके लिए परेशानियां खड़ी करने का प्रयास कर सकते हैं, साथ ही आपके मित्र भी आपके गुप्त शत्रु हो सकते हैं। इस वर्ष आपको धन लाभ में कमी आ सकती है। आपके स्वजनों के मन में आपके प्रति मान–सम्मान की भावना में भी

कमी आ सकती है। आपमें धैर्य की कमी एवं शारीरिक व्याकुलता अधिक रहने से आप मानसिक रूप से चिन्तित रह सकते हैं।आपकी वर्षकुण्डली में बुध आठवें भाव में स्थित है। इसलिए, इस वर्ष आपका बौद्धिक विकास होगा एवं आप अच्छे ग्रंथों का अध्ययन कर सकते हैं। आपके शत्रुओं का नाश होगा। उच्चाधिकारियों से किसी प्रकार की परेशानी नहीं होगी, बल्कि सुख व सहयोग प्राप्त होगा। आपकी स्थिति एवं सामर्थ्य के अनुसार आपको देश–विदेश की यात्राएं करने के अवसर प्राप्त होने के योग हैं। किन्तु इस वर्ष किसी बड़े कष्ट की संभावना रह सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप पर आने वाले किसी संकट का समाधान होगा। आपकी आयु में वृद्धि होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, लग्नेश आठवें भाव में स्थित है, मंगल मेष, सिंह या धनु राशि में है। इस वर्ष आपको तलवार या चाकू जैसी धारदार हथियार से भय हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, जन्म लग्नेश वर्षकुण्डली में आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको कष्ट होने की संभावना है तथा विरोधियों से खतरा हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको हथियार या आग या शासक से भय हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, मंगल मेष, वृष, सिंह या धनु राशि में आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको तलवार से घायल होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमस्थ मंगल की लग्नेश और अष्टमेश के साथ युति या दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपको मृत्युतुल्य कष्ट अथवा अतिशय शारीरिक कष्ट हो सकता है।

आपकी जन्म कुण्डली का लग्नेश, तथा वर्षकुण्डली का लग्नेश दोनों वर्षकुण्डली में एक साथ आठवें भाव में स्थित हैं। इस वर्ष आपको मृत्युतुल्य कष्ट या अतिशय शारीरिक कष्ट हो सकता है।

नवम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, नवमेश सातवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए भाग्यवर्द्धक साबित होगा एवं आपके मन में संतुष्टि की भावना विकसित होगी। किन्तु यदि नवमेश की पाप ग्रहों के साथ युति है या पाप ग्रहों की इस पर दृष्टि है, तो आपका भाग्य कमजोर हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चतुर्थेश और भाग्येश में युति अथवा दृष्टि संबंध है। इस वर्ष आपको जमीन–जायदाद

आदि की प्राप्ति होने के प्रबल योग हैं।

दशम् भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में चंद्रमा दसवें भाव में स्थित है। इसलिए यह वर्ष आपके लिए अनुकूल फलदायक रहेगा। आपको सभी प्रकार की सुख–सुविधा के साधनों की प्राप्ति होगी। आपका अपने जीवनसाथी, संतान एवं मित्रों के साथ मधुर संबंध रहेगा तथा उनके साथ सुखमय एवं आनन्दपूर्ण समय व्यतीत होगा। शत्रु आपके लिए परेशानियां खड़ी करने में सफल नहीं हो सकेंगे। आपका व्यापार–व्यवसाय लाभप्रद स्थिति में रहेगा, आप उन्नति करेंगे तथा आपकी मान–प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश आठवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आप मानसिक रूप से अशांत व व्यथित रह सकते हैं। आपके मन में अपने सामर्थ्यहीन होने का भाव उत्पन्न हो सकता है। आपके कर्म की हानि हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, सातवें या आठवें भाव में शुक्र उपस्थित है। इस वर्ष आपको पद की प्राप्ति या पदोन्नति हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, बृहस्पति या जन्म लग्नेश या वर्ष लग्नेश लग्न में स्थित है एवं इसकी शुभ ग्रह के साथ युति है अथवा शुभ ग्रह की इस पर दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आप बहुत प्रगति करेंगे।

आपकी वर्षकुण्डली में, दशमेश आठवें भाव में स्थित है या अष्टमेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको राजदण्ड का भय हो सकता है।

आपकी वर्षकुण्डली में, चंद्रमा की शनि के साथ दसवें भाव में युति है अथवा दसवें भाव में स्थित चंद्रमा पर शनि की दृष्टि पड़ रही है। इस वर्ष आपके सभी कार्यों में विघ्न उत्पन्न हो सकता है एवं कार्य असफल हो सकते हैं।

एकादश भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, एकादशेश दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको उत्तम एवं स्वादिष्ट भोजन का आनन्द प्राप्त होगा। आपको सुगंधित पदार्थों, शिल्प व विद्या आदि के द्वारा लाभ प्राप्त होने की संभावना है।

आपकी वर्षकुण्डली में, मुन्था दसवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको शिक्षा से लाभ की प्राप्ति होने की संभावना है।

द्वादश भाव का विश्लेषण –

आपकी वर्षकुण्डली में, राहु बारहवें भाव में स्थित है। इसलिए, यह वर्ष आपके लिए अनुकूल नहीं हो सकता है।

इस वर्ष आपको स्थान परिवर्तन करना पड़ सकता है। आपके खर्चों में वृद्धि हो सकती है। आपका अपने उच्चाधिकारियों से मतभेद हो सकता है। आपके स्वजनों को कष्ट हो सकता है, तथा ऐसे में ये लोग आपके प्रति शत्रुता का भाव भी रख सकते हैं। वस्तुओं के गुम होने से हानि होने की भी संभावना है। व्यापार–व्यवसाय के क्षेत्र में हानि हो सकती है। यात्रा में भी कष्ट एवं हानि हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, द्वादशेश सातवें भाव में स्थित है। इस वर्ष आपको राज्य पक्ष से कोई दण्ड, जुर्माना आदि के कारण हानि होने की संभावना हो सकती है।

आपकी वर्षकुण्डली में, अष्टमेश छठे, आठवें या बारहवें भाव में स्थित है। यह वर्ष आपके लिए लाभप्रद नहीं हो सकता है।